প্রমথতরঙ্গিণী 🗼

शिष्टामर्छ। न स्टर्शामानाम

শ্ৰন্থীত

, जीगष्टनीय कड़े लिया कर्ल्स

সংখোঘিত

-

ক্লিকাতা

किर प्रवास वर्ष्टका २८७ न १ छर्दन

বিদ্যারত্ন যন্ত্রে

अभवत्रापर स्थाय साहा श्रक्तानिष्ठ ७ मुखिए।

ভূমিকা।

ততদেশে অনেকেই বছবিধ দুত্নং গল্প সকল বাঙ্গালা ভাষার রচনা করিয়া প্রকাশ করিতেছেন আমিও ভাঁহাদের দৃষ্টান্তোমুঘায়িক হইয়া এই সামানা ক্ষুদ্র পুস্তক থানি আনার সল্লান্তুমায়েন রচনা করিলাম, ইহা কোন প্রস্তের কিয়া জনা কোন পুস্তকের সাহায্য না লইয়া আনার মনোগত সামানা প্রস্তাবটা অতি যার সহকারে সকলন করিয়া পাঠকবর্গ নহাশয়দিগের সমীপে থাকাশ করিতেছি, পাঠক মহাশয়েরা অন্তপ্রহ পূর্বাক এই ক্ষুদ্ধ পুষ্তক থানী পাঠ করিলে আমার পরিশ্রেম সফল হইবে যেহেতু আমার প্রস্তুক রচনা বিষয়ে এই প্রথম উদাম, অত্তর ক্রান্ত্রীয় পাঠক নহাশয়দিগের নিক্ট বিনীতভাবে নিবেদন করিতেছি যে ভাঁহালী পরিশ্রম স্বীকার পূর্বাক এই সামানা গুস্তক পানির আদা অন্ত-পাঠ করিয়া যদি কোন দোগ দেখেন অন্তগ্রহ পূর্বাক ক্ষনা করিবেন।

প্রীপ্রেমটার মুখোপাধার।

विकाशन।

এই প্রমণতর জিণী পুজুক যাহা আমি প্রস্তুত পূর্বক মুক্তিত করাইরা রেজিউরা করিলান এই পুস্তক আনি ব্যতীত অন্য কেন্দ্ মুজিত করাইতে পারিবেন না মন্যণি কর্মা কেন্দ্ মুজিত করেন তবে ভিন্তি আমার দাবী অমুগায়ী সরকারে দগুনীর হইবেন।

ब्रिट्यं पि सूर्यः शासास ।

সূচীপত্র।

ગલ્માના વનલના	11468		*****	****	5
नभी रनाग	****	* ****	****	****	. 0
সরসভী ধন্দনা	****	*****	*****	*****	8
		*****	\$ *****		ં છ
উদ্বাস্ত রাজার গা	ইত .চক্ৰপ:	ণি গোস্বামি	র করেখ্নপ্র	हथम	b
এই স্থানা · ···	*****	*****		***.*	۱, ۵
মহারত্ত		****3	*****	*****	30
निर्द्धाष्ट्रनगर्त्र विर्गन।			****	****	56
तांगी हटकंकनात स	প্ৰদৰ্শন ক	থ ন		As Extended	٠٠২٥
वानी ठछकतात अ	প্ৰশাও	बाजा बानीदर	হ'কথে!পৰ	क् थ न	২৩
কালিকা পুজারম্ভ	1	****		****	२५
कांतिका छव					٥,
রাণী চন্দ্রকলার গং	ৰ্ক্তাহ্নপ্ৰ	****	••• 34		૭૯
গর <i>ক্ষিণীর জন্</i> ম	*****,				y a
गरावाका निकारि			*****	*****	83
তর্জিণীর যন্ত্রীপুজ					88
তরঙ্গিণীর আট্কো	হে • • •	*****	****	4 24	86
ভরজিণীর অন্ত্রাশ	iet • • • •	*** **	*****	****	89 (
রাজার প্রতি মহার	াণীর তর্জি	শীর শিবাহে	র কথা প্রব	डॉव	85
নহারাজ নির্মাহের					00
নহারাজের ভরঞ্চিণী					64
ভবঙ্গিণীয় বিবাচের	P Garie	75			CA I
তরকিশীর বিবাহের	পক্র লট্য়	া ভাটের দে	न विदेशन १	ामन .	à
उत्रमिनीय गरनह उ	কেঠা ও ন	शीभर्गत जम	***	******	P5

केरिक शेर सीमार्ग्यन बाजा कृति बाह्र विकास का निर्माण	৬৯
क्रिके कि विकास किया है । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	
	73
क्मन द्राम्बद्धेत्र श्रेक्ष श्रेशनिदश्य जारामन	75
्रश्नामाणीव सम वर्षमा	P8
ংগালাপীর নিকট স্বণলভার গমন	28
গোলাপীর সভিত কর্মলনীর কথোপকথন · · · ·	l'ar
ক্ষালিনী সম্ভিব্যাহাবে প্রমথেব নিকট গোলাগীব গ্রন	500
'প্রমথের সহিদ ক লিনীন কথোপকপন	4
ুর্বজিশার রূপ বর্ণা · · · · · · · · · · · ·	503
	5 × C
श्रमत्थेवु श्रेष्ठ नत्य छवित्र-"व निकटण कर्मानमीय श्रमन	Ř
م ف	> b
শ্রমথের পাত্র ভ্রক্ষিণীর প্রাপ্তি	3.9
	558
ভর্জিণীর পদ লাখা কমলিনীর প্রথেব নিকটে গ্রহ	ar.
	1. b
	ه ډې
কমলিনাব সনাহবাহার চর্জি ব নিক্ট প্রমধ্যের গান	- 530
च्द्रिक्षांत्र मालाव अन्दर्भ चर्च कर्षक	505
उद्रीकिनीय मन्धिर इटेट अमरथड़ जीनांशी खनान के आंश्रमन	302
বিপরীত ছতি ••••	245
প্রমথ ওড়বা দ্গীব বিপ্রায	295 285
ভর্জিণীর গর্ম অমুঠান	_
क्यांक्रें ने खग्नाविक रूपेया (श्रांल श्रीर निकर्ण श्राग	\$85
•	\$40
बाबी हेम्बकना फड़ानियोर विवादश्य हथा भूभिटरकू करहत	804
महोत्राबीत उर्राज्योग मिल्या ग्राम	3.52
, ब्रांची इस्टब्स उंब्रेडिनीय शर्छ अष्ट्रश्रीन कानिया जूलिए इ	*
हैं विकार भाग	১৯৪

रही भवं।

महहतीनन श्रेकानियन कतिया द्राक्षकमादि त्नाहत कहाँ क्रिक्ट्रे	
রাজকনার আক্ষেপ কেন্ট্রীন্টের	>69
ভর্দ্দিশীর মন্দিরে প্রসথের গমন	56%
প্রমধ তর্কিণীর আক্ষেপ	>90
अम्यु ७ एउनिगीत नेमां गरतत द्वा धतियां अवस्ति श्रोत्का शमन	340
সংশরীকা নির্বাহের বিশ্বস্তুরের সহিত কর্ণোপুরুণন	278
প্রমর্থ তরক্ষিণীর মৃগয়৷ যাওনের কথোপকথনু	779
প্রমাধ তর্জিণীর মূগয়া গমন	השל
कनक क्या अञ्जीक ও उत्रक्तिंगी मश्हिक गीलाहर्तन गमन	. AF
क्रमक कवि कर्जुक अर्थनाथित छव	299
প্রমথের নীঙ্গাচলে গমন	२००
নির্বাহ রাজার পাত্রের প্রতি রাজ্য সমর্পণ	२०२
महाबाबा निर्वाह बागी हकावला समित्राहाद मीलाहरन	· 6
भग्न	200
	.4.4
নহারাজা বিক্রনকেশরী পাত্রের প্রতি রাজ্য সমর্পণ	₹°8
মূনিপত্নীর সহিত রাণী চক্সকণার ও গ্রমথের কথোপক্থন	
মুনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তর্রঙ্গণীর মিলন	२०४
মূনিপত্নীর সহিত রাণী চন্ত্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তরঙ্গিণীর মিলন প্রমথ তরঙ্গিণীর কথোপকথন	२ ० ८ २ ० ৮
মূনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তরন্দিণীর মিলন প্রমথ তরন্দিণীর কথোপকথন নহারাক্ষা নির্বাহ সর্বাহিত্য গন্ধন	२० ४ २०५ २५ ४ ,
মূনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তরন্দিণীর মিলন প্রমথ তরন্দিণীর কথোপকথন মহারান্ধা নির্বাহ সর্বান্ধো গন্ধন	२०8 २०७ २५8 २५8
মুনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তরক্ষিণীর মিলন প্রমণ তরক্ষিণীর কথোপকথন মহারাক্ষা নির্বাহ সর্বাহিত্য গান্ধন নির্বাহ রাজার স্বরাজ্যে প্রত্যাগমন	208 208 208 208 208 208 208 200
মুনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তরক্ষিণীর মিলন প্রমণ তরক্ষিণীর কথোপকথন মহারাক্ষা নির্বাহ সর্বাহিত্য গান্ধন নির্বাহ রাজার স্বরাজ্যে প্রত্যাগমন	208 208 208 208 208 208 208 200
মূনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তরন্দিণীর মিলন প্রমথ তরন্দিণীর কথোপকথন মহারান্ধা নির্বাহ সর্বান্ধো গন্ধন	208 208 208 208 208 208 208 200
মুনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তরন্দিণীর কথোপকথন প্রমান্ধা নির্বাহ সর্বাহন্তা গানুন নির্বাহ রাজার স্বরাজ্যে প্রত্যাগমন রাজা বিক্রমকেশ্রী স্বরাজ্যে গমন	२ · 8 २ · 8 २ · 8 २ · 8 २ · 8 २ · २ २ · २ ·
মূনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকণার ও প্রমথের কথোপকথন প্রমথ তরন্দিণীর কথোপকথন মহারাল্যা নির্ব্বাহ সর্বাব্রে স্বরাব্রে গানুন নির্বাহ রাজার স্বরাব্রে প্রত্যাগমন রাজা বিক্রমকেশরী স্বরাব্রে গামন গহারাজা নির্ব্বাহ মহারাণী সহ মহারাজ বিক্রমকেশরী রাজ্যে	2.8 2.8 2.8 2.8 2.3 2.3 2.3 2.3 2.3

প্রমথ তর্জিণী

भटनेमा वमहत्ता ।

मीर्च जिल्ली।

নমে। ব্ৰহ্ম গণপতি, সৰ্ব অত্যে তব নছি, ভূমি জাোভিশ্ময় নিরাকার। তুমি বিধি পুরক্রে, তুমি হরি ভূমি হরু সকলের ভূমি মূলাধার।। অগতির তুমি গভি, প্রলম্বের অধিপতি, ডুমি স্টি হিতি নিরঞ্জন। ভূমি ফুলম ভূমি সূল, ভূমি বকলের সূল, অগ্রভাগে ভোমার পুজন।। ভূমি সত্ত্রকা ওম, কেচ নাই তাই সকা, क्षि কিতি তেক জলাকাশ। ना कार्नि ट्लामाह उद्, व्यन्तिकाटक जाद्रशृक्षा, किष्टकी शाह मंदिकांत ।

भग्डन नित्रमन, जिल्हे ज्या त्रक्लंश्भान, मथरत्र लाङ्किल भूगंगनी। ইক্স চক্র দিবাকর, ভন্ততি করে নিরন্তর, भागिक रहेशा स्वाटन विग ॥ থৰ্ম সূত্ৰ দন্ত এক, ভোমা ভিন্ন নাহি এক মূষিক উপর স্থগৈ।ভিত। শক্তিক চারি করে, গদা গল শোভা করে, গলে গজমতি বিবাজিত ৷৷ राक्कक राज्यानन, क्रिकेम् छिन्यन, ্ৰস্তকেতে মুকুট শোভন। निन्म इति भगवत्त्रं, मगनिक् औत्ना कदत्र, অকারণ কি কাম 💓 ।। क्तरपाटण श्रुक्ति कति, यम मन मंखकती, নিবর্ত্ত না হয় কদাচন। मिलिया यामामा तरम, अलेना आमात राम, नाहि गाम वांत्रन वांत्रन ॥ জানাজুশ করি করে, ফিরাও সে করিবরে, ভবে ভবে পাইব নিস্তার। একেরে করিয়া কেলে আর।। বিশ্বা পাদপথহায়া, দুচাও অনিত্যনায়া, ्र मीनशित्म इक्ना आ विश्वीत्क ।

কুপাদৃষ্টি কর দীনে, কে তারিনে জ্যাম। বিনে, তাই প্রভু ডাকি হে ডোনাকে।।

मणी वंगाना ।

পরার 🕝 🕝

প্রণমামি ভৃগুস্থতা ব্রহ্মার জননী। বৈকৃষ্ঠে কমল। ভূমি বিশুর ঘরণী।। পাদপন্ম করপন্ম স্থিতি প্রয়োপরে। नाजिल्या पुत्राचा भाषा हुई करत ।। मरूभम विख्व गत उत महा हटल। भीहकां जिलामना नम्भीवान वटन ॥ বর্ণিতে কে পারে মালো বর্ণনা,তেইমার। ক্লপাদৃষ্টি হলে ককে তথনি উদ্ধার ॥ 🍵 দয়। তাজি যার প্রতি তুমি হও বাম। রুফ তারে এসংসারে লক্ষ্মীছাড়া নাম। তৃণকে পর্বত কর দিয়া পদছারা । চরাচর অংশচর কম্বার মায়।।। कछोटक क्रिटल मृधि २व बद्रवत । তোমারে ধরিয়া গর্ত্তে নামু রুত্রাকর।। আপনি বিষুধ হলে নাহিক নিতার। भीवतां घदलाका जात महा। समाह ॥

দয়। কর দর্মানারী দয়। করি দীনে। কৈ করিবে ছংগ্রে তাণ ছঃপ্র্যা বিনে। নাহি আনি স্তুতি নতি অভাজন অতি নদয় হইয়া মাতা ঘুচাও ছুগতি।।

मेंत्रश्रही वकामा !

প্রার।

যদি মাতা সরশ্বতী ভূমি গো লারদ।। শ্বেতপত্তে আবিভাব শেতাফী বয়ুদা। পদতল নবরবি দেখিতে স্কর। দশন্তে প্রকাশিত দশ শশ্বর !! ্পদাধ্যক মধুকর জমিতেছে কত্। স্থ সপুর গান করে মধুপানে রভ।। রাসরঙা জরু উরু শোভা করে অভি। र्कोरियम कीन स्वत किनि म्नन्छ।। হৃদিস্থিত বিকশিত **প্রমা** বিরাঞ্জিত। পীনোরত পরোধর অভি স্লুশোভিত। षक्ति व्हिति हम्भाकनी उदान इस। श्रीत लिक्क्ट्रशाम (क्ति क्रूबक्य ॥ विभू किनि तिथु अथ छाडि महनाहत । भक्तिम जिनि स्थन (इन अर्थाश्रह ॥

CONTRACTOR OF THE PARTY OF

लिनकुल जिनि नामा शक्याल कांग्र। জিনিরা কুন্দের পাঁতি দন্ত শোভা পায়।। जुकक्य विरुक्षम खरा शनारेसा। वागीत द्यगीत हत्न आहर युकाहैता॥ শুভবন্ত পরিধানা বিষ্ণুর ভাবিনী। वाकतानी वीकाभानि वि**ष्यत बन्म**नी ॥ যে ভাবে যে ভাবে তোমা হয়ে এক মন সে ভাব তাহার লাভ হয় ততক্ষণ।। তব দয়া বিনা বাক্যফুর্ত্তি নাহি হয়। অনুকুলা হলে বেবি। জনে কথা কর।। ন্থমতি কুমতি তুমি দয়াশীলা ভাতি। **ध्वर्यनाकारल इत्र हुछ मत्रवर्छी ।।** রূপা কর রূপাময়ি কুতার্গ করিয়া। কাতরে করুণা কর কটাকে হেরিয়া।। করিরাছি মনে যাহা করিতে বাসনা। निक क्र मनकाम शृजारम कामना ॥

পরার I

সর্ব্ধ অত্যে করিলাম প্রিগুরু স্মরণ। পারাবারতরী ভবে যার শ্রীষ্টরণ।। অন্টাঙ্গে প্রণতি স্ততি সর্বাদেব পায়। স্থান্দ মত্যা রসাভলে দ্বিতি যে মধার।। शानिकामि सर्वाक मण किक्यांना।
वितिष्ठि धुक्कं वि जात जीनन्म द्वांशाना।।
विनिन्नाम जामा। मुक्ति श्रृष्ठ वृद्धिः।।
व्यवस्थाविनी गठी श्रृष्ठ वृद्धिः।।
विश्वस्थाविनी गठी श्रृष्ठ वृद्धिः।।
विश्वस्थाविनी गठी श्रृष्ठ वृद्धिः।।
विश्वस्थाविनी गठी श्रृष्ठ श्रृष्याः।।
विश्वस्थाविन मुक्तिश्वाः।
विश्वस्थाविन श्रृष्टिक्षम्।।

-

স্থাক পরিনা।

পয়ার।

ইতিপূর্কে বলুহাটি প্রামে বাসন্থান।
সে স্থান সামান্য নয় বৈকুপ্ত সমান।
পাশবর্তি সর্থাতী আছেন আপনি।
সভা ভবা ভদলোক বিখ্যাত অবনী।।
পরেতে সেখান হতে ভাজিয়া আবাদ।
এই কণ করি প্রাম সরিসায় বাস।।
পুণাশীল বাঞ্জীরাম রায় মহাশয়।
পিতার মাতুল তিনি এই পারিচয়।।
রায়বংশ নিজবলা ভেদ্ধ প্রোতি হন।
স্কাঞ্জে বাননীয় বিখ্যাত ভ্রন।।

क्लीनराजीक कमा। नदह मख्यमान। ভরণ পোরবজন্য সঙ্গে ভূমিদান ॥ মুধার্শ্বিক স**কলেতে অতি** বিচদ্দ্র। **एक धिरक छिन्न यन नटह कनाइन** ।! নির্মিনে বসতি তথা সকলেতে মানে। আরো রুদ্ধি হয় যান ভাঁহাদের মানে।। ্নন্য ঘটা বিশ্বনাথ অভি নহোদর। সর্বাক্ত থাকা মম তাঁহার আলয় । क्षिकांड। भवान्ति नात्रव वाताम । সন্বের স্বিদিত তার বাস্তান।। विश्वनाथ १५ यह धनाधा कथन। তবে যদি বিশ্বনাধ আপনি ভা কন।। गमारं की हिं या अकात हरेग्राटक छाता। এখন তেনন আর খুঁজে পাওয়া ভার।। সমভাবে সর্বকর্ম করি সমাপন। छ्डे भूळ वाशि चर्म करतन भंगन।। खनवानहेक थिनि (कार्र प्रहामग्र। कनिष्ठे त्राविन्त्रहतः मर्के थ्रामस ॥ ভগবান ভগবানে অবিরভ রাজ। নিত্যকর্মে স্থীয় ধর্মে দেব খাৰি মত !! এখন এমন আর দেখিকে তুর্জা ्त्र कान रमिश्रोहि रम्भरमभावत ॥

কনিষ্ঠ গৌবিদ্দচন্ত্ৰ দুয়াশীল অতি।

তীৰ দুয়া সমভাব সকলের প্রতি।।

সরল স্থভাব দুদা সহাত্য বদন।

অপরাধ শত হলে তথাপি মার্জন।।

অতিশন্ত্র বিচকণ সাপু বিবেচক।

দুফিমাত্র অনুভব যে যেনন লোক।।

অতঃপর ক্রমে ক্রমে এই নিবেদন।

মহারাজ চক্রপাণি ক্রথোপকথন।।

m+14440

উদ্বন্ত হাজার সহিত চক্রপাণি গোসাগির কথোপকবন।

भगात ।

यक किन महावाक छेत्रछ ताक्ष्म ।

व्यविद्धारकात পতি वाक्र जिल्लाम ॥

वात किता नरमरहन मिश्हामस्माभरत ।

रहनकारम छेलनील कुक किन्नदर्त ॥

रहनकारम छेलनील कुक किन्नदर्दा ॥

रहनकारम छेलनील कुक किन्नदर्दा ॥

रहनकारम छेलनील किन्नदर्दा महाक्ष्म ॥

रहनकारम किन्नदर्दा हुःथ मरह निर्वात ॥

रहन स्मिल किन्नदर्दा हुःथ मरह निर्वात ॥

পুরাণেতে গুনিয়াছি মুনির বচন। यकः करतं नृशवदत् (शरम्रद्रष्ट् मन्द्रन् ॥ অতএব মুক্ত করি একান্ত মন্ন। ठक পानि कन यरछ नाहि श्रदशकन।। পুরাণেতে মুনিবাক্য শুনিয়াছ সার। কত মুনি মহারাজ রাজ্যেতে ভোষার 🛭 व्यापनात ताका मटना (चई एटपावन। जनक मारमार उथा आहि उरभाधन।। এমত সাধুনা ভারে অসাধ্য কথন। यथेन या योद्ध कर्म योकः अवश्यम ॥ নিৰ্বাহ দেশাধিপতি ছিল নিঃস্থান ৷ জনক রূপায় তিনি হন পুত্রবান । তাহা শুনি কন ভবে উদ্বস্ত রাজন। তপোবনে নির্বাহের কবে আগমন ॥ গোসামি কহেন তিনি আপুনিত ন্যা তাঁহার ছহিতা এসেছিল তপোব্ন।। नहाताक कन विक कर विवत्।। রাজকন্যা তপোবনে এলো কি কারণ।। ছিজবর ক্ল সে যে অপূর্বে কুথন 🕆 अनिष्ट रहेन वाक्षा महातान कन।। कार्कास्त्र विकारत कटरम उधन। जिन्द भकास विदल करतम धारन ॥

াস্থ স্চন।।

গয়ার।

चिक्रीर एक्शोरिकारि निकीर दोष्ट्र । छुट्छित प्रमायायी, भिट्छित श्रीलम् ॥ भरवमां अक वार्ग नाम हसकला। कर्णत माहित भीभा बर्ल्स हलना।। কন্যা পুত্ৰ বিছনেতৈ ছঃপ্রে দহে মন। ं प्रकार अञ्ची दोष्ठः वार्गे पूरे कन ॥ ্কাতর দেখিয়া দ্যা উপজিল মনে। मञ् कृति मन्नामसी करम्ब खरारम । অনুমতি রাণী প্রতি হয় অভয়ার। একান্ত চিত্তেতে পূজা কর কালিফার 🛭 छ्रेटर टामना निकि करिहामि गात । क्ना दक छम्द्रिट अभिद्र एक। भारत ।। বর দিয়া মহামায়া স্বস্থানে গমন। . ভক্তिভাবে केंद्र तानी कानिका व्यर्कन ॥ क्लवं तानी षठि नाम हक्क्ना। अमितिहा सना दिस शूर्व त्यान कना ॥

কন্যা প্রতি নরপতি করি দৃষ্টিপতি। যুগল নয়নে ধারা বহে অকসাত ।। कन काली काञायमी काल विमातिनी। কনারে কুশলে রাথ কুলকুগুলিনী।। আমার প্রতিজ্ঞ। মাতা তোমার মদনে। विवाह मा पित कमा। भागाना हाजदन ।। धरन गर्दन बार्ल छर्न हर्देश निथु छ। মনোমত হা এইবে যদি পাকে খুঁত।। সদাচার স্থবাভার সরা ২০৬ গাতি। ভবেভ্রারণে কন্য হলে ধরাপতি 🗵 **তরজিণী নাম ভার রাজেন ভূপতি। दमचिद्र**ण क्षिमी उपम **अ**च्छि धनवर्छी ।। भिरम भिरम बाह्य क्या क्या निर्मा थाए। বিবাহ না হয় তায় প্রতিকরার দায় ।। (साइन तथमी ताला गमारे हैं ज्ञान, १। िष्ठु मठा क्रका (छत्रु खोवत्व योजना ॥ এইনত দিন গত প্রতিজ্ঞান দায় ৷ কত শত রাজ্ঞত আসি কিরে যায়।। স্থরঙ্গ রাজোর রাজা বিক্রমকেশরী। সর্বাগুণে গুণান্থিত বিক্রমে কেশরী।। ভাঁহার তন্য হয় নামেতে প্রমণ। ষ্টাহার ভুলনা দিতে অবোধা মলথ।।

गटकाशदन ठांत गटन इस म अपिन । नकात हहरल भेई अम दिवस्य ।। তথা হতে উভয়েতে ধরি ছম বেশ। অবস্থী রাজার রাজ্যে করেন প্রবেশ। অরণ্য ভিতর যান মুগয়৷ কাবণ ৷ **अहे थाएन एड्ड अपन इश्र अनर्भन !!** ভর্ঞিনী রহিলেন ঋঘির আলয় ! **उ**र्भावत्न ठीत अक श्रेन उमग ।। नीलांकत्य किछू पिन अस्य आंशमन। त्म इं इंटिन कुड़े **क्टन ट्**डेल मिलन ध নির্কাহের পতি স্ততি ঋষিবরে করে : भन्तान स्ट्रेन दें। द अधियत नात ॥ - ভূপতি কহেন প্রভু করি নিবেদন। विविविध। युक्त (किश मन विवेद्ध ।। লোম্বামি কহেন রাজা এই ইভিদান। व्यवंदन परमञ्जू कृष्ठि পारशत विमाणा।

अभागक।

পরার :

লাত্রর বংশের পতি নির্বাহ রাজন। ्मरमे एवं ४५३। ३५ स्थाप्त स्थापन हिन्नुबन ह सुरक्तर मिशून हा का नगरव भागत। वार अध्य रेक व्यक्त प्रति के भवते । affect raising water from a रक्षत्रहार अरस्यान करत वरू कर्य । সম্বাধিক পদাভিত সাম্ম আনুষায়তে : इय तथी भाषा शक्ति गरम साधाकाः। জ্ঞান হয় কক্ষেত্র ইয়নেরে অধিক : প্ৰাঠান মোৰাল কত পঞ্চাৰিয়া শীৰা ৷৷ लाल्डिन नगरस्थम सरक्ष विष्य दिश्लिरवर्ण ध्रमें म स्कुर्त थाएं नाएं धररमके ॥ স্থানে স্থানে গোলাগুলি প্রতি সমান রয়েছে মেগ্জিন শত সহজ্ঞ কামান !! রাজবাটা অট্রালিক। ঢারি মাত্র ছার। চারি ঘারে খোলা মাত্র চৌঘটি হাজার 🗵

পৰন স্থারে কর্তু প্রবেশে না ডরে। দেবরাজ পান লাজ বজ্ঞ করি করে ॥ অস্থ কত নানাবৰ্ণ বৰ্ণন কটিন ! श्रामण भवल नाम आइवल शीम।। নাত্র কবিয়া রঞ্জ নাঠেতে বেডায়। नाम बाख भाग महाज निवस्त श्रीत ।। কি কৰ ল'ছার কথ বিচক্ষণ অভি। • লালে বলি সম লাভা পুলে রুহুস্পতি।। দেবছিক প্রতি উক্তি খ্রাপিন দর। होत्सा (जस इंबारभ्राक रच मधामनेती हेमें निर्ण वीगधामा गांड जांख्या । देशतनदक्ष रेल्व इश्च क्रियं माके छग्न 😗 'সভাৰাদী কিংবেঞিন দতো সদা **রভ**্ সক্ষাই মাধ গঞ্চ শাস্ত্রে অনুগত দ লোনেতে যোগির নায় যোগ অন্মেষ্ণ। '(बार्ट्सिय्रिश इहेब्रिक्क बच्च मन्नान ।। সমাই শান্তের কথা অঁশাস্থ বক্তিত। পরাস্থিতে নাহি পারে বিচারে গভিত ৷৷ নৰ্মাশান্ত ন্যায় শান্ত পুৰাগ নাটক গ অদৃষ্টি কিছুতে নাই না হয় আটক !! ধনের ভুলনা তার আছে কি বিশেষ। ্তুলনার তুলা প্রায় দিতীয় বনেশ।।

श्रम उत्तिकार

কুলাতার্য্য ভট্টাতার্য্য নাছে যভ কৰি।

যখন নিঃসরে মুখে দকলিত কৰি।

বেদান্ত শিক্ষান্ত অন্ত কেন্ত কেন্ত করে।

কাব্যরণ আদিরল কার মুখে দরে।

অট্টাদশ পুরাণগদি সকলের মুখে।

প্রতিদিন পাঠ হন্ত জুপাত সমূরে।

মিহিব নদুশগদে গ্রন্থ করে।

ব্যর্হাত প্রভেব ভাবের গণনে।

সভংপ্র ভিন্নাত্তর বাবে নগন।

সভংপ্র ভিন্নাত্তর বাবে নগন।

সভংপ্র ভিন্নাত্তর বাবে নগন।

भिन्ति। इ. राज्य दर्गनः

নগরের চতুর্দিকে, নানাবিধ অটালিকে, বসতি স্থানর পরিপাটা। লক্ষ্মায় পুরী সব, দেখিবারে অপদ্রব, কাহার প্রস্তুর ঘর বাটা।। নদাগর আছে যারা, শঠতা জানে না ভারা, ধর্ম দ্রব্য সকলের ঘরে। কহ ধারে করে ক্রয়, কেছ মেতি বাদে লয়, কৈছ কেছ সিপ্যেণ্ট করে। বিশ্ব চুনি মতি পানা সন্থা করা ভার। স্থানে স্থানে রহিয়াছে পর্বত আকার।। স্বৰ্ষুদ্ৰ। রৌপাষুদ্ৰ। আনি ছই আনি। নশীকৃত পড়ে আছে কিসের বাখানি।। कारमञ्जात क्रमानामि मान गाणि गाणि। পোচে বোমে পেল কভ এয়ে শীং মাটি। কত শত দেবালয় আছে রাজ্যানী। খানে ভানে গত শত কত পুলগাণি। দেবাৰ্চনা খোম পূজা হয় অনিবার। यांत यक ह छ लारे शुक्रात टाहात ॥ সদাবত নানাস্থানে আছমে রাজার: हरा हुम। (लच्च (शव यांक केन्द्र) यात ।। যে যাহা বাদনা করে দেন ভাহা ভারে। সাগা কার করিবারে বৈমুর্ব কাহারে।। নুতা করে নৃত্যকীরা কেই গার গান। নিজ্ণীক রাজা বেন ই**ন্তের** সমান। अविहात नमानाश इसे अनुकर्ण। निक्य कारात अंडिन। (मिश क्येन।। সভা অতি পরিপাটি কি কহিব আর। পণ্ডিতে পণ্ডিতে কথা অশেষ প্রকার 🕕 নায় শাত্রে নিপুণতা তক শিরোমণি नाश्चरक विमात्रक कवि हुड़ामनि ॥ সদাগরি ভাগ্যে হয়, যার ভাগ্যে ভার্গ্যেক্য়, ভাগ্যবস্ত সবে বলৈ ভায়। কহি সকলের আগো, কদাচ না শেও ভাগে, ভাগের মা গঙ্গা নাহি পায়।।

পরার।

রাজপণে তুর্র ভিতে বেশ্বা অগণন। नके श्रुट्य मत्व काल कृत्रत् माश्रत्।। यहरक खबना कांकि भग्न वानाता। गरम गरम जोरव अन करश शरक जाता।। भाजी कांकि गम्बनि शृह मदबर बादक । শক দেবে দোষী হলে তার দোষ চাকে। তুলটার ব্যবহার অতি স্কটিন। कुरताश शाटा ना कल् इहेटन श्रेगीय ।। शृह्ह थाकि य नाती कुश्यनीति हह । তাহার রুতান্ত কিছু শুন পরিচয়।। নিশ্চয় জানিহ মনে কভু মিথা। নয়। পাপকর্ম কটানিত ছাপা নাহি রয়।। অবশ্বই ক্লত পাপ ভোগাবে ভাহারে। কার সাধ্য পাপ করে ফাফি দিতে পারে। श्लेखाद श्लेखारन श्रंटन व्राकार्रति । अस बन्न किছू मिन त्म नव छाजूती।।

ক্ষেত্ৰ ছবে কল খাওয়া ছাপা কভু থাকে। বিলা বন্ধে বন্দী হয় বিধিৰ বিপাকে।। टम क्लैरेन लाभारत कर्म कि नाहि तिथे। লোভে পাপ পাপে মৃত্যু পুরাণেতে লেখে !! ार्गामी शिमी आभि यहि द्यान कथा करा। ष्यरंभाष्ट्रत्य कालाभूश्री त्मोना इरव तथ ॥ घेरत भारत मध्य छोटत दुव्यांच अखटन । ভাষতে ভাষণ স্থাত নাহি থাকে মনে।। চোরের চরিত্র মত হওয়া বড় দায়। दुष्टं त्वर क्षांतक अत्यह कार्शंष्ट्रं।। जगरा म। हश मधा द्वा हेरन ती । কথ্য ভুলিতে নারে আপন চরিত।। কদরে দংশেছে যার পিরিতি **ভূত** স্থীয় বস নহে তার আপনার ক্লব্ধ ।। शूरूर क्षेत्रिक इस छेक्टस नवीन। পিরিতে নিম্ম হলে নাহি থাকে জান।। ज्जान गुना इतन जात कि स्निय ध्रम्त । मजुदा एक खेहरभटक क्रिक खेह्म ॥ ্অসভী হইয়া তিনি সতীত্র লানান। क्यांत्र क्थांत्र काला मण कक्रियांन ॥ कर्न अहे निकल्द्य क्लेब्स (य पिद्र । क्षेत्र पार्टिन जात विष्ठांत कतिरन ॥

পরিবারে নিত্য তাবে করে তির্কীর कटम कटम मश् इस कनस्त्रत छात्।। কলছভুষণ ক্রমে করিরা বারণ। নাক ভূলে বলে (ছিল কপালৈ লিখন) ॥ क्टकरादित नक्लो छत्र छान्नि मगुन्त । उथन निष्ठा करत गृह्ह शोका नव ॥ ट्योवटनत चमुतात्म इटम छन्भछ। यदन अंदर विश्वनिम धार्किय द्यांचळ ।। लक्वेडरक कुनं रष्ट्यं स्थोवस्मत् इत् । ভাবেনাকো মন্ত ইয়ে কি হইবে পরে । कारन ना त्योजन धन इडेटल विभूध। योष्ठक रहेटम ८क्ट्र नोहि ८परच सूच ।: स्राचेट अस्थी इस गृह नरमा (वरक) ट**मंद्य मद**त लाग्नं भटत बांचु ८७८क ८७८क ॥ আতরণ অট্রালিকা হয় ভাগা গুণে ব কেহ মরে থাবার্ডনে পোদ মধে ভাবে। এইমত শত শত কত কুলবতী। কুলটা হইর। তারা ক্রিছে বসতি ॥ ধরাপতি মুখা অভি নাহি ছু,খ লে।। चूर्राचित मरन किछ नक्षमाई क्रमा। कना पूर्व विष्टुन्टक नहा भटन छुन । अठ स्टब ताना तानी नाहि लाग्न स्था।

মালেতে ভাবেন রাজা দৈবে বিভয়ন। विना टेक्व नाहि इस फु:श निवाव।।। ধরাপরে কত নরে ছিল নিঃসন্তান। যাগ যজ্ঞ করি তাঁর। হন পুত্রবান।। ভাবিতে ভাবিতে রাজা অন্তঃপুরে যান। पूर्ण देश्व बादबाधवी रून व्याख्यान ॥ রাজা কন মহারাণী শুন সমাচার। পুজ হেতু যজ্ঞ করি বাসনা আমার।। রাণী কন মহারাজ করি নিবেদন। याश युष्ठ कतः विधि (वरमत वहन ॥ तक्रमीए यादा जामि (मर्थाष्ट्र अथन। সে সব রুজান্ড ভূপ করি ট্রিবেদন।। পশ্চাৎ করিছ যত শুনহ অর্থেতে। ्यरक्षभूत्री (मथा मिरन कि कांग गरकरर ॥ স্থা কথা শুনিবারে রাজার মনন। মহারাণী কন ভবে স্বপ্ন উপাখ্যান।।

दानी एउटकमार राजमान नथन।

जिलमी।

চন্দ্রকণা কন, করি নিবেদন, হেরিয়াছি র**ল্পী**তে।

কহিতে স্থপন, না সরে ব্চন. কলেবর লোমাঞ্চিতে।। একই রমণী. তিমির বরণী, छेखीनं करेना घरत । কর কি তাহার, ারপ চমৎকার मन मिक् बादना करते।। পদাস্থ তল, রক্ত শতদল, मार्ग हरू मार्थ नार्थ হেরি সে বরণ, তির নহে মন, "জালা নাহি ধরে চক্ষে।। চরণ যুগল, ভাতি নিরমল, कुला नाहि यात नीया। বেদে ফার মর্ম্ম. বিধির অগম্যা কে বুৰিবে দে মহিমা।। রাসরভা তরু, 🔝 জিনি যেন উরু, 🖖 নিতম অভ্যন্ত ভারি। অসাধ্য আমার, সে ৰূপ ভাষার. বর্ণিবারে নাছি পারি॥ কটি কীণ হেন, করি অরি যেন, कतरवानी जार्टर मारका একি অপৰাপ, নাভি যেন কুপ, ত্রিখলী তাহার সাবে।।

: TE

व्यक्ति करवाशरत, वताखत्र करत, তীক্ষ সমি কুও ধরে : হৃদয় উপরে, শোভে পয়োধরে, ় বিকশিত শতদলে। व्यवस्य समग्र, 🔻 विश्रमा कि हम, नत्र मित्र रमादल शरम ॥ विखात वणना. विक**छे** समानाः जिस्ति हस्तानतः व्हित त्नोमानिनी, दक्षम स्नामिनी, क्षिक्या जिन्द्रारम ।। কাশ্র অঞ্না, সীযুদে সন্না, ्राका एस माहि 💏। ' अकि চমৎকার, कर्ल्ट जारातः ন্তুতি করে শি**ও**ছর ॥ चरकत डेशरत, अयस्त्र न। धरत, विकासी बुद्द गांस । श्रवा करत हालि, यभि एवं शिक्त পশ্চতে যোগিনী ধায় ।৷ चूंबं छिक (हम, क्षेत्रध्यु (गम, পাৰ্শনি আর থেশ। कारम भागिकणा, करतराष्ट्र छक्का, ू. अमारक अटप्टॉस्ट दकना III একি অসম্ভব, বজে শিব। শব, দেখিবারে ভয়স্কর। কব কিবা আর, পদতলে তাঁর, শব ছলে দিগমর।।

のできる

वाणी हत्सकलाइ अध्यक्ष अवाजा जानीव करवालकथन ।

শর্শই।

কুপ। করি কুপাম্যী কুতার্থ করিয়া। কহিলেন লিয়ভাবে শিয়রে বসিয়া।। কনা। পুত্র বিনা ভোর মনে নালি স্থখ। দে ছাথে ছালিড হয়ে পাইলান ছয় ।। শুন রাণা চন্দ্রকলা আমার বচন। वारिं इंटेरन नाष्ट्र' ष्ट्रःथ विद्याहन ।। এক মনে কালিকার করহ পুজন : शामा अर्था चाहमन त्रान स्वर्। নানাজাতি পুষ্পা আর নান উপহার : युश मील देनदवधानि (सक्ता बाजात्।। এই মত কালীপুলা সপ্তাচ করিবে। হইলে পূজার **অন্ত** এয়োজাত দিবে ॥ · भकास विद्याप विशेष कवित्व मान्य । यथागाँक कहारेटवं खाचान टाजान ।

उर जोटगा क्या (क इहेंदर क्रमी। अभिक्ष १८वं क्षेत्र भत्रति भनी।। এ**প্রকার** পূজা খার যে করিবে যবে। কাকবিল্ঞা বন্ধান্য পুত্ৰবতী হবে ॥ সেই কণ নিজাভজ হইল অমনি। **অন্তরে** অন্তর হলে। অস্তিবর্ণী।। तक्षनीरंक निक्रीरशास्त्र (मरथेहि अलन তদ্রধি চিন্ত ম্ম আছে উচাটন।। শুনিয়া স্থানকথা দুড়ত। রাজার। লে। মাঞ্চ শরীর চক্ষে ধারা জানিবার্ন। চিত্রের পুতলীসম স্পন্দ্ররহিত। ্ ভূপতি কহেন বাুণী রাণীর সহিও ।৷ यात्र यटक श्रास्त्रक्त नाहिक जामात । স্থমতে পূজা রাণী কর কালিকার।। দেব দিজ প্রতি ভক্তি তোমার অচলা। (भड़े भूगाकाल अने जानी हसकला।। আদ্যাশক্তি মহাকাল জায়া অস্থালিক।। ে অসীতা অনাদি প্রিয়া অভয়া অস্থিকা।। , अञ्चल हटस गांडा नित्रा मतनान । चश्चटबाटन मकस्ट्रन कहिना बहन ॥ প্তিব্ৰতা সতী ভূমি সাধ্য। স্কলোচনা প্রস্তুথে ছথী নাহি জান প্রতারণা।।।

नाथा। नठी भ जिल्ला द्य समेनी इस । थोकुक मं सुया जारत यरम करते अता। সাবিত্রী কথার আছে তাহার প্রনাণ। ণতিত্রতা রাণী ভুগি নানিদ্রী সমাম।। प्रशामीला अर्थामीला कृष्य गर्व्स **१८**७। বাঁধা আমি তব গুণে আছি সেই গুণে। আম পর ভিন্ন নাই সকলি সুমান 🕫 भक्तारम भाषी इतम छत्रु अधि भाग ॥ প্ৰাপুর জনা আছে ত্রীর ভাগে ধন। शुक्रस्यव धनमार्या तम्योत्रक्रमः। দদাচার প্রবাভার মারী যদি হন। नामाना धरनरक (कन रूर्व अरहाकन।। অচলা কমলা হন নারীর আচারে। অলক্ষীর আগমন স্থীর অনাচারে ॥ রাজার বছন শুনি রাজরাণী কন। गशताक मानी किছू करत निर्वदन ॥ সাবিত্রীর দাদীযোগ্য এ অধিনী নয়। अमनदर्भ हस्म्माटल छेलामा कि इस ॥ বামি প্রতি শাবিনীর দুট্টকৈ ছিল। ति र भूगाकटल (भद्दे नक्षट्ये क्रतिन ॥ পতি বিনা রমণীর নাহিক উপায়। রমণী সেবিলে পতি চতুর্বর্গ পায়।।

স্থা ছাথ দাতা পতি রমণীর পকা। विमय इंट्रेल शिंख मकरण विशक ।। সকলি অনিত্য নিত্য পতি রত্তধন। त्य धन निधन इंटल हथाई वाहर।। শুনিয়াছি পডিব্রতা সতীর লক্ষণ। পতি ভিন্ন আরু ভার নাই জন্য মন !! পতি মান পতি প্রাণ পতি গুরুজন। পতির প্রাণান্তে নারী জীবিত মরণ।। नानिका समय नत्र ऋदिनतं छेन्य । সিবপুরা করে ভাল পতির আশয়। পুরু। পরে করযোজে চারে এই বর। মনোমত গতি যেন পাই দিগহব।। धोवत्न यूवर्डी जाल (वर्ष थारक वारन। মনে দনে বাঞ্জা যেন পতি ভালবাদে।। বেশ ভূষ। আভরণ করিয়া ধারণ। मिवा व्यवनारम करत करती दक्षम ॥ षात किছू नटर এই छाहात कात्र।। क्विवल পতित मन कतिए तक्षन ।। इक रत्न भाकाहर्त वाहात व्याभात । অক্লচি বুচাতে কৃচি বেলসুল তায়।। পুড়িলে কদের দন্ত প্রকাশ না করে। হাসিতে মুখেতে কর আছাদন করে।।

মরে ছু ড়ি পাক। বুড়ি কবে খাবে ঘাট। ভুলাতে পতির মন করে কড ঠাট।। भकरन अन्धान शक्ति (माहानिनी हरन) ঔশধি বাটিতে নয় বিবাহের হলে।। गत्न मत्न छेशक्य भारत्व अभान । সহস্রমণা নথ্যে বাড়ে তার মান।। খরিলে রাখিয়ে পতি তবু লোকে ভাষে। मध्य बदल अञ्जानी शिल स्थावादम् ॥ প্রমশ শুনিলে হয় মনেতে উল্লাস। श्रीकरी रागरभ (यन इस नकानाश ।। প্রিনিন্দা মতী নারী করিলে তাবণ । তথান ত্যাঞ্বে বগু এইজ লক্ষণ ।। প্রভাক্ষ প্রমাণ দেখা আছে দীপ্রময়। শরীর ভাজিলা মতী পিতার আলয়।। भित्मिका एपनि कर्ष भिवरेणविन्नी। প্রাণান্ত করেন ভঃখে দকের নিদ্দা। कारल कारल किस किल रुडेन ध्रवल : अघारे हहेल चारे यूठिल नकल। পতিত্রতা আপনার পতিনিন্দা করে। কোধান্বিত সতী হলে স্বঞ্চে যাড়ে ধরে 🕡 পতি প্রতি শ্বগত্নীর নাহি হয় মন। সতী ছাড়ি পতি যান অসতী ভবন 🔢

कालक्के धर्मानके अहे स्मकात्व অমৃত ভাজিয়া বিষ করেন ভক্ষণ।। নে ফল তৎপর ফলে নাহিক সংশ্র। निनः धर्मा एकाथा अन्यं इत्सट्ट मध्यस् ॥ • व्यवस्थारक (काम कर्या कथन मा इस् যথা ধক্ষা ভথা জনা **ভার**তে নিশ্চয়। পতির দোধেতে সতী হয় পরাধীন। ' वाशक तमगी इस **भुक्र (वर्र)** कान ॥ প্রনিশ্ল গ্রেশ্বেশী প্রথনে আশা ্রেম্প্র প্রামশ্ এই অভিনাধ দ প্রদার চরপেতে বত অভিশয় : প্রথম প্রতের গ্রাপী 🗫 নে শুনে হয .. আত্রহিদ ন' কানিয়া প্রাহম ভাষে। জ্বানে না ক্সন্থান আছে বিষয়ের পালে ০ जामें थां छ 'बरसरकत इसन समन। কে জানে আথম গর পেলে হয় ধন।। সামানা গমৈতে কিব' করে প্রয়োজন। সভার সর্বাধ্বন পাতর চরণ।। नाती गिल ङेक्स्डिंग्टर পতि मिवा करते। हेह काटल इस सूर्य भवकाटल उद्ध ॥ खंड ज्ञा भारत यांच क्ल्याङ्क इश । পতি সেহা ভুলা স্ত্রীর কিছুমাত্র নয়।।

Later.

স্থ্য ক্রংথ জ্ঞাপনার কর্ম্ম কলাকল।

< শের স্কুচনা কন্তু না হয় বিফল।।

ভবানী ভাবনা বাণী করে সর্বক্ষণ।

ভবের যাতনা বার নামে বিমোচন।।

कालिको शृक्षायम्।

পরার :

ানবাহ দেশাবিপতি বলেন গৃছিলা ৷ বিজন্তে কি কাষ পুঞ্ হবের মোহিনী 🕧 ওপৰেতে সেই কপ হয় দরশন। भूषमधी रगई मूर्डि कदतन राठेन।। অন্তরেতে বিচারিয়া করি যুক্তি তার। অৰগত হইলেন দেখি তম্ৰণার।। পুরোহিত করে কবি ধরেন গুস্কর। রাজগুরু হইলেন আপনি পুজ্ক।। পরিচার্যা রহিলেন সহ্তা ভাকে।। পুজেন একান্ত চিত্তে অভয়াচুরণ।। তান্ত্রিকৈতে তম্নতে আছে বেই ক্রম। শতদল স্বৰ্টাপা স্বয়ন্ত কুস্তুম।। রক্তঞ্বা রক্তোৎপল গোহিতচন্দ্র। রক্তবক্ত শোভা করে রত্ন আভর।।।

शं**काक**न विज्ञानन **घटनीत हम्मन** । অসামীর পাদপ্রে করেন্ অর্পণ।। পূ**র্বা**র সকল ক্রব্য আহরণ করি। দেবীর সম্মুখে আনি রাথে পরে ধরি।। স্তশুন্ধি অক্সশুদ্ধি নাগৰ আদি যত। করেন শকল কথ্য যাগে বিধিমত।। ভক্তিভাবে হেমঘট ক্রিয়া স্থাপন শুক্ষাটারে ক্রিলেন পূজা আর্ডণ 🖟 যথাবিধি বৈধানেতে বিধিমত বলি। যিবিধ প্রকার যাহা দিতে হয় বলি।। হোন আদি দকা কর্মা সমাপন করে: চিন্তাময়ী পাদপ**ন্ধে ^{ক্}রিন্ত** অন্তরে 🖽 রাজা রাণী ছই জনে করি কুতার্কাল। कानी नतन कानी भरम मिटनम अर्थान ।। रगरे यस कदिरमान शृकः अवरमय। य अकात (शरहाइन ऋप्त छेशराम ।। ক্রমাণত দিবা দপ্ত পূজার ব্যভার। পূজা অন্তে এক চিত্তে স্ত্রতি কালিকার 🛚

कामिका खर।

প্যার।

করালবদ্না কালী মহাকালজায়া। वदानः ववना छेमा धना (माभमामा।। कमलाको कुछालरो काली कालामनी। ष्ट्रः शब्दा भ्यामीला मानवमनानी ।: रेवक्क्षी बढ़ना बामा विश्वक्षमिनी । विशालाको विश्व अशे विक्थनिति ।। নিশুর ঘাতিনী শ্রামা স্বরস্তাবিনী। मार्विजी भारतमा मछी भिनदेशविज्ञी । শতক্ষলে বিনাশিল। অসীতা হইয়।। मनक्षक भरत তোম। इतिहा लहेश ।। কটাক্ষেত্ৰে বিধি নিফু স্থায়ী স্থিতি হয়। क्होटक (क्वन वांत्रि म्यूप्स नम् ॥ উৎপত্তি করিয়া তিন জনে ভিন গুণে : করিয়াছ ভারার্পণ আপনার গুণে।। वि**ष्ट्रम्थ रहना** थटन करतेन असन। পালन कटत्रम मञ्चर न नाताशन ।। उदमां खद्व महाकाल विनाम कांत्र । তোমার অগম্য মর্মা জানে কোন জন 🔐

অকুল অধচ ভূমি **অকুলের কুল**। প্রকৃতি পুরুষ আদ্যা অনাদ্যার মূল ।। অচিন্তা অপার মায়। সমন্তর্কাপিনী। श्रीयत्य ছिलाल स्ट्रा कपटल कामिनी !! दिक्लारेन आस्त्रज्ञी जूमि देवकूरके कमला। দারকায় মহামায়। উৎকলে বিমলা।। विश्वभाषा विश्वकशी वित्यत विक्रमी। নন্দ গোপস্তা ভূমি যশোলানন্দিনী।। নিরাকার সাকার মা ভূমি গো আপুনি : বন্ধার আরাধা আদা; পতিতপাবনী !! मन संशितिमा जुभि नन अथाता । (तम्प्राटम नाहि काटन मंहिरा (उपात् । काली वर्ल अमरुग्ल रहेरेन आशास । বৈকুণ্ট চলিয়ী যায় কি করে কুতাস্ত ॥ 🔭 हेल हस्त नियाकत तक्ने श्रवन। विधि विकु विश्वनार्थ (क्षामान हर्ने।।। দিবা রাত্রি অবিরত ধাটন নাইি পায়। কেন মন করে ভাই পাবার আশায়।। उत्राः (करण काली क्लालमानिद्रक । थकूटन कूहोन कून कुनकुछनिएक ॥ यऐंग्रक म्की चूमि शतम श्रक्ति। ত্রবারকো শহস্তারে যক্ত মধ্যে হিডি।।

अमरधा जानि में दिमरलट मन। ৰে গতিকে গভায়াত গমন তেমন।। कर्छा द्यां इस मर्टि चुसिरना ज्यांनी। व्याविकार मर्सकीटन इस्त वीनानानि ॥ कृषि मदश उर्किएक दमानंत्रम पदन । वितास या समस्टम कच्च नाष्ट्रियोगः। निक्रमूरमञ्ज्ञिकिरोजी विक्रुधनासिनी। सफ्रम्टल अधिवर्ग ताथह तकिनीनाः চতুর্দল সর্রাসজ গুহু করি সার: ভাছাতে বিয়ান সান্ধ তিবলী আকার ।। **উড়াদি পিঞ্লা তিম হইয়া জড়িওঁ**ী ম্ণাল তথুমুদারে গমন ভড়িৎ, ii যধ্যে মধ্যে মণিপুরে হয় আগমন। ভবের ভাবিনী ভববস্থান মেচেন।। স্তব করে উচ্চৈংস্বরে রাজ্ঞ্জ কর। त्रांगी क्षिष्ठ जामा। गुक्ति इ.७ मा मन्ह ॥ ध्यमः। रहता कानी बराकाना । तानी थिए एस कति कन रेम्ववानी ॥ হবে তব বাঞ্চাপূণ কহিলাম সার। क्या धक अचा हेटव छेम्दव ट्यामार्ड ॥ देमदर्शना अमि तानी जाजा कहें जन। रतिष्ठ इरस श्टह करतन गंगमं 🖟

शिमश अभावताः

েদেব দিল প্রতি মন্তি মাতান্ত রাজার। हर्वीत क्रमात्र ताटका नकन स्मात ॥ के कि नकत इक नरव महासूथी । শিকপূর্ণা বস্তুস্তারা কেন্ ন**েছ'বী**।। 🗽 প্রাণের অধিক রাজা রাণী ভাল বাংস (যে কর্ম করিবে তাহা অত্যেতে জিজাবে।। মনোনীত সাধ্যা পত্নী ভার্বো যদি হয়। व्यत्रत्याः यमिक हरने ख्वु स्ट्यानम् ॥ তুঃখে তুঃখ নাহি হয় থেকে অনশন। त्म मुथ दर्गात्म छु:थ उर्थनि त्माइन।। বনিত। হইলে খল নাহিক নিস্তার। পদনত রয় তবু নহে পরিবার ।। कथांत्र कथांत्र मना उटि उदि नाक । मुश्रशीन पृष्टा यन जीमक्रम होक ॥ ্তিলার্চ্চ নাহিক হয় সুখ সভাবন।। ্ দিবানিশি পান দোঁতে অন্তরে যাতন।।। मदनेट छेन्स क्यी भटन निवादन । नर्वन अञ्ची मन्द्र कार्यानन ॥ উভয়ে-সরল্ব ধনি পরস্পর হয়। পরেশ পাইলে ততে। নহে স্তর্থোদয় ॥ রাজা রাণী ছুজনার সরল স্বভাব। चारवत अवधि मार्चे करम इक्ति छात ॥

পুরবাসী কত দাসী কুরিবে দেবন। অন্তঃপুরে রাজা রাণী রন ছই জন।। উল্লাসিত হয়ে দেঁহে যামিনী পোহান। এইমত কত দিন স্তথেতে কাটান।।

- 一日

বাণী চন্দ্রকরার পর্ত্ত অহঠাই।

শ্ৰার দ

তুলনার মনোমত হরেছে তুলন। कुष्यत्म कृष्यत्म दश्यम विद्वान वर्षम् ॥ গতমাস কলাহাস কুসুম মুদ্ত। **গর্ত্তের হু**চন। রাণী জ্বানিরা নিশ্চিত।। তুই তিন মাস আৰু গোপন রাখিলা। চতুর্থ মাসেতে গর্র নিশ্চয় জানিলা।। तानी रान महातांक कि कहित आत ; অনুমান করি বুকি গরের সঞ্চার।। শুনি রাজ: দর্যিত হইয়া তথ্ন। ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিতে দেন বছ রত্ন ধন।। দেখিতে দেখিতে প্রশাস উপনীত। পঞ্চামূত আছে শাস্ত্রে যেমন বিহিত।। (रमविधि भठ शूका (नन कालिकात । অভয়া চরণে মন নিতান রাজার।।

40

रमहेम् क्मांग्ड पर्छमान क्या। मक्षम मादमत जामि हहेन छेपत्र।। নীমন্তোন্ধন দেন শাস্ত্র অমুসার। আর যাহা পূর্কাপর আছে জ্রী ব্যভার 🛚 वाष्ट्रभारम व्यक्तिका तम्म चंदत शहत। রাণীর সমূবে **আনি রা**থি পরে পরে।। মন্ত্র কলাই মুগ ভিল ভিলে গল।। उल छ। कथारे याडा थारेवात मछ। ॥ চিনের কাদাম আরু সথের জলপান। वाबु एक्ट्र याहा रहस्त्र मच करत थीन ।। চেনাডুর সরভাঙ্গা বর্পি খাছে অ্চি। কণামাতে খেলে হয় অক্তির রুচি।। বিলাতি কুমুড়া হৈচি পক্লান বানায়। **८गटन गाउर खनिरशांटर ठाँठ** करह थीत्र ।। পানিলোয়া ছামাভাজা অতি পরিপাটি। त्रणुद्ध बार्यन श्रुद्ध द्योभीतन। वाणि ॥ लाका जुड़ा जकजवा या रमशेरन हिल। भक्ति आनिया ब्राक्त महिषिद्ध मिल।। षाष्ट्रःमञ्जा मत्रमाटम भिटल इस नाथ। ेगटनामाध शूर्व इटला घूहिल वियोग ॥ 🤌 দিলেন রাণীরে নাগ যভ ছিল নাধ। श्रदत शदत गांध करंत एक गदन गांध ।।

চর্ব্ব চুধ্য লেছ পেয় ছাতুর্বিধ क्रेन। নানা জাতি ফল দেয় দেখিয়া সভোষ :: কত শত তরকারি করেন রশ্বন। শাক স্বক্ত। আদি করি পঞ্চাশ ব্যঞ্জন ।। দক্ষোক্ত কাৰাৰ আৰু পেলাও কালিয়ে : নমেতে রুমই করে গিন্নি বানি গিয়ে 🕸 कर्तन तक्य क्छ व्यक्त दश्चन । শ্বমলেতে পরিমিত সরিষা ফোড়ন।। रवाम रकान भारता भारता हफ़हिए है के । খাস্তঃস্কার্যনীর টকে বড় সক।। कांमताका कलभाई त्वतु कवरिश।। করঞা আমত্য ভাতে আঁব আদা দিয়া।। णाकुमा आंग्रज्ञा त्वांत जांत जानाहम । আনার আচার আলুবধরার রস 🛭 মিউ রুম ডিজ্ঞ কটু রাজ্যেন দকল। সকলে অক্লাচ ক্লাচি কিবল অহল।। मधि इक्ष निवेत रमन व्यवदम्ब । কটরা পূরিয়া পরে স্থান্ধর পায়েস 🕩 किलाणी निर्वाक शका योका मटनाइता। करूति वानामञ्क्ति ननाट्य तकता ॥ রসবোলা রসবড়া রসে রসে নড়ে। थोकूक जन्मन याहा दमस्य नाल शर्ज ॥

की त्रश्रीक गैरनाहता वर्क्तरमदन छला। यात नाम छेषांभरन स्नटह ७८ठे स्नाहा ।। **पिलि देश्र** पिलिमाष्ट्र यागितनम यउ। রুজান্ত তাহার বলা নহে মনোগভ।। কথন গ্রহণ নাহি করি আস্থাদন। नकरवत मूर्य मां करति हि भदन ॥ **६८कृषे भाषळी जात्म माना मक**दिशः ं मिटनन क**ठक** छोल (भग्ना **का**रविनिधः ॥ वासम विसामा (गाउँ धाक्रतांते महा। ছোৱার: আসুর পেন্ডা খোবানি মন্ত্রকা।। পর্বত কন্দর গুথ কত দেশ ভ্রমে। **षार्मन** विदिध कल वक्ष्माडिखरम ॥ পেয়ারা দাভিদ আত। সদা নারিকেল। शेक्न्द्र त्रावाशकान त्वरू कुल द्वन ॥ তরমূজ খরমূজ নোনা পৌপে তাল : বাভাবি গোলাপজাম কাঁকুড় কাঁঠাল।। কড দ্রবা আনে তাহা নাহি মায় বলা। को डोनों को नार्नोंनी काद्य निम्ना कना ॥ টাপাকলা পাকা আন্ত স্থমধুর রস। আমলকী হরিতকী ফুটি আনার্ম।। অলঙ্কার তার আর কব কি কথন। बर्तक युक्त वर्ग कर्णा अधन ॥

वानात्रती वन्याभाष्टी शतदन वनन। जा**कार विनाजी ना**ड़ि यात रघरे यन ॥ চুমরি টের চি ডেন রেলওয়ে ভুরে। अमुखे शादकना किছू शक्ति। **गाविशु**त्त ।। গোলেল। গোধড় গৌন পিফুগুল্বাহার। জরদ সরুজ নীল বাহার যাহার 🔢 আফ্রানে আন্মানতারা আনে বিদাসান। পরিধান যাহামাত্র শক্ত ফিরে চান।। রেশমি পশমি বস্ত্র ভাল ছিল যত। কোণা হতে কেবা আনে কহিব ভা কভা। मरनामार्थ (मन माध ल्लाहि ल्यास) পাত্র মিত্র মাদি করি মত প্রজাগণ। থে যেমন সে তেমন মোগান স্থান। रम निम रम निम नाम भाषायांना जान ॥ প্রবীণা গৃহিণী আসি আশীর্নাদ কবি। বলে মা মেটের হাছা বালাই নে মরি!! যেছি মন তেমি ধন পুত্রবভী হবে। তোমার ফলিলে ফল আনন্দিত সরে !! विषास इंहेम्री छात्रा वटनन भवाहै। जान थांक (जनमारका याहरना मा याहे।।

श्रीमान उद्यक्तिनी

उत्तिनीत संग्रा

পরার ।

কথার কথার নয় মাসগত হয়। मर्भग भारतत में मिन भूगे हहा।। **मह**ांत्री **हस्तकता इहेता** धानद । ज्ञिकं इहेश करा। महा भटहा ६ भता। অপ্রপ্ ছেন রূপ উপ্রামা হয়। প্রভার করিল দীপ্তি দশদিক ময় 🛭 উজ্জ স্**তি**শাবর কণের আলয়। जूरमण्ड रहेन ध्यन **हत्त्र**मा जिन्स ॥ ধাইয়া ধরিল থাত্রী ধরাপতি ধন। मर्जिं करित करित माजित (इपन।। व्यक्त हरेगा तानी कुमात्री मीहरक। व्यमिषिय मनञ्जार्थ (मध्य क्रुड्रे ५८% ॥ সংবাদ লইয়া দুত ত্বরিত আদিয়া। সমস্ত ব্রস্তান্ত ভূপে কংফ বিবরিয়া।। व्यविश्वाक्त्रभूटि करत निरवणन। পুলকে পূর্ণিত অঙ্গ শুনহ রাজন।। अमर्विन। कन्। अक तांगी हसकना । कि कर कटनत करा विजीत हमना ॥

স্থাপ শ্রমি রাজা হর্ষিত মন। দুতেরে শিরপা দেন বহু রত্ন ধন।। অন্তঃপুরে চলিংলন হয়ে উল্লাসিত ! স্থৃতিকা ঘরের দারে হন উপনীত।। ক্নাঃ হেরে নরেশ্বরে হরবিত মন : निवस्थि नितरभंग तालिका वमन ॥ ভূপতি গঙ্গু অতি কননা পাইয়া। जारमन ऋत्थल मीरत शक्त १६ता ॥ উথিপিল অংসিফু নয়ন যুগলে। বদন ভাসিয়া যার অক্রন্তার। গলে।। সহারাণী পুছেছিলা কালিকা চরণঃ रमहे भूगाकरण अहे कमार्विद्ध वस । একলে আমার এই হইতেতে মনে : क्नात्र विवाह मिव व्यक्तिका भूतरन ॥

--

गर्वतिक। निर्माटकः शक्ति।।

পরার।

নির্মাহ ভূপতি অতি উল্লাসিত মনে।
নাক্ষী করি চন্দ্র সূর্য্য দিক্পালগণে।।
কহেন পুর্বোতে আমি করেছি এবণ।
বেখানে স্কুরুপা কন্যা সেইখানে গণ।।

পৰেতে এমত রীতি আছে পূর্বাপর। ' জাতিভেদ নাহি থাকে কাহার উপর।।। আমার ভেষন পণে লাহি প্রয়োজন। সমুদয় স্থির রয় এই নিরাপণ।। মনের মানদ এই কহিলাম নার। धनदान कुलनील मङ गावङात ।। আচাৰ বিচার কল গুণ অভিশ্য : সভাধর্ম পরায়ণ ধরাপতি হয় ! थरनमा इंटेएड धरन इंटेरदक व्यक्ति। মানেতে বিখ্যাত হবে যেন কুরুপতি।। কলফ বর্জিত বুল মত্য আচরণ। कटशत जूलमा जुल: विखीश ममन ।। বয়ংক্রম অপে হবে রাজার কুমার। তবে তারে দিয় কনা। প্রতিক্রণ জামার।। धारे मार अक्रीकात कहि नद्दर । বাহিরে আসিয়া বার দিলেন তৎপর।। বাল বন্ধ স্থাদি করি যত প্রজাগণ। দেখিতে রাজার কন্যা সকলে গমম 🔢 वानाकत वाना करत यन कति करत । 👉 মৃত্যকিরা ঢারিদিগ বেড়ি মৃত্য করে।। मुमक त्यांचक जांक जांन वीना कानी। শেডার তমুরা তাদা দপ্তদরা বাশী 🕕

জগ্রান্স আরু ডম্প খোল করতাল। বেহালা সারস্থ বাজে মধুর রবাল।। ভূরি তেরি জোড়াঘাই বাজে রামকাড়। । 🕟 মুণুর ঝাঝর আরে মাদল নাগাড়া।। পায়েতে ঘুস্থুর কেই বস্ত্র নাদি ভালে। কিরিখা খ্রিয়া দব নাচে ভালে ভালে।। রাখাত বৈষ্ণব কত বুন্দাবন বাসী। অবধৃত এল মূচ মাথি ভক্ষরাশি।। मर ७ म ७ क्यू अन न १५ खी । करत । আসিয়াতে ভাট কত সংখ্যা কেবা করে।। हिक्किण जानिया मात्र कताकानि निया। चुचित्र सा (कार्यः वटल द्वाइन्स पुत्रिस्।।। काँना (थाष्ट्रा कु । शामा अकृत विदेत । গোদা বেবি। গলগতে কুক্তওে ফাল্য ।। ধাঞিবাড়ি চিভাবাড়ি লয়ে এলো উড়ে। अंशादतव भाग त्यन हत्य शर्व कृत्कु ।। व्यक्तिम कतिया धन त्नम मुद्दाकारह । **८माना চুनि हिट**त भागा गाहा होहा गाँउ।। বসন ভূষণ রক্স রথ হাতি যোড়।। কাসমারি কামেয়ার সাল থোড়া হোড়া .. मकटल नहेशा थम गाम कू कृ हरता। **डेकिः बर**त बुट्च केना। श्रीकृक कूमरम ॥

দরিজের মনে। আশা বৈতরণী নদী।
অর্কপথে গিরা ভাবে ফিরে যাই যদি।।
আবার আনিব ধন নাহিক সংশয়।
কিন্তু যাহা আনিয়াছি রক্ষক কে রয়।।
প্রধান দরিদ্র বলে তাই বটে ভাই।
আমি এর সদ্যুক্তি মনে গাওরাই।।
এই মত বলি সবে যান নিশ্বালয়।
ছযদিনে ঘঠাপুছা শুন পরিচয়।।

जन्भिनीत एक्रीभुक्तः।

भ्याचे !

ছালনে বেনেরাপূলা আছে পূর্বাপর।
অটনা করিতে ইর বর্চী মার্ক ওর।।
রাজ্যবাসী সকলের আনন্দ অপার।
করিলেন পূর্বাপর আছে যে ব্যভার।।
পূজা কৈল পুরোহিত যোজ্যোগচারে।
বসন ভূষণ আদি নানা উপহারে।।
নিজা ভাজে গৃহ্যাকে জাগ্রত থাকেন।
পত্র আর মন্তাধার লেখনী রাখেন।।
আছে যে বিধান বিধি এই বেধানত।।
আবিভূতি হন বিধি এই বিধানত।।

লেখেন লক্টি যাহা স্তিকবিশেরে।
সাধ্য তাঁর নহে তার বিভিন্নতা পরে।।
বর্তদিনে ঘটাপুলা হর সমাপন।
সপ্তম দিবস অত্যে শুন বিবরণ।

ভवित्रणीय आग्रिक्ट्र

পরার।

অকাহেতে রীভিমতে আছে যে সবার। আটদিনৈ আটভাজা করেন ব্যভার।। চাল বুট ভিল মুগ ব্রুবটি ভালা ! মনোহর। মণ্ডা মুত্তি বার্গি গজা খাজ।।। কাহন কাহন কৌড়ি কতেক আনিল। কোঁচড় পুরিয়া সব বালকেরে দিল।। ছটাছটি জড়াজড়ি করে যত ছেলে। শিবচন্দ্ৰ শস্তুচন্দ্ৰ কালীচন্দ্ৰ কেলে ॥ ্সিন্ধে ফটে পঞা গৌরে হারা তারা লালা। কাজিকে ঈশ্বরে যেদো ভাগবং কালা।। শীতারান তারারাম অভিরাম স্থাম। रतक्ष जाताक्रक खानक्ष जाम।। প্ৰিচুলে এক ছেলে আসি তৎকালে। সিং **ভেকে ঢুক্লো বু**ড়ো বাছুরের পালে 🛭

(ছ्ट्यूत) श्रांनम् करत् मार्ट अरक (देटक) আঁতুড় হইতে বাণী উকি দিয়া দেখে।। नम्पित्न वानिकार्य क्यांस्य सानः। **विश्मा** जिन्न कारम **के**न्स्यान ॥ সম্পূর্ণ হইল এক মাম উপনীত। করেন ষ্ঠার পুঞ্চা যেমন বিহিত।। মুগায় বেদির পরে ঘটের স্থাপন: বটশাখা ভতুপবি করি আচ্চাদন।। हाविभिद्रक प्रश्लिभनः पिरलम क्रमि। মঞ্জ আছিব করে যতেক ব্যথীপা বোডশোগচারে পুরু। ভাতেতে পুরুক। করেন দহার শুক্তি বিদর্শ পুরুক। निर्वित्व मकल कथा कति ममाधन। সহত্র সহত্রে পরে রাক্ষণ**্রের**জন !! वांत्रिमा विनिद्रलम त्रामा नारकाण्यत । নহবৎ বাজে বালা**ধানার** উপর ॥ 🕡 আগমন বিভাবরী দিবা অৰ্সান ! এমন সময় সভা হতেছে নির্মাণ।। श्रादम श्रादम हस्यकां अर्था कांश्व मार्ग । कान इस इक्नीटल मीश-मिनगर्न ।। কৰিতা কীৰ্ত্তন গান শত শত ঠাই। बाकि। भागनी एश दान्याक्षाह ॥

জ্ঞাতি বন্ধু আদি যত অমাতা রাজার গুণিজন করে সব গুণের বিচার।। দরিফে বিলান ধন খেবা মত চান। এইকাপে হয় সপ্তমান অবসান।।

454) febru

क्रशियोंत काम धार्म ।

धशांत ।

অফীম মালেন্তে দেন ওদন প্রাথন। श्वारङ्करेष श्वकांत विभि त्यरमञ्ज्ञ वहम ।। भरमामीक कति वाशी माङाहेवः वांवा । সাৰ্বৰ অঞ্চে আভিবণ করে স্বৰ্ণ বালা।। ज्लकः जिल्का (मन नश्तन ज्ञाक्षन । গরিধান **মনো**মত অপুর্দ্ধ বসন।। बनमभविका देवल शहतिक धार्मि । রাশিচক্র গ্রনায় হয় ভুলারাশি।। अनवश्रम वि**ध्व**वर्ष **कथा** छङ्गवादत । उत्रिक्षि देश्य नाम लग्न बसुनादत ॥ ওদন বদনে দেন করি ময়পুতা। ৰপেতে করিল আলো ভূপতির স্কৃতা। वानाकारन वानारथन। वानिकात्र शतम नाथ काथ कथा कर किछ व्यटन ।।

अशृष्ठ ममुण खाया मदत हत्सांबदन। रामा है। देन बाका तारी मखके छलदन ।। वंतरकम् अञ्चलम् करम् करम् इस् । इन द्य क्रमलकलो इहेल छेत्र ॥ **ত্রেশদশবর্ষ প্রা**য় ভর্জিণী হন। রাণীপ্রতি নরপতি সঞ্চোগনে জন 🖰 युवर्की इंडेश करा। उपनि जवनः स्था। এক স্থানে থাকা আৰু উপযুক্ত নয় !! भ दृहक्क शुं**रत जाः रम (य** भवत हिल । তর্ফিনী লয়ে সেই মহলে রাখিল। অন্তঃপুর অন্তর্গত ছিল যে আবাস। ८मडे दारम एवं क्रिनी के**विर**णन वाम ।। महहती (पन हाति मगान दरहग। जाहारमञ् क्रश छन कि क्र विरम्ध ।। (बांडम तश्रमी मत ध्रथम (घोतमी। कर्मानमा हस्प्रमुची ख्वारक्षवनमा ।। চভুরা নয়নভারা চভুর্থ সঞ্চিনী। (पश्चिट्ड क्लर्सी (यन कोट्यत कामिमी।) নৃত্য গানে সুনিপুণা তুল্য চারিজন। कमी (वमी नंदर स्थन निक्ति अनन।। वीनाबद्ध (देनू चर्त यनि करत गान। ছতিশ রাগিণী হয় রাগ মুর্তিমান।।

मशीनर्ग नुष्ण भारत नदीरन लगीगा टेन्द्रव दन्ने कादन दावी यान अक मिन ।। • রাণীকে দেখিয়া সবে হর্ষিত মন। প্রণাম করিয়া দেন বসিতে আসন। তর ক্রিণী কেরি রাণী ছইল। বিসায়। জামতা ব্যতীত আর শেহি। নাহি হয়।। दयोवत्न युवली विभ शक्ति नाहि शाहा। জীবন নংশার ভার খনন জালায় ৷৷ त्म जाना विषय जाना ना इस जिन्हान । (यमन छीट्याव वांग खवार्थ मलांग ।। এ বৰ ভাৰন। কত ভাৰি মনে মনে। वार्षात नित्राचन कना। हक्तान्य ॥ कर्षक विलास अभी कदिश गरम রাজার নিকটে আসি কন বিবরণ।

য়াজারপ্রতি নহারাণীর ভরঙ্গিণীর বিবাহের কথা প্রস্তাব

পরার।
কন্যার মহল হতে আসি রাণী কন।
মহারাজ স্থির হয়ে করুন প্রবণ।।
মুবতী হয়েছে কন্যা প্রতিজ্ঞার দায়।
তরজিণী মুশপানে চাওয়া নাহি যায়।

পুর্বাপর শুনা আছে দেবতা কি নর। विवोद्द अञ्जा किया रस असम्बर्गा **मिहे वृद्धम ए**जियोश नाहिक मश्मश । ভোমার পণেতে রাজা না জানি কি হয়।। व्यक्तिक युवा कमा गांत घटत थाटक। তাহার সংপুর্গ ভোগ ভোগয়ে ভাষাকে।। পুর্বের র্ডান্ড সব আছে দী প্রমান। 'অবশেষে রক্ষা হওয়া স্কুক্ঠিন মান 🛭 বাণরাজ। কন্যা উধা আইবড় ছিল। তাহার কারণে কত প্রমাদ ঘটিল ৮ অনিরুদ্ধ আদি উধা করিল হরণ। ক্রোধে বাণ তার জানক্ষধিতে জীবন।। **म्**डबूटथ रम*ई* मत ऋनि दिवत्रः। নিববাণ করণ মন দেব নারায়ণ।। চক্র ধরি চক্রধারী ক্রোধে **হুতা**শন। ুষ্মবিলয়ে উপনী**ত বাণের** ভব**ন**।। পড়িয়। সহুটে বাণ ডাকেন শ্বহ্নরে। প্রি**রা**ণ পান বাণুশক্ষরের ভরে।। আর এক নিবেদন করি সন্নিধানে। 🐩 শ্রবণ করুন ভূপ অতি সাবধানে॥ মহামান্য মহারাজ কুরু অধিপতি 🗁 ত্বহিতার জন্য জার হলে। কি তুর্গতি।।

आहेवज़ कारल इरला स्पोरन छेन्छ। कुक्कमा लक्कपांत दाखि विश्वमस् ॥ वालाकारस विभा नाशि मिन प्रदेशीयन । म्बामरक्षा मोद्य कारत कतिन स्त्र । জায়বতী প্রতি বিধি হয়েছিল বাম। তবে যে পাইল ভাগ ভাগো চিল রাম।। শ্রীনন্তান্ত প্রতারে সার। আছরে প্রভাক ভাহে প্রমাণ ইহার।। দমবোৰ পুত্ৰ শিশুপাল মহাশ্য। হাতে ভাতা নেধেছিল বিবাহ আসয়। ভার গর্বা হলে। খবং জানে সর্বাজন। রাক্মিণা ধরেন হরি **জ্ঞা**ত ভ্রি**ভূবন**া। শিশুর মতন শিশু জান কেঁদে কেঁদে (শ্রিয়ে বিধাদ হলে। হাতে সূতাবেঁথে।। আপনি ওজন কত ভাবেনাকে। মনে। त्तित हरत हरू होत नम्जूना मरन।। ্রামন হইয়া তাদ করে জাকর্য। । সমুদ্র পাতারে পার দরিদ্রের মন।। তার ভাগো যাহা ছিল হয়ে গেল শেষ। प्रः शिक इहेन्। পরে চলিলেন দেশ।। नम्मी क्लिमी (य देवकुटके क्मल)। य प्रशिक्ष कांत्र रहता नगरि मात्र वला ।।

শাইকড় বড়কন্যা ভরানক অতি। প্রাথ ভূগিতে হয় কলঙ্ক সংহতি।। সঁহারাজ পুনঃ এক করি নিবেদন। স্কুড়ার বিবাহের অপুর্ব কর্মন।। এক সভী তুই পতি একি অলকণ। क्रायोगध्यम मञ्चलाटम दलाइराज मन ।। व्यर्कुत्न क्षणात्म हेम्हा (एव गांताग्रह) শারের করাত হৈল ভদ্রার (খমন।। ছুই ভায়ে ছুই পতি ক্রিলেন খির। **एकरव रक्टरव अन्न कालि इहेन अधीत।।** গ্রিক্সের ইচ্চা দাহা অন্যথা কে করে। আপনি যাহক ভদ্ধ কিন্ধুন উপরে॥ কুফের কিরীটা প্রতি মন ছিল অতি। নৈলে কি অৰ্জ্জন রথে সুক্তস্তা সার্থী।। युद्धी (योवनकारन छनमञ्ज श्राप्त । বিনা কান্ত নহে শাক্ত আইনড় ভার।। वानाकारम विरय हरन तुष्ठि नकिन। छ। इटल कि ७४। सदय इटहा उलाउति ॥ णाहेरफ युरा त्मरस शास्क गमि घरत। थोकुक मञ्जूषा पूरत रमस्य हेन्छ। करत ।।

পুনকার চন্দ্রকলা করেন বচন 🗠 प्रायुष्टी **अंत्रभ्**ता श्वन्य ताकन ॥ इश्मभूरथं मगज्ञ नेन विवज्ञ । সকল রুত্তান্ত অত্যে করেছে প্রবর্ণ।। দেখারেছে নিজারূপী দুভে পরস্পর। সাসাপনে নরনের করি অংগাচর।। ভগ্নি ঘৌৰন মন সঁপিয়াছি **নলে**। লোকাচার জনা যাওয়। স্বয়ধরস্থলে।। गानतम साहादत পতि कदत मदबाधन। त्म क्र**क** हर्षेण পण्डि (यदमत यथन ॥ দনয়ধী অন্তরেতে প্রায়ে অতি ভয়। ভাবে ইরি দয়ানর কোথা এ সময়।। ग।न बच्चे महन क्ये धर्मा नके इस । কেম্বে প্তায় বাব নাচি গেলে নয়।। যত্রণতি ভাবি সতী চিন্তা করি মনে। শ্যন্তর স্থানে যান বিষয়বদনে।। नाम भरधा त्राक्ष्याला कति भाला करत्। ननतारक हातिमिदक व्यक्तिम कर्त ।। শহপ্রকোচন শশী বরুণ শমন। र्देश एक मनक्षा थहे हाति क्रम ॥ তাহার নিকটে বসি চিন্তাযুক্ত নল। जागांज्य मक्तानरण विरक्त क्षवण।।

व्यवस्थिय वाष्ट्रकमा करत निवीक्ष्य। **७**क स्थारम औठ नल इस एत्रमा ॥ मेंगश्र श्री यांचा तम्म मन नोस्टम्टम । अভिমানে দেবগণে চলিলেন দেশে।। जीकुमा पत्रा भग जारता त्यहे किया। সেই পুণ)কলে ভাব সতীয় রহিল।। में शिर्मा नगरे करते है एका उत्तर होते। अक्षा क्रम्ति आहि मनन महात ।। সমাগরা পুলিবীর আধিপতি ভাষ। ঘ্রম্ম ভারিতে হয় কন্যভার দাস।, কন্যা হলে দিবা নিশি আভার ভাবনা বেবল করিতে হয় পর উপাসন 🙃 অবশেষ ব্যক্তী আর কিছু নাছি রয়। क्यांक्रमा क्यांचित्र शाह्य धटल इय ! যাহা হয় মহাশায় ভাবহ নিশ্চয়। क्षेत्रेदफ् रिमर्स योत नमः छात्र छत्।। ্ভাজন শায়ন ত্যাকি হন্ ধিল্মান। छेख्य मधामधिम नकत्न नमान।; করুন কন্যায় অত্যে বিবাহ উদ্যোগ। विलय हरेटल भटत हटन खबरग्रा।। ভোমার গণেতে রাজা মনে ভয় হয়। সমুমুরা প্রতিজ্ঞায় বিষম সংশয়।।

প্রতিক্ষা পণেতে কোঝা কার স্থথোলন। কন্যা লয়ে পণ যথা নেই থানে ভর।।

-

মহারাজ নির্ম্বাহের কাণীর প্রতি উতি ৷

পরার ৷

ताका कम महादाणी अन मनियादन। প্রতিজ্ঞা পণেতে হিত যার যেই খানে॥ প্ৰেতে ব্যাপিত অতি হয় মহীতলে। ভারতের নরবর আইসে সকলে।। যুগে যুগে বিখাছের দেখ নিদর্শন। লেভাগুণে মিথিলায় ধরুজন্দ পণ।। পণেতে পবিত হলো জনক ভবন : भूर्वे बच्च दायह छ करतन शंघन ॥ অপেনে আপুনি নাহি জানেন জনক। জগত জননা যিনি তাঁহার জনক।। পড়িত পাবন পূর্ণ কৈলা মনকাম। কমলা হইলা কন্যা জাগাত। প্রীরাম।। ঘাপরে জৌপদী যিনি জ্বপদের স্তত।। यक्करण डेर्भिक गठी लक्ष्मी अश्मगुरु।।। লক্ষাভেদী পূর্ব রাজা করেন আপনি। नक कति रम्डे नक विटक्तम काछि।।।

যার যুদ্ধে পরাভব হন মৃত্যুঞ্জর। व्यवनी विकार अर्वनाहि धनक्षत्र।। কিন্তু সব সে কেশব কুপ: ভিন্ন নয় ! নতুবা ভীমের বাংণ হতে হতে। লয়।। পান্তৰ গমন তথা পণের কারণ। क्रीक्रक शांख्य ছांडा नट्ट् क्रांधन ।। ভাগ্যে পণ করেছিল ক্রণদ রাজন। ভাগ্য পুণ্যকলে পেলে জ্রীমধুক্তন !! পণে প্রাপ্য পূর্ণব্রহ্ম পরকালে তাণ। অহিকেতে কত অ্থ রাদ্ধ হয় মান্দা। तानी कन बाधा (भएका कनिकारम मधा। कार्याः विकास - ६ स्टब्स्स एस सम्मा রাজা কন কেন প্রিয়ে মনে ভাব সংল্। জনম মরণ বিভ: ধাতার নির্কাল ।। রুফের অণুর্ব্ব লীলা বেদাগমে কয়। भार्डित स्थान स्टन स्टन प्रक स्य ॥ ভূমিষ্ঠ না হতে অতো দক্ষ, আহার যার কর্মা সেই করে আর সাধ্য কার।। ু **প্রজাপতি** করেছেন বিবাহের স্থিন। তোমার আমার ভাবা সকলি অন্থির 🛚 অভএব মহারাণী থাকহ নিশ্চিত্ত। চিত্তখির করি কর চিন্তামণি চিন্তে।।

বাহারে করিলে চিন্তা চিন্তা বার দূর।
নির্বিষ্ণে করেন নাস চিন্তামণিপুর।।
প্রবোধ বাক্যেতে কত বুঝান রাণীরে।
ভূপতি মগনা অতি চিন্তা সিন্ধুনীরে।।
মহারাণী ভারংপুরে করেন গমন।
মহারাজ উৎক্তিত ভিরু নতে মন।

and Side

ন্থাসায়েক ভারলিনীর বিবাহের পাএলেখনে পান্তমতি

वस्-जिनंगी।

হুইলা বাহিন্ন, নুপতি কুথার,
নির্মাহ দেশাথিপতি।
পার মিত্রগণে, সভাসদ জনে,
সকলেতে কবে নতি।।
ভূপতি উখন, কহেন বচন,
দৃষ্টি করি করিবরে।
দিয়া নিনেদন, এই বিবরণ,
সবিশেষ সর্বভ্রে।।
লেখহ পত্রিকা, আমার পুত্রিকা,
তর্ফিণী গুণবজ্বী।

কহিব কি আর, উপনা তাহার, দুখাতে দিতীয় রতি।। ভাহার বিবাহ, নৃপতি নির্বাহ, করিবেন সমাপন। इडेश: नमग्र. इडेटव छेपग्र. निकाद्दश निटक्डम !! ধরণী উপর, ধতেক ভ্রমর, ভাবন্থিতি যে যেখানে। जनात नर्म, कत्र (धात्र), लिशि लिभि (महे खाती।। পুরোহিত উক্তি, সিদ্ধি এই যুক্তি, প্রকাপ্তিরে মরিয়া। বিলম্বাকর, হইয়া তৎপর; ्लथ **मर** विविद्या ।। क्ष खगरनम, गकल विरम्ध, আমার প্রের কথা। वज्ञानम एछ, मिकंशन प्रहे. इस (यम भव यथा।। मचा इहेग्रा. यहारन यहिना, লিখিতে বদেন পাঁতি। বিলম্ব না করে, যত কৰিবরে, অবিশ্রাম দিবা রাতি।।

ভরঙ্গিনীর বিরাহের প্রতিক্রা পতা

প্রার।

ক্ষত্রিকুলে উৎপতি নির্মান রাজন।
চরাচর অংগাচর নহে ত্রিভুবন।।
তার এক কন্যা আছে নামে তরজিণী।
কপের উপমা দিতে ছিল সৌদানিনী।।
বির নাই একটাই সদা কিরে ঘনে।
তুলনার তুল্য নম ইনার কারণে।।
যোহশংবয়সী সেই ভূপাতির কন্যা।
মর্বাগুলে প্রান্থিত রূপে গুণে খন্যা।।
রাজকন্যা আছে দেই রজোর ভবনে।
ব্রিবে তাহারে ঘেই প্রভিজ্ঞা পূর্ণে।।
ব্রপ গুণ কুল শীল সর্বোপরি হবে।
হলে ধর্মপ্রায়ণ যোগ্য হবে তবে।।

व्यक्ति गीत विनारहत्र शक लहेश। छाटित मण निरमण गमन

r Page

পরার।

পত্র লিখি ভটাচার্য্য শুনান রাজায়। মনোনীত হৈল বলি দেন রাজা নায়॥ ্লান্তিকে ডাকিয়ে রাজা কছেন সহর। পাঠাইরা দেও দুভাদেশ দেশান্তর।। বিলয় ন। কর কোন মতে কদাচিত। ত্বরায় করহ সব পত্রিকা প্রেরিত॥ রাজ আছেন! পারে ভবে হইয়া তৎপর। ভীটেরে আনিতে দুতে কন মন্ত্রিবর !! দূতের মুখেতে বার্ছা পারে কা**লুভা**ট। বেগেতে অমনি ধায় নাহি দেখে বাট।। এক পার আর চায় কালুভাট নাম। উপনীত হন আদি রাগার মোকাম।। মহারাজ জন হোক্ ঘ**নস্ব**ন বলে। লগণের চক্র যেন পান 🚜 উলে।। ্একে ভাট তাহে পায় বি**বাহ**ছর গন্ধ। े **आञ्चकल मृदग्वे (यन इस्**त **यानम** ।। ভাটেরে ডাকিয়া মন্ত্রী কন সবিশেষ। পত্তিকা लहेश गीध साह गर्सारमा। দ্রাবিত কলিঙ্গ অঙ্গ বঞ্চ উত্তল। মগদ কিরীটা কোনা কাশ্মীর দিংছল।। অবত্তি প্রয়াগ কাশী কাঞ্চী ক্রনাট। বছর। বালামবালি নেহার ছিলাট।। हेळाटाच हिन्नुला है स्प्राटण इन्लावन। কানড় কামিথা কুণ্টা সিন্ধু এপাটন ॥ ভেলাপুর অরপুর গরা ক্লাবাড়। नवबील अवधील हम्बील तांह।।. হস্তিনা দারকা জম্ব জলেম্বর ভ্রম 🕾 🔊 হট্ট সন্দীপ কাম্পি বদরিকাশ্রম।। স্থরক কুরক নন্দি মিথিলা আগরা। মণিকর্ণ ক্ষীরপ্রাম কটক মগর।।। -যত যভাৱালা ছিল ধরণী উপরে ৷ 🦿 निश्रिषातः नवाकारंत आवाहन करत ॥ ভাটেরে বিশায় দেন নানা ধন দিয়া। অপর ব্রস্তান্ত যত যতনে কহিয়া।। বারস্বার কন মন্ত্রী শুন অতঃপর। 💛 🐃 বিলম্ব না কর কালু হও ততপর 🛭 🗀 রাজ**কর্মে যদি**শ্যাৎ দেরি কর তবে। শবশু আমার ঠাঞি দগুনীয় হবে।।। মব্রিকে কহেন কালু ভুলি গুই হাত। 🏄 एटन बटन जक रम्ब इटब्रटगट्ड भाउ ॥ মুখ বুক দৌড় খাপ সেই ভাটকর্মা। ধীরে চলে মৃদ্ধ বলে ভাটের অকর্ম।।। कांनु बार रबेरन छात्र छहे गछ नरङ् नविन महाटिए यात्र त्यन बार्ड ।

ं, छह्निनीत्र गरमत छेश्कर्ण ও मधी भरनत सम ।

প্রার ।

ताजात्र मन्मिनी ठाति नक्ठती मटन। নৃত্য গানে নিতা মগ্ন আপন ভবনে।। वालिक' ममझ वाला (यह जीदन दुस । সময় इहेटल छात्र जान। मन इस्।। अक पिम छत्रिक्षिगी वितरण विश्वा বিরদে আছেন মুখ বদনে ঢাকিয়া।। **एमकारल कमलिनी रखा अपनी** । विखिल दमसिया मदन इंदेक विखिल ॥ ্মুছ্সুরে বলে ভারে কুরিয়া যভন। विव्रम तुमरन बरम और कि कांत्र ॥ नीतर्य तिह्ल धनी मा कहिल छाया। क्रमिनी जारव स्टला बुधाई जिल्लामा ॥ তথা হতে আদি দ্ৰুত সঞ্চিণীরে কয়। अनियां तम कथा मत्य इहेना विश्वत्र ॥ . क्यनिनी बदन अदन। हस्त्रूथी नथी। স্বাকার মধ্যে প্রিয় তোমায় নির্ধি॥ ভূমি গেলে তরঙ্গিণী কহিবে বচন। 'बिकांनित कि कांत्र के डिटांडेन मन।। মবা হতে ডোমারে মেরড,ভাল বামে। মনের মানস ভুমি বুঝিবে আভাসে 🕦 कमलिमी कथा अनि मधि हस्त्रभूकी । व्हिल्ला रुपरे छाटन **आहरू व्या**मुधी ॥ তরঙ্গিণী সন্নিগানে প্রিয়সবিধ গিয়া। মিউভাবে জিজালেন সমূত্যে বসিয়া ।। कि कांत्ररण विश्वस्थी वियश तमन । ভোমার এ ভাব দেখি ছুঃখে দহে মন।: जादत (मर्थ यनष्ट्राय कथा नाहि कहा। ष्यदश्चर्य विश्वसूत्री भोना हरस बहु ॥ ্রাজ কন্যা বৈই জন্যা হারা বাহ্যভান। আপনা আপনি সবে কর অনুমান।। यूक्त भारत वक् यान कात थारक। टम यिष विश्वटम श्रद्ध विधित्र विश्रादक ॥ তারে ट्रित তার মন দরে ছু: अस्मित्ता। নিবারণ দুরে যেন_্আছডি আনলে।। मिथ मिर्म ब्राइकरमा ना करह कथन। अक द्वारन वरन किछ जारक छूटे जन।। সেইছলৈ উপনীতা সে নয়নভার।। जादत (मृद्ध मदनाष्ट्रः वंदर काळाधाता ॥ একবার ভার পানে ফিরায়ে নয়ন। নথেতে মৃত্তিকা মাত্র করিল খনন ।।

विश्वभूकी नशपूर्ध भूष नोहि उठाता। . मध्वती गञ्ज कांत्र फुटल मिल क्लाटन ।। প্রিয়ভাবে প্রিয়নখী ঘত কথা কয়। त्रमतको काशि भूमि उक महत्र तम्र ।। ख्थारिहर्ट महातित्रद्ध जामि किर्तु । क्यांमा मंभनी इंटन ं नितन दीरत ।। मिनित ध्वानः (र स्वारक्ष्यको । তারে করে স্থলোচন সকল ভগনি ব্ৰাক্তে না পাৰি কিছু কোন অভি থাং : প্রাণ সনী বল দেখি কি কবি উপয়ে।। (कामगर र न' कहिल कथ। विस्तिमिनी। भीना ज्ञातन चाटह एम इच्छे मानिनी !! क्षांनशः (म कथा भाष्ट्र अभाष्ट्यम्मी। छिननीया हम यथा पुत्रक्रमसभी ॥ उशानक अक्सार इस प्रम्म । धातात इहेन्। नाम त्हांत अरत्भाग।। হইরাছে ভ্রম বৃদ্ধি কানিয়া অন্তরে। ক্রিবারে নির্নাক্ষণ ধান নির্ভরে ।। ্যনোভঃথে ছংখী হরে আতে রসব্জী। ফুকারে কাঁদিতে নারে খেদান্বিতা অভি।। नश्रम निवाद होते अक्षरम मिलिशः। বহিরা পড়েছে ধারা হৃদর আসিয়া।।

শ্বয়ন্ত্রে বিষদরে যে প্রকার নেরি। মনে করে প্রোধরে সেইমত হেরি 🔠 ° ভরঞ্জিণী দীর্ষশাস হতেছে বস্পন। অনুমানি ভুমজিনী করিছে গর্জন ।। ভেকি গৰ আজরণ বুলায় শ্রন। যেন সৰ অন্তৰ বিভৃতি ভ্ৰব দ কোন ভাবে বলে ভাবে ভাবের ভাবিনী। लात (मर्दि होत नवी श्रवारखनानी । ज, दू.वे चादाप चीत्र अतिया अलाल : ্ৰয় পাৰ্থে ভাগেছানে তথানক সাপ !! পরিত আইলা দিরে ্সমন তডিত। খাশস্থায় ক্ষান হয় দিতে বিপরীত। চি**ন্তান্নিতে** আনি ফুল্ডে গড়িয়া অবসী। मित्रिशन अफि कम समार समारी । কোথা হতে ভুক্তিনী আদি আচ্ছিড: स्विभिनी क्रमदाराठ देशवा छेशनील ।। ব্যাকুলা হইয়ে সঁবে অতিশয় জীত। উপায় চিন্তিয়া কিছু না পান বিহিত। কি কবিৰে কি হউৰে গণিয়া ভূতাশ। লার দখী চলিলেন তরক্ষিণী পাস। निकारे निवास त्य एवं पुष्किनी नरा। নয়ন সলিল হেরি সলজ্জিত। হয়।।

রা**জ**কন্যা ধরাতলে আচে আচেতন। **ধরাধা**র কবি ভাঙে করিয়া চেতন চ क्यों जिन्दारिक किणादन उनेन । কি ফারণে মুক্তপথিত কং বিবরণ। ঘার দেখি স্থামুখী মনের অনুধ : कार्क स्टब्स के साझकी मस विद्यास । कान्त्र मान दिनमधी किल्लास्य वितय । ভরাধানী। বহের দর্জা নিজুইও নয় । इत्य भाषात् गाम कियमः अपनाः। व्ययपुत्र मिथा दक्त क्य करकारित। लिए डार्स कि डारिंग ह" वि महत्ती । मार्गिकरम् जाकारेल करिया एक्ट्रिंग श्रीत्र हार्थ गाइँ सः (क्षेत्र हीर्गाशाम -লে আন গেমন বাবে পরিভাগে আশা । প্ৰহল লা জোন মতে মনের বাসনা। कर्म कर्ना मशी छाति खरत्र निरंबेश्न। ।। क्यानिनी बरल दुवि एक शिक वृद्धि। हर्मा भी बाक अहरा ' त्य वृक्ति छ। है।। কিন্তু মনে সন্দ এক হতেছে আমার। বোধোর লক্ষণ লে ছে! সভয় আকার । वर्णत विवर्ग इस मान मक्का । नक्षमा अञ्चर्णी यम द्वारशेव सक्ष्म ।।

भ नकर्ष सूनकष कुलक्ष नारे। कि क्रांनि क्मिन द्वांश कित्य रेखियांहे ।। ं क्यालिमी वटल जानि बाड़ी ४८ई आहि হাত ধরে তাব যেই অস্ত্রা বাখানি । বাই পিছে কল এই তিন মাতি ১৮। তার মন্দর্গতি হলে রোগ কালে কর 🕆 ाक्षप्रभी वर्दा मधी प्राधान अर्थाणना ोकी। जुरि भारत किंद्र मध्येत संग्रेका ।। oty, are cety that make evenual जमान अभाज धारी रिज शिक्षान र म है। द्वारा दाना का रह मालि किएन देव नियासिका मा स्टब्स दिन भारत कि हरत ।। অগ্নি ওশা অংশেনির কড় লাচি রম : साहेद्रा एक्सिन गांजि १०५३ हम् ८ রোগ আাস নিজগণ করেটি বিলেধ। भाभामा देवदेण द्वाश हर्य मा वि एएए । **एक्ट्री नयुन्ति किर्ट मह्हें ।** রতিপতি শই এই অনুমান করি। এ রোগীর রোগ সেই এই সমে লয়; विष्ठांद्र कृतिका ८५२ व्या कि मा इस । শক্ষণ যার মঞে হতেছে বাভাব . কান্যাগতি হলে ভার অন্ত পাওয়া ভার 🗄

পুনঃ এক কথা আমি বলি সৰাকারে। श्रूरक्षाचारन नरम हन कोनरन छहारत। না থাকিবে চতুরুতা ভেঙ্গে থাবে ভুর। **ব্যিতে**ন্দ্রির গে**লে** তথা হয় দর্পচুর।। এই মত দথী যত প্রামশ্ করি। রাজস্কুতা রহে বথা জান প্রাভরি ।। তরঙ্গিণী প্রতি কন চন্দ্রমুখী সখী। भूष्णामान भैष्य किया चान्ध्या निह्नि ॥ এদেছে भगुत এক অতি মনোহর। পুচ্ছেতে ঢাকিতে পারে প্রচণ্ড শিশ্বর।। রকে ভকে বিহঙ্গন কত নৃত্য করে। मिश्रिटल मस्त्राप रफ श्रद 🗫 रहत ॥ ভরক্ষিণী শুনি কন সহচরী গণে। यादेख वामना देश्य कूसूम कानरम ॥ गकत्व धक्ज स्टब्र विस्टक धित्र । भाशन समिद्ध आमि युकुत्न त्रासिद्ध्य অন্তঃপুর অন্তভাগে যেই **পুর্ভাবন**। त्रश्चित्रह वांकेक्स्मा कर्त्रेस शम्ब ॥

ध्यम् उत्रक्षिति।

उत्रक्षिनीत श्रांक्शामगाँदन योज।

পয়ার (

কুন্তম কানন কিবা কব স্বিদেশ। सूत्र श्रुद्ध मर्था रयन ज्यमरत्त्व रमन ।। নানাজাতি রকে কল ফলেছে প্রচুর। জীফল কমলা নিচু গুৱাক থজাুর ।। শাৰ ভাগ আফলকী আড়ে জামৰুল। ওয়ুক পোলাপজায় পাটনায়ে কুল।। আনার আঙ্কুর কলা কামরাঙ্গা কুল। কাঁঠাল পেয়ারা শেক্ত নকট বকুল।। 🗀 পুষ্পা আছে কত স্থাতি কার **সাধ্য ক**য়। পারিষাত ফুটিয়াছে যেন ইন্সালয়।। मिष्ठित **मुझिका खता किश्लुक ह**न्नकः শেकामिक। उसन्छ। अँ हे कुम वक।। कामिनी कांश्वन क्रकटकनी नार्शधतः মালতী গোলাপ ঝাটি টবের উপর।। ভূমিচাপা পন্ধরাজ বাতি যুখী বেল। বিরহিণী পক্ষে বংক যেন শক্তিশেল। নরোবরে বিকশিত কত শক্ত দল। ेनानाविश्व (काकनम तक उँ६ भंग ॥

ৰ কর মধুপানে সদা মন্ত ভার क्षेत्रकर्भ त्राकर्श्मी (थेलिका दिव्हात्र ॥ ্রমর **গুঞ্জরে কভ হইয়া,আকুল।** ্মধুপানে চলচল যভ অলিকুল।। প্রশাবনে ঢাকিয়াছে রবির কিরণ। भएत गव मगीत्। अभिष्ठ भवन।। **ट्येंड्रा शिश्रांत मान नाहित्कत** दोग । কৈত শত প্র প্রফ তাহে করে বাস।। भाभिता भात्रता यह छएड सारक बारक। वोकशंक भाशि कर छात्न वरम छ। क পঞ্চন্তর পিকবরে করে কুছবনি। त्म स्नि स्थनित्न देवश धरत स्कान् धर्मी ? II देश मदन दम्हे श्रांत खंडाक जनम । (कोशीन कटमन (यात्री कति (यात्रचन ।। गन्म भन्म नम्बाक्षास्त्रहरू हमाहन रि চলাচলে ভরঞ্জিনী হলেন অচল।। धगरन जनक अब रहेना स्वन्ता। व्याभगादत्र ब्रुट्स् स्ती व्याभगात् रम्।। मॅंकिट्स बर्ट्स त्यन छिट्ड श्रृंडिंग । रूपा जारम छेरड़ बरम प्रथमरम जान ॥ পঞ্চত্তর একের্বারে হানে পঞ্চ শর। छ्राज्या रहित्र जना अपन काँकत ॥

श्रमण एउंगिती।

त्र भ**टब दक जि**रंदा मदब अस्त्रीरक अस्ति। कार्यानतम अन ख्रम नाकृता युवकी ॥ इत्टर्फ व्यक्षं मूथ (मर्थ काना बात । লোমাঞ্চিত কলেবর অধর শুকার।। আকৃত হইয়া পড়ে মদনআলায়। বিজয় না সহে রভি রভির আশায়।। স্থিৱা মে ভাব ভঙ্গী বুঝিয়া সকলে। রদন্দী প্রতি কিছু জিজাসে ফৌশলে। গমনে অসতা কেন হলে কি কারণে। करोक कुटिए धर्मा करहन हत्रद्र ॥ সথী কয় যে কণ্টক ফুটিয়া**ছে প্রা**য়। 🚈 কণাকে ৰুণীক ভিন্ন নিষ্কৃতীক দায়।। রমণীর মন পাওয়া অতি স্পক্তিন। क्षनाधमनिद्रम (यम मध् थाटक मीम !! গজাধ চতুরা ভাষ চাতুরি খেলিল। दन्छेक कृरिहेर वरम मश्रीत कहिल।। অতি বুদ্ধি সিদ্ধি নয় কয় নয়নতার।। ধরিতে হইবে গায় যদি রন ভারা।। মধ্যন্থ ব্যতীক দেখ কোন্ কর্মা হয়। মব্যবন্তী না থাকিলে শেষ রক্ষা নয়।। विवादरत भर्धा (मश् भश्य घरेक : পুরাণের হলে থাকে মধ্যক ধারক ।

माहि। दक्ता (यह शादन मोलास मधाय। উপদর্গ উপস্থিতে দে করে নিরস্ত।। বিবাদের মধ্যে ভঞ সালিশী প্রমাণ। পিরীতি एটमा एटल कुहेनी প্রধান।। মধাবর্তি হত্তে কর্মানা হয় আটক ' ষেন তেন প্রকারেতে করয়ে খেটিক।। নধ্যক ছাড়িয়া বেই কৈ**ৰ্থা ক**ৰ্য্যে চায়। তাহাঁর আগদ কিন্তু ঘটে পায় পায়।। তরফিনী কোন কথা নাছি সানে মুখে। পড়িয়া লব্জার হস্তে মরে ননোত্রকী ।। कमलिनी कन कनः एन्डमुची (हरसः भटना क्षे नृत्यनादका दका<mark>न</mark> (म स्थापन ?।। হে**নে হেনে** চন্দ্রমুখী কহিতেছে তারে। সালে হাঁচে বেনে ভিন্ন চিনিতে কে পারে ।। नाती इत्य नाती स्नां निका करे। नय । व्ययथार्थ किह् यहि उदिष्टे (डा. ज.स.) পুরুবের মন মারী অত্যে করি চুরি। ধ্বলায় বলান পরে নিছরির ছুরী।। জাপনার মন কভু নাহি দেন কারে। निर्देशिय श्रुक्य मदत त्रम्भीत उदत ॥ नाडींद्र व्यशाधा किছू नाहि मिथि व्यात। नारधात व्यक्तिका भागी अकि हम दकात ॥

दि दिमन जीत महा एकानि वार्णात ।

कि वहन महल गाती जल शिल्ता जात ।

क्रियक विम् जूला जाने इस जात ।

व्यागांत्र वहिंदा क्या ना इस शाहात ।

ज्यागांत्र वहिंदा क्या ना इस शाहात ।

ज्यागांत्र व्यापित भारत वाल करता ।

क्रियक या प्रिकित भारत वाल करता ।

क्रियक विम्हित महिंदा क्या ।

क्रियक व्या क्या कर जगांत्र हम ।

जकारवत क्या गत कन जगांत्र हम ।

जकारवत क्या गत कन जगांत्र हम ।

क्रिया शृतिया यथा ना कर वहन ।

जक्षा शृतिया यथा ना कर वहन ।

जक्षा शृतिया यथा ना कर वहन ।

-

उत्तरिक्तीय विकारकत छान निर्माण।

্লঘ্-ত্রিপদী।

ওখানেতে নরেশ্বর, ডাকি নিজ সন্তীবর,
আজ্ঞা নেম চইয়া সমত।
লিপি লয়ে গেছে দৃত, আনিতে তুপতিমুত,
সক্ষে সজী আসিবেক কত।।
লক লক্ষ রাজাগুণ, লয়ে সৈন্য অগণন,
র্থ রথী সারেধি অনেক।

সম্বরে নছর হও, জানান লোক লাভ, শিবিয়াদি বানাও কতেক।।

मत्था मरश सस यङ, शंकारव व्यश्चमङ,

কাঞ্চনে নির্শিত কর বর।

शास्त शास्त मणि पितत, त्यहे थारत या नाजित,

हीता पूर्वि अञ्चा श्रष्टत ।

यमि क्टिंग मिरिया मिरिया अफ़िर्य आभाव द्यार्थ, क्रिया कर्माण्ड सा स्टब्स मार्थक्रम ॥

কিছু হলে অক্ষর্টান, গবে হবে অক্ষ্যীন, পাঠাইৰ শমন ভবন।।

রাজ সাজা লান্তিমাত, তথ্নি ধাইল পাত্র, দ্রান্তিত হইল অধিকাং

পরিত্যাগ নিজাহার, দিয়া রাজ প্রনিবার, ভাবিশ্রাম ক্ষিকে ক্রিক।

অপূর্ব আবাদ দব, দেখিখারে অসম্বর, কভ করে গণিতে ভুক্তর :

কত মণি কত ছানে, আলো করে স্থানে স্থানে, লক্ষ্যা পান দেখিয়া ভাষর।।

দৃষ্টিমাত্র হয় জ্ঞান, দেবের ছুল্লভি স্থান, বিশ্বকর্মা কর্মে পিরাভব।

হাপরযুগেতে যেন, বাজহুয় যজে হেন, যেই ৰূপ নিৰ্দাদ্য সামৰ পাগার প্রস্তৃত করে, প্রবাদ মুকুতা গরে; চন্দ্রকান্ত সনিতে রচিত।

কেমন সভার ভাব. ুক্কর দেখি অন্মুভাব, সমভাব যেমন ভড়িত।।

মধ্যে মধ্যে জলাশয়, বান্তবিক জল নগ্ৰ, ক্ষাটকে করেন আচ্ছাদন।

ভূট হয় জন্মৰ, স্বোক্ৰ ঘেন লগ. শৈত ভিন্ন জাৰাগোগ্ৰহণ

পুরী করি স্থগান, মন্ত্রী অভি বিচ্চান, উপজিল নাম এক সন্ধা।

রাজার প্রক্তিজ্ঞা আছে, কিজানি যদাপি পাছে, বিবাহেতে ধনি হয় দক্ষ ।।

চৌদিপে বেক্টন করি, করিল জনন করি। লজ্বিবার সাধ্য নহে কার।

আচ্চাদিত করে শর, দেখিবার ভয়ঞ্চর, পরন প্রবিষ্ট করা ভার।।

মনে বিষ্ণুচক্র যেমত আকার।

চক্রী যদি হয়ে বক্র, স্বহস্তে গরেম চক্র, তথাচ অশস্ত যেতে ছার।।

क्रिकार अधि, न्या क्रामित्व तरह विजित

জীবন সংশার হর, প্রাণে মাত্র বেচে রয়, করে করে নিগুড়বন্ধন।।

-

एमगरंमगांखएत्रव बोक्टल्खिमारशय ज्योगग्रस

পরার ।

· 'डोडे शिया नक्षश्राटम लिल नगाहात : প্রত্যাত্র বাস্তাচক লাজার কুমার : স্থাপুতের বিজেপিনে সেই শিবিক্ষি। ক্ষাণ্ড উপনীত র'জার সভায়।। ত্তেদ উপর কেহ করে। **আ**র্টেম্প । হারবে। উল্লাখ চিত্ত প্র**সন্ন** বদ্ন ।। িশিরপেটি ফল্কা শি**রে**পৌতে **মর্লোচ**র। शीवात अन्ती करत संभित् **स्म**वता कर्पाटक कुछने शरण मिश्रम होते। অক্রণ কিলে প্রভা অতি চন্ত্রনার।। কাহার গোদাক জাটো কাবা পেউ বৈদন কোন জন ওরিধান রেসমি বসনী। যোড়া গ্র' বান্ধা পাগ কাহার মাধার! কাহার প্রীরাম পেঁদা ইফীকিন পায়।। লেটের চাদর কার শোভিতেছে পায়। किर्ण दिन क्लेबाई शक्ति जाई ॥

श्चमण उत्रक्षितीः।

কেহবা মাথার চুল করেছে পেঞ্ট 🔻 কাহার লপেটা পার কার পায়ে বুট।। কেন্বা এসেছে বেঁধে পঞ্চাতিয়াব। क्नकाह होट्टे भरत हहेश' स्थासात ॥ क्ष हक संग्रांशीमा जर्मा जरू सन। মাণিকের মালা গলে করিয়া ভ্ষণ।! এক চন্দ্র অস্ত্র তার এক সোলাহেব ॥ ंत्र (मकाक (एम (ल) ६५८ मा त्राहरून । কেবল বালের বস লক্ষাছাড় প্রায়া भवनांत्र मृखा (धन (भारत धन) शंका ।। कामा (श्रीष्ठा मन्य नाउ नदक मिला) नम । ্যায়ি রাজা তেরি মন্ত্রীমলেছে উভয়া नकटन दिशा शिक्षा कद्रान जानत। অবিহিন কবি লন গভার ভিতর । অপক্ষ (হার সভ। ইইয়া বিময়। मा क्ष देखानग धन कुना नग्र। পশ্চিমাংশে পূর্বিমুখে বনেছে ভালাগ উত্তর দিলেতে বলে যত রাজাগণ ।। পূর্বাদরে পাত্রমিত্ত সব কর্মচারী। শক্ষির অংশেতে প্রজা বৈদে সারি সারি ।। বসেছেন নুপ্ৰর অমাত্য সহিত। **হেনক।লে রাম**রুজ রাজপুরোহিত।।

90

ধর্মাশান্ত ভর্কশান্ত নাহি যার মূল। छार्क डार्क करत छर्क त्यमन वाडुल ॥ माश मटक मासि कथा मटक मित्राहर ॥ পুরোহিতে ডাক দিয়া কহেন রাজন।। আমার প্রতিজ্ঞা ধাছা জানহ আপনে। পরিচয় লছ স্ব রাজপুত্রগণে ।। পুরোহিত পরে পরে পরিচয় লন। भरता क सम्ब माहि भाग এक छन ।। कर्ल छर्। कुरल भीरल यमि (क्ट इत्र ! ্ধর্মেতে বর্জিত সেই স্বধার্মিক সয়।। भूटक बिटल अर्थानीटल यांग शास्त्रः गारः। पुर्वति नांदाटण त्यारे करें रिभवा माध ।(সর্কগুণে গুণাস্থিত সেলা সুক্রিন। অনায়াসে পাওয়া বায় অগুণে প্রবীণ ৷৷ পরিচয় লয়ে ক্রমে ভ্রমিয়া বেড়ান। গলখোঁটা যেই দিলে সে দিগে না যান।। পুরোহিত প্রতিক্রার ক্রতিসগাধান। यामात निकटि घाउता ना घाउता मनान। व्यक्ष्मारम गन्नार्थाल वृत्ति तम व्यामन । 🐣 वरन (कन अ निर्ध ना अस्त महामहा।। छन्छाही छनी जामि मृत्भट मनन 🖂 कांशांत निकटि नाहि हत्वा कांश्रमन ॥

পুরোহিত কন তুমি বড় রূপে গুণ।। অধিক সম্ভূমী বাপু খোনা কথা শুনে !! . এ কথায় (খানা রাজা মানহীন হয়। বিষ্ণুন। সূপ যেন গভেক্ অভিশয়।। তিখেক সে ভানে আর কভু নাহি রম। অবিলয়ে তথা হতে ক্রেন গমন। বাজগুল ঘাতাখাত করিতেছে যত ! चनक ना इस नुश घरनांनील गल।। ध अकोई (भारतारयार्श कर पिन इंड। ता जन्म। वसः कम उत्यानमा क्रा । श्रुवन गरकार्वे वाक' विकास (कमार्वे) : নকত বিজয়ী সেই বিজ্ঞান কেশ্বী।। थरन गरन कृत्व भौत्व भरकानांत्र रकार्थ . ভার কাতে নাহি আছে এ ভারতে শ্রেট 🗈 এক পুত্র ভূপতির নামেতে প্রমণ। উপমার যোগা যার না হয় মন্মথ।। গুণিক্সনে তারে গণে গুণে অতাগণা। শঠতা ৰঞ্জিত সত সবে বলে ধনা৷ कुक्रम कानदन यान मिदा अरगारन। (रुनकारण উপमीड छाउँ (गई वारन ॥ পত্র দিয়া ভট্টরাজ কহিল রুড়ান্ত। শুনিমা বাসনা তার পেথিতে নিভান্ত।।

ৰিরলে ভাটেরে লয়ে জিজানি তথন। उद्रक्तिनी जन अब कतिल व्यवन ॥ প্রতমাত্র তার মন উদাত্ত হইল। পিতা মাতা কাহাকেও নাহি জানাইল । প্রস্থালা গমনেতে হয়ে তথপর। ব্যক্তিয়া লইল এক শ্বেক করিবর। ভার পুতে আরোহণ হট্যা সতর : धरकना हिलामाङ किन्द्र गास्य । (श्राट्टां अ श्रेक्ट यहना हुन अस्त्र । ভগদত হন্তী মত গমনেতে গতি । ्लगलि (बाकन व्यक्त श्रम और श्राप्तः) शंभान भाषान्वरह जिंडूनम लैंडि ॥ চারি কোশ অত্তে পদ নিক্ষেপ যাহাব। मिया तारल कड अथ अभन 'डाइन्त ।। ্সই মত অমন্ত্রত সপ্তাহ চলিল। (क्रवन এक्टिन) मट्ट को टॉटर मा निल। গভেকুলমনে ভির নহে বস্পতি। केत्रावल शृष्टं त्यन यान भन्ने शिक्ति ॥ নিকাহ রাজার রাভ্যে উত্তরিরা পরে। 🕆 দেখে কত রাজপুত্র ফিরে যার ঘরে।। তাহা হেরি রাজপুত হইরা নৈরাশ। বিবাহ হয়েছে ভাবি ছাড়িল নিশাস ॥

মনোছুথে छु:श्री हृद्य विज्ञालियां क्या সুসার নাহিক চলো নৈরাশ আশয়।। স্বাক্ষণ হয় মন অতি উৎকণ্ঠিত। हिनकारम (मेडे (याँना प्यानि डेशनीर ॥ বিনয়েতে জিজাদেন প্রমধ তাগ্য। কোথা হতে জালমন লমন কোথায়।। কি নাম ভোমার ভূমি কাছার ভনর। বিজালয়া বিব্যালয় ক্লম্মাশ্য । থোনা কহে সহাশয় খন পরিচয়। मिलिश्द नत्थाञ्च दोङ्ग योदत क्रम ।। नर्दात दिश्वी जामि छ। हात बन्ता। মনোহর মাম ধরি বিখাতি ভ্রন।! গমন হইরাছিল নিকাহ আলয়। তর্ক্সিণী কন্যা তার বিবাহ সাস্য ।। যাতায়াত জন মাত্র ভাবে বোকা যায়। বিশাহ না হবে তার প্রতিক্তার দায়।। থোঁনুক্র অন্তরে আছে পূর্বকার রাগ। মনে ভাবে এর কাছে করিব বিরাগ ।। র্থোনা কন ভূপতির একান্ত মনন। আমারে আপন কন্যা করে সমর্প।।। কিন্তু কুলাচার্য্য মুখে শুনি ভার কুল : অবাক হয়েছি ভায়া ভাবিয়া আকুল া Petr

মনোরমা কন্যা জন্য হব জীতান্তর। धरे जना किरत यारे आभनात घत ।। व्यम् कर्यन क्वांचा त्रात छेश्राम्य। বৃদ্ধিশান হয়ে কর রমণীয় স্বেষ 📭 ক্রীরত্বং **ড্ডুলাদপি** সাধুর কথন। तमगौ পরেশ ভুলা অবিধি বর্জন।। यता लि भव्य वेष्ट्र यतः ऋरित वृध् । দে রক্ত এছণ বিধি বিধানেতে কয়।। পক্ষেতে উৎপত্তি পদা ব্যাপ্ত ত্রিভূবন। প্রশংসায় প্রশংসিত যতনের বন্ধা विभिन्न द्वारी गिप जिल्ला आधा अर्थ। कुल नील टारक नेशिश थिन तात अर्प। ত্তাকা রমণী রত্ন তাজা কভু নর। তা হলে কি যতুপতি কুজাপতি হয় 🔢 আইবড় আছে কন্যা পাইয়া সন্ধান। श्रमध्यत रहता यन मुक्तित आजान।। বিনয় বাক্যেতে ভাষ **করিয়া হিছা**য়। নজর বলিয়া সেই হস্তা দেন তায়।। कित्र विषाय कित्र मिया अवरमार्थ। অভয়া ভাবিয়া কদে নগরে প্রবেশে।।

Stol BEALL ST

অথ প্রা**মধ্যের নির্দ্ধাহ** নগরে প্রধ্যেশ ও গৌলাপীর বাটীতে অবস্থান।

পরার ।

क्षीनित्र अमन कति एस्टब्स कोल्क । मकदश मकाम सूची कांत्र मारे रूच ।। मया भन्ध नवाकात डेक्टम छड़ी छि। না করে গ্রহণ দল মা পেলে অভিথি।। কার প্রক্রিকদাচিত কাব না'ছ দেব। অতান্ত শন্তুটা হেনে নির্বাহের দেশ।। मकिल व्यक्तिशा मरम वसा वसा मारम । বাসা করি রন খিলিওয়ালী দোকানে।। ণে রমণী রাজপুতে করিয়া যত। প্রয়োজন মত দিবা করে আহমাজন। গোলাণী ভাহাৰ নাম প্রমাস্থনরী : নিৰ্বাশম ৰূপ হেৱে লজ্জিতা অপ্সরী।। সংখ্যে তাহার ৰূপ কহিব কিঞ্চিত। **ভাবণে তাপিত মন হবে** উল্লাসিত।।

অংশ এগালাপীর রূপ বর্ণন। প্রার।

বাঁকা সিভি দম্ব পাঁতি অভি চমৎকার। भृद्रभूगी (इति भूगी नित्म व्यापनात ॥ নয়ন খঞ্জন তার সভত চঞ্চল। কিঞ্ছিৎ তাহার নিমে দিয়াছে কজ্জ।। নীলজলে নিলাম্বজ বেমত প্রকার। **(मिथरिक सम्मा नाहि छेलाम। योगेत !।** বিষাক্ত শাণিত শর কটাকে তাহার। करें। क करें। क इरल तका भाउस जात ।! उद्धल भागल वर्ग तमिक खवीन। নিতম অভ্যন্ত ভারি মধা বান স্থীণ।। সাতনর চপ্রহার শোভিত্তে তাহায়। ডাইমনকাটা মল চারিগাছ পার।। গুকতর পরোধর শ্রীরল আহার। ঈষৎ হয়েছে নম্র একটা তাহার।। কাঁচলি ক্ৰিয়া তাকে দেখিতে ছক্ষ্যা त्य (मध्येटह (मर्डे जिस व्यट्ग) व्यटगां हत ॥ বর্ম অধিক নয় কহি সারোদ্ধার। তবে যে কাঁচলি কলে দেশের ব্যভার।। এমনি নিস্থ**রে** শর অসিদ্ধ কথন। ভাবণে ভাবণ মাত্র জুড়ায় ভাবণ।। 🛷 🗸

त्शामानी त्शामान सूरश त्शामात्मत तेका। नितानम नाहि काटन नमाहे जाननः॥ সহাস্য বদনে কত কথা কর ছলে (धन मने करफ नग़ करन वा (कोमात । পথেতে পুরুষ গেলে মুগ পানে চায়। হাত তুলে গা ভাজেন কথায় কথায় 🖰 प्माकान (थाकाइ है।है कांत्रश्रांट्स कन। ्ष हे करन इक्ष रम पहांचन करा।। साथ। श्रीन करक (भन मिष्ट्रिय ष्ट्रीय । গ্**ভুরে চা**ভুরি করে করিয়া চাভুরি।। यमि अदन काट्य वटन कर्षा क्य ८६८म । অবস হটৱা অঙ্গ বস্ত্র যায় ভেষে !! गठेजात्र नन्भर्गका क्षमरमा गहिल। দৰ্ক কৰ্মে নিপুণতা সততা বডিৰ্ছত।। বাটার ভিভরে ভার তিনটি কুঠারি। প্রসংগ থাকিতে দেন একটি তাহারি॥ তার ওক্তায়িকনা। নাম স্বর্ণলভা। বার বর্ষ বয়;ক্রম ৰূপে স্থর্ণলত।।। কুরঞ্গ নয়নী অতি বালিক। সে নয়। नेबर कमन कलि कन्द्रश छेन्य ॥ ध्यम् निकटि (नहे नर्यनाई शास्त्र। व्यविश्वक यथन या नरवान छाहारक ।।

্ৰৈই মত দিন কত অনৰ্থক যায়। রাজপুত্রে চিম্তে চিত্তে কি করি উপায়।। এক দিন ভোজনাত্তে নিদ্রা ভঙ্গ পরে। স্বৰ্ণতা বদে আছে সম্বাধ্য ঘরে ব প্রমথ তাহাকে কন শুন স্বর্ণতা। আইন আমার কাছে আছে কিছু কথা।। স্বর্ণলত। আসি তার নিকটে বসেন। রাজপুত্র পুর্বে তার প্রশংসা করেন।। পরে কন স্বর্ণভা যথার্থ জিচ্চাসি। গোলাপী তোমার হন কি প্রকার•মাসী।। পিত। মাতা কোন স্থানে তাদের কি নাম। বাসস্থান এই কিন্তা স্থানাউরে বাম।। স্থালতা কহিতেছে কেন মহাশয়। আমাদের পরিচয়ে কিব। কলোদয়।। তবে यमि जिल्हानित्न (मेडे পরিচয়। এ পক্ষের পক্ষে হন বিধাতা নিদয়।। বাল্যকালে পিতা মাতা মরিয়া সিহাতে। ছিলাম তুইটি ভগ্নী মাদীমার কাছে।। कनिका हहेन्त्र व्यामि (बार्क) कमिनी। রাজবাটা মধ্যে রন সর্বাক্ষণ তিনি।। वाकात कुमानी धिनि माटम छत्रकिशी। তাহার নিকটে আছেইইয়া সঙ্গিনী।।

ভালবাদে তারে বড় সঙ্গিণীর মধ্যে: षंष्रुष्ठ ना इन स्मारह कलू विल शास्त्र।। শুনিয়া প্রমথ অগি নীর্ব হইল। আকাশ ভাবিয়া হস্তে আকাশ পাইল।। মনে মনে রাজপুত্র ভাবেন ভাবনা। শাধিলে অবশ্য সিদ্ধ হইবে সাধনা।। ভাবিয়া চিষ্কিয়া কিছু না পাই সন্ধান। ছুর্গা বিনা এ ছুর্গমে কে করিবে তাগ।। ভাষিতে ভাষিতে মনে উপজিল হাসি। यिशास्त्र (भाषास्त्र कर्षा स्मर्ने शास्त्र मामी। चकार्य। नाथमं छन। नस रूउस व्यस । व्यश्कादत कोन कर्मा गण्यन न। इस ॥ তথনি রাজার পুত্র করিল বিচার। মানী বলা গোলাপীরে কর্মবা আমার।। भागी वरम এरत चार्त कति मरम्यम । আর বা কি আছে পরে কপালে লিখন। অতঃপ্তর মাদী মাদী বলি যত ডাকে। শুনেও না শুনে বেটী কেবা ডাকে কাকে। কপটে কপট করি গোলাপী তথন। क कारत जाकिए एम बादक बना मन। রাজপুত্র ভাবে সাসী কত জানে ঠাট। व्यवन कृहद्ध भ एके मिरस्टक कुशाउँ।।

माम धति मानी विन ल्यादेश कि वटन। किछ गांगी निश्र्ताणि धरत शास्त्र बरल ॥ अनरता रंशालां भी मामी ताक श्रुक करा। ज़ानाशी कहिएह कथा अन्छ त्यां भने नहा।। এমনি শঠতা সভী যোগ খটেম মন। क्या भारत क्या थिया थएन वहन ।। প্রমথের মুখে আর নাহি ধরে হাসি। শোলাপী ক্লহিছে ভোর মাণীর হৈ নানা ।। ভাবিয়া চিন্তিয়া পরে ফান্ত হয়ে কাশা। কহিতেছে অকারণ দেওয়া গেছেবাদ। ।। করাস্থুলী নাকে দিয়া অ**ধিকে**প করে। বিধি কি নিদয় ছলি অভীগিনী পরে॥ ब्रेम्डर इंद किया नीला महिमा ज्ञात । গ্রহপীড়া হলে কার নাহিক নিস্তার।। গ্রহপীড়া জন্য রাম গেলেন অর্থ্য। शर्वरमतं भूख दिन्य छेटक दिन भूरमा ॥ शंखकित्छ कर कर्षे भान नार्रायन वां पति प्रथठ शहकणी जनार्मन ।। अर कमा नक दाका रम यनवामी। जरमात्र शाकुक कार मरहण नवानिया কেমন আমার এচ হইল উদয়। अर कामि कक्टनंत्र निधि स्टन्न नन्न।।

वंजुनीत गाँचा माछ क्वा एडएड निल । ি পিঞ্চৱৈতে পক্ষি ছিল কি ৰূপে উড়িল।। প্লাইয়া গেল কোথা ছাতের শীকার। কার জন্ম আয়োজন পেট ভরে কার। রক্ষাণত শনি তাহে প্রথম মঞ্জ। প্রা**ত্যক্ষ ফলিল পু**ঝি সেই ফলাফল ।। বাসাদিয়ে আশা করে এত দিন থাকি। त्म खाकि वनिया माभी पिल (मर्च गांकि !! ছिছি कि नारमत कथा किए भाग हानि। कि करत (कारलटक स्मित स्म स्म वरक मानी।। কিন্তু বেটা মাদী বলে পেলে অব্যাহতি। ভথাচ না কানি পোড়া সনের কি গভি । একবার যাই দেখি বলিপোর কাছে। কিষেতে হলেম মানী পরিচয় পাছে।। উপনীত হন যথা রাজার কুমার। রা**জপুত্র কন মানী করি নমকার'।।** বাসা করে ব্যক্তি আমি আঞ্চমে ভোমার। टर्ड वाडी नाहि वड मात्री दंशा व्यामात्र।। গোলাপী নিতান্ত মনে হয়ে নিরাশয়। प्रथम बनिद्रभी जाटन स्मरह कथा करा। अन अद्भ याष्ट्रमनि क्य जात कड। यामि त्लादा कावि त्वन त्लितिकत्ल मछ।।

[58]

জেনেছি তোমারে আমি ওরে বাছাধন। কলির ছেলেন মত নহরে তেমন।। তোর মুগ দেখি কুধা ভূঞা নাহি থাকে। যে স্থান নির্থি সাঁথি সেই স্থার্থ থাকে। যত দিন হেখা ববে এট খানে ববে। যদি কিছু মনে থাকে তাপ পূর্ণ হবে।। ব্রসিকা রমণী ধনী কভ জানে দাঁও। মাদী হয়ে ৰখা ফল তথাচ পেঁচাও ॥ গোলাপী বলেন বাছা আছ করি বাম।। বাসস্থল কোন স্থানে কি কারণে আসা। ক্রিচেতে হলেম সাসী ওরে যাত্মণি। প্রিচয় দেও মতা কেবট আপুনি।। প্রমথ কছেন মাসী দিব পরিচয়। যে কার্য্যে এ রাজ্যে আদা তোমা ছাড়া কহিলো গোলাপী মানী শুন পরিচয়। অপ্রকাশ্য রেখ দেখ প্রকাশ না হয়।। বিক্রম কেশ্রী বাজা পিড়া মহংগ্রা প্রমধ আমার নাম তাঁহার তনয়।। পশ্চিম স্থারস রাজ্য রাজ্য তাঁহার । চরাচর অনোচর নাহিক কাহার।। এই খানে তরঙ্গিণী আশা মাত্র আসা कृमि यपि भूर्व कर्त्र का आमात आणा।।

প্রমথ দিলেন যদি নিজ পরিচয়। रशानां भी स्थानिश नव स्वतं इद्य तर ।। मीर्घेश्वाम हाङ् बटन मिहतिल अअ। আর নী করিও বাপু ও কথা প্রসঙ্গ ।। म आंभोरे आंगा दुधी इटव ना स्पृतात । এ কথায় কথা কয় ছুট। মাতা কার ।। মুগ্রীব একটা আছে কোটালের ছেলে । ,বিনা দোৰে যাতা কাটে ছুভানত। পেলে ।। প্রহরী পাইক পথে ফিরে ফাঁকে গাঁকে। श्रिमीत्र श्रेष्ठभार दश यकि है। तक ॥ এ বড় কঠিন ঠাই শুন বাছারন। निदम्दर्भ विशादक क्वन होतादन जीवन । অসাধ্য সাধন বাপু তোর এই আশা। বাবের ঘবে কি কভু ঘোরো ককে বাদা।। রাজ্বংশে উৎপত্তি রাজার তন্য। রাজ সলিধানে গিয়া গৈছ পরিচয়।। ধনবান কুললীল ভোমা হতে ছাতি। ্ৰুপার নাই ভূমওলে যতেক ভূপতি।। मुख्ये स्टबन बाका (छामा घटन (शहर । যোগ্যপাত্র বট তুমি তরঙ্গিণী মেয়ে।। ্ অধিনীর উপাসনা অকারণ হয়। ছাগলের সাধ্য বাছা যব সাড়া নয় ।।

তোমার দাসীর যোগ্য নছে কদাচন। चकारां माधिए भागी रह वाश्यम।। অন্তরে ভাবেন বাসা দেওয়া হলে। দায়। কি করি কি হবে বাবা ভেবে প্রাণখায় । কখন কুলোক আসি দিবে কুস্প্রণা। কাটার উপরে লুন বিষম স্প্রণা।। এহার কারণে শেষে নাহি রবে মান। এখনি উটিয়া গেলে পাই পরিভাগ।। অভিপ্রায় বুঝি তার রাজার নদন। বিভর্ক করিয়া মনে স্থির **কৈল মুন**।। পাইয়াছে ভয় মাদী নাহিক সংশয়। নৈর্ভয় না হলে কথা কেরা কারে কয় 🛭 অত্যেতে ইহারে বাধা করা বিধি হয়। বান্তবিক হান। করা অর্থ বিনা নয়।। ইহা হতে হইবেক কার্যার উদ্ধার। খামার কর্ত্তবা এর করা উপকার।। প্রমাবিহনে দেখ কেহ নহৈ বস। পয়স। না দিলে ঘরে বনিতা অবস।। প্রসা পাইলে নারী কুলে নাহি রয়। পয়স। জন্যেতে কুলীনের কুল কর।। পরসা কারণে লোক মরে চিন্তাছরে। পর্মা আশরে নীচ উপাদ্না করে।।

পয়সা থাকিলে থাকে শত গুণ জোর। প্রেমা বিহনে যত গুলিখোর চোর।। প্রসা যে হতে নাই বিধি ভারে বাম। পয়সী বিহীন হলে ভেবা গঙ্গারাম !! शत्रमा ने निटल खटत वाश्रा करा नात्र। অৰ্থ ভিন্ন কৈৰ্ম নিৰ্কাহ কুেখান্ন ।৷ এত ভাবি রাজপুত্র গিনি দেন দশ। গিনি **পেয়ে** গোলানীর হতে হলে⊦বশ[া] আশে পাশে চায় আর আঁচলেতে বাঁধে। এक **इ.क शाम भामी आ**ज हटक काँटम ।। नदन व्याभि मदहक्छिछ इधेव धार्थान । নিশ্চিন্ততে থাক ভূমি ওরে বাছমণি॥ চেন্টার অসাধ্য কিবা আছে বাপধন। চেন্টায় সাধিতে পারি অসাধ্য সাধন।। আপনাকে পর করি মিথ্যা কথা কয়ে। শাপ হয়ে কামড়াই ঝাড়ি রোঝা হয়ে।। ऋरवारथ निर्द्याथ कृति कुमञ्जूना मिर्छ। আৰুবে বানাই ভেড়া চকু পালটিয়ে।। অভির হয়ে। ধন ভিরে কর মন। স্থির জলে বিজে শীলে এইত লক্ষণ।। এই মত সত্য মিখ্যা যতেক কহিল। রাজপুত্র বোক। নয় সকলি বুঝিল।।

গোলাপী ভাবেদ এর কি করি উপার।
মুখ তুলে চাবেন কি বিধাতা আমায়।।
এ ঘটনা যদিন্তাৎ হয় সজ্ঞাটন।
তবেত লইব আমি এক ঘড়া ধন।।
চাহিতে অপেকা নাই টাকা দিলে শত।
না জানি ইহার কাছে আছে আর কত।।
হানিয়া কহেন বাছা এইকলৈ আনি।
রাজপুত্র কন ঘেন মুনে থাকে মানী।।
চলিলেন মায়া মানী আপনার বাসে।
কপট বনিপো মুখে মৃতু মৃতু হানে,।।

অথ গোলাপীর নিকট স্বর্গল্ভার গমন !

পরার

গোলাপী দোকানে আসি কন স্বৰ্ণত।।
এখানে আসিয়ে নাতা শুন এক কথা।।
স্বৰ্ণত। বলে নাসি ডাক কি কারণ।
গোলাপী বলেন যাও রাজার ভবন।।
আন নিয়া কমলিনী করি মনিভার।
অস্থ হয়েছে যাত্ব শরীরে আমার।।
হির নয় হয় মন কিনের কারণ।
কাহার কি দ্রবা যেন করেছি হরণ।।

আর কোন কথা নাহি কহিও তাহার। কেবল বলিবে মাসি ভেকেছে ভোনার।। স্থালতা চলিলেন রাজার ভবনে। कमनिनी चार्ट्स यथा जत्रिक्षिनी अपन ॥ তারে ংকরে কমলিনী প্রিয়ভাযে কয়। আছ ভাল পাসি ভাল ভাল সমুবয়।! সবে ভাল স্বৰ্ণমুভা কহেন ভাহায়। যাইতে বলেছে দিনি নামি-মা তোমায় ।। অবিলয়ে চল তাঁর হয়েছে অস্থা विलक्ष क्रिटल घटन क्रिट्टन इथ ।। 🦈 ক্মলিনী বলে আসি হইয়া বিদায়। वाक्कना। ना विनिद्यं साउन्ना १८व नाम ।। অভুমতি হলে ভার যাওয়া হবে তবে। মতুবা তোমারে স্থা ফিরে যেতে হবে।। কত কক্টে কমলিনী ভরঞ্গিনী পানে। বিদার হইয়া যান গোলাপীর বাদে॥ **थियमधी (महे मधी मक्ट्ल**व हाएय । বিদায় হইরা রণ এক দুফে চেয়ে ।।

্রেন্সিন সহত কমলিনীর কথোপকথন। পদ্মার।

উপনীতা क्यालिनी গোলাপী निक्छे। গোলাপী পড়েছে বড় বিষম সক্ষটে ॥ मृতिকর্মা অদা ক্ষম হরেছে বরণ শীতার হরণে হর মারীচ বেষ্ণ্র জীরাম বধেন গেলে না গেলে রাবণ। हरे १८क अंत अस्मार्यम ममन ।। निर्क्षनीत धन ज्यामा व्यमच्यूर्ग हरता। তাহার এমন মন প্রবেশে অনলে॥ ॰ প্রমথের কাছে আছে ধন অভিলাধ। রাজগৃহে অবিশ্বাদী হলে মবলোশ।। मदन कादन के इहमा निक्के मद्रशन তথাচ কেমন মন নছে নিবারণ।। গোলাপীর সেই কথা সভত কতরে। कमलिनी नटत किछू कहिएइ अखुदत ॥ আসিরাছে রাজপুত্র পরম স্থন্র। जुलनाम कुला नत शूर्ग नगभत ॥ गरक यात्र किर नारे अपि अक्यादा। বাসা করে সাছে বাছা আমার ঐ ঘরে 🎉 তরক্রিণী পাইবার আশার আসায়। কিবল রয়েছে বেঁচে তোর ভর্নায়।।

जात्रात निक्षे नव श्रमि विदत्त । তার সঙ্গে দেখা করে বড় আকিঞ্চন।। তুরি যদি পার কিছু করিতে উপায়। তাহা হলে হয় যাত্র অধিক উপায়।। ভোষায় আনার কথা করিয়া স্থচন। অত্রেতে শত্কে মুদ্র। করেছি গ্রহণ।। করিলে বাসনা পূর্ণ মনোনীত লব। षमण्युर्व स्टब कर्य नियम्स्य स्टिन् অমুমান করি বাছা গুরু একাদশে। অথবা ক্তায় শনি শশিস্ত দৰে।। कमलिनी वटल मानी कर्तिशाटक मन ! लक्कांत्र याहेका लटव ट्याना भारत्यन ॥ সাগর সিঞ্চন করে মার্ণিক আশায়। দৈরিক্ষ্যী হইনা বেটী রাণী হতে চার 🖁 বামন হইয়া চাঁদ ধরিবারে যায়। অতা পশ্চাৎ ভাবেনাকো এত বড় দায়।। পা**ধাহীন পা**খী চায় উড়িবার তরে। काननित्म स्टार मानी वक्का जान करता। किष्ट्रमाज এक जिन कहा नाहि भारा। क् करत युमखनाय क्याहरू जाता। गटर्गित कुलाय रुख मिट्ड कटत मन्। ज्यादनमा दर्व देयदक इटव नामन करन ॥ [se]

পরের দেখিলে ধন নিতে ইচ্ছা করে। **ভাবেনাকো পরকাল कि इं≷ट**व পরে।। कुर्वृक्षि पंष्टिल लाक खरेन छत्न मर्नि। কে তারে রাখিবে যেই ইচ্ছামুত্র করে।। त्शामाणी करहन आगि वज्हे अकगा। ভূমি বাছা ইইয়াই বেঁয়াছিশকর্ম।।। दौंग ८एटम कंकि नड़ 🕉 बना कहा। व्यत्ता हू की नाकार्यकी त्यानाकथा इस ॥ क्मलिनी देटल गांभी देन बन दक्मन। গোলাপী বলিছে আর আছে ফি তেমন।। मानी वटेन ভाইবলৈ পায় পারাবার। नजूर। जामार हत्य शाईक निखाइ ॥ তারে আরি যত রত রেতে। তত নয়। टा इतन कि किছू होति। या मिस इत ।। ভাহারে দেখিলৈ পরে প্রভিত্তত্ত কত। ছাড়িয়া আপ্ৰ প্ৰতি হয় পদ্মিত।। কানের কার্মিনী যদি দৃষ্টিপাত করে। छाछि कामें दाएए काम महत्र काम बहुत ।। যদ্যপি ভোষারে আমি দেখাই ভাষায়। क्लाभारत किद्वारत स्त्रीना श्रेरनक मात्र ॥ क्रम नित्री क्रम मानी कान अदक्वाद्य। टमर्थिय देक्सम दम्हे त्रांशांत कुमादत्।।

এই विन भवादकराउ स्मिना छार्थादक। মাজির নিকট আসি আত্তে আত্তে বলে। **्कमरेन चरत्**वः हाम षाहेन कुंडरन ।। 🗀 कथन गानव नम् बाङाव नम्मन। (मवका शक्षक्त (यन एक नग्न मन ।) नश्रम ञूलिल अहे (हतिशा नश्रम) আশার কাননে এইছ ছারালেম সমা। ग्रद्धान्त (काशानदल गतन निधन। পুনরায় কেবা তায় করিল স্বন্ধন ॥ 🦠 ভরঙ্গিণী কাছে যেতে বলন। আমাদ। मानी इरम भागी आमि मिविव उँशास ।। পারে ধরি মাসী শীঘ্র চল একবার। উহার নিকটে যেতে বাদনা আমার 🛭 शूटकरण रामन मन हिन अरना मानी। कि अञ्चरश किन यन इर्टेश छेनात्री।। लानानी विनष्ट विषे किनली अञ्चर আলোচাল,দেখে বুঝি ভেড়া চুকে মুখ।। চল ভবে যেতে ছৈল তোমার কারণ। नजुता भागात देशान स्थित प्रदेशायन।।

ক্ষালিনী সমিতারি প্রমধ্যে নিকট গোলাপীর গমন।

প্রার।
কমলিনী সমিত্যারে গোলাপী তথন।
উপনীতা হৈলা যথা রাজার নন্দন।।
রাজপুত্রে গোলাপী কহেন হেনে হেনে।
যার কথা শুনিয়াছ পশ্চতে দে এনে।।
সকল হলতে বল নব এই জানে।
আমি বাছা কেনা বেচা করিগে দোকানে।।
বিদায় হইরা যায় গোলাপী তথন।
রাজপুত্রে কমলিনী কথোপকথন।।

প্রমণের সহিত কগলিনী**র কর্মেপি**কথন।

ाजात ।

প্রমথ কহেন প্রিয়সখীর গোচর।
তর্জিণী কথা কিছু করাও গোচর।।
ক্রুডমাত্র ভার নাম সংকশ্পিত হয়ে।
হইরাছি স্বতাগী যোগধর্ম লয়ে।।
অভ্যক্ষা করিয়া ভারা এ রাজ্যে এসেছি।
বিশ্বাধ্য নির্দ্ধান্য বিশ্বে অবৈষ্ঠা হয়েছি।।

আর কি ত্যজিব বল বাকি কিবা আছে ৷ সবে মাত্র বাকি প্রাণ তাও তার কাছে।। आपहोन भूना ८५८६ थाका अकारण। কেবল আশার মতি রয়েছে জীবন। আশাতর বৃক্ষমূলে করিয়াছি বাদা। कनित्व इत्कद्ध कंन भूर्व इत्व व्याभा।।। নিশি দিন ভেবে ভেবে স্পন্দন রহিত। এমত নাহিক কেচ্ করে **বেলন হি**ত।। वर्धित्मुना मद्द्रात्त कलभूना भीन । (यमननिर्धन कर तुक्कल होन ।। তক্রপ আছি যে আমি ভাছার কারণ। শরশধ্যাগত যেন ভীম্মের শয়ন।। এত দিন আছে প্রাণ এই গে কারণ। কেবল পতন বাকি হতে উজায়।।। সেই এই উত্রায়ণ নাহিক বিশেষ। महिन पाद्धारें नहह उनु व्यवस्था তোমার আশব্যে প্রাণ রয়েছে আমার। असारे ऋगात किया हरेत मरशात ॥ कृमि बात थियूनथी (नवन क्यन। ৰূপ গুণ ভার কিছু করাও অবণ।। कमलिनी बटल अने शालात क्यात । ৰণ ভণ ৰলা তার অসাধ্য আমার।

কিঞ্চিত কহিব ৰূপ গুণ যাহা জানি। গুণের নাহিক দীমা উপমায় বাণী।। ৰূপের বর্ণনা তার বর্ণিবারে নারি। গুবে যে বর্ণিব যত পারি বা না পারি।।

তই জিলীর রূপর্ণর।

গরাব।

कुछल कुछिन छात्र माहि यात्र ४त। । অভিপ্রায় করা যায় ধরা পায়ধরানা বিলাইয়া বেণী যদি তাহাতে বানায়। ভূতদে ভূজক খেন ভয়েতি পলায়।। द्ति ठाई पूर्वक्षी दन प्रसूगन। ७। रमञ्जा अवेशव कार्य समूत्रका। 🖰 नग्रन गुराम खाँदर करोगक मेकान। কটাকে বধিতে পারে **ক্রিলে স্ক্রা**ন।। হিলোল ভাষায় কত নাছি ইয় লেখা। षाहरत छाहात काटल स्वरूगात रतथा।। কটাকের কোণা ভার স্বাভি বিষময়। विभवाकत्वी हरन क्लमा मा रहा।। আর কার করা ভার তার প্রতিকার। তাহার ঔষধি মাত্র নিকটে তাহার ।

ওষ্ঠাধর পক্ষবিদ্ধ দেখি লক্ষা পায়। নিশ্বচঞ্ জিনি মাদাগক্ষমতি ভায়।। হেরিছা তাহার মুখ অধোনুখে বসি। অভিমানে হইলেন রাছগ্রন্ত শশী॥। क्रमञ्ज मनिदन ভাবে विकृष्ठ कमल। **গুরুতর পরোধর শোভিছে:যু**গল।। 🕮 ফল দাড়িয় দর্শ থর্ব তার। করে। पञ्चारव आह्य वरम काँ हिनी किएत ॥ किছू मांव थूँ ए हाई श्रमंश्मा नकति। जैंक ने शिखन पिर्देश हम्भरकत कलि॥ পদ্মের মৃণাল যেন হেন ভুজনঃ। নিক্ষলন্ধ নিশাপতি নখেতে উদয় !! কটিদেশ ফীণ অভি জিনি মূগপতি। **নাভিমুক ছলে** আছে কানের বসতি।। ত্রিবলী বিরাজে সাজে তার কৃটিদেশে। নাভিকূপ যেতে₋কাম দে পথে প্রবেশে ।। নিতম অত্যন্ত ভারি যেন বস্তুখারা। যত্ন করে বিরিলেও নাহি যায় ধরা । अपन कथन यपि (मरथ मख हाडी। তথনি ত্যজিবে প্রাণ হয়ে আমহাতী।। করিকর জিনি যেন তাহার জগন। जुननाम जुना मारे गर्क दलका ।।

অভবেতে নিরম্ব কত ভাবে ভয়। लिभिथोनि छत्रिक्षी स्टब्स म्बद्धा नम्।। মরে ছুঁড়ি বির্যুক্ত স্পন্ত নাছি কর। হিততেটা পেতে পাছে বিপরীত হয়।। यस्टान প्रतिका साय याच मावभारन । क्तमा भुक्रम भारत मारी छोल खारन।। প্ৰকল্প উপায়ৰ বাবেখ ৰাগিলেশ : পাৰেশ : अज्ञन विष्ट्री (युन श्रीन कानोद्याय ।) ि भिन्नां जिसम्बी यान इतालंते। (एके छारम दाकसूकी मह मक्डरी ।। केशमील भएर कथा हुईका विकास । डिमामिनी पर्राक्रिनी (कवि कतन क्य । कमिनी गहित कम अस् चलकर । कि अस्य इनिष्कता क्रमान गाम ।। স্থী সং থেন সর বিশাদিত মন। अइ.८३ भा**कित्य कथा बुदबां दक्**ष एवं ।। ভবক্ষিণা প্ৰভি শ্থী কম্লিনী ক্ষঃ कि छु:रचेट्ड फु:जी यान फु:रचेत छेमग्र। বিশ্বস্থী অভি দুখী মৃত মৃত্ত কন। যে দ্বথেতে তুখী আমি কে করে এবন निमि (गर्य निजाव में देनदर्श अशन ! তদব্ধি চিন্ত অভি আছে উচাটন।।

्राट्सत निकटि नथी वटल वला यात्र। প্রতিবাদী হয় লক্ষ্য কি করি উপায় ।। ज्ञानिन कुन कुन हाजात निक्नी । তোমার নিবন্টে থাকি যতেক দলিনী।। তৰ ছবে ফুখা হই স্থাৰে ভাল থাকি। শ্বপ্রকাশ কথা ২লে যদ্ধ করে চাকি 🖖 अञ्चलार्न मधीयर्ग द्वांबहा स्म कांद । अव्योभ करत जो गणि 'stra fee 'sta ! क्यांज्यो गयी जात थिए उमा दश ा एक कराब्राइक सर्वे ब्रांक कराया कराया লজার অদিক প্রেয় বামরণতে, নং । । एक वर्गा हर एक भार वर्गा वर्गा আদর করিয়া নিজে নয়নেতে স্থান : এখন ভাষাতে বস করিতে প্রস্থান।। ति वीकिटन जोत मत्य भन्ने वह जता। একাংযের কাঘি নয় প্রক্রে মহাশ্য 🖰 নিদয় হইয়া তারে করহ বজান। उत्दर्श कदिएवं कार्य। याहा लग मन । তর্জিনী কন তার ভয় নাহি ভাষ ওষ্ঠাগত হলে প্রাণ কি করে লজায় । **প্রাব্যের অধিক জা**র কিছুমাত্র নয়। তাহারে যাতনা দেওয়া উচিত মা হয়।। ভথনি লক্ষার প্রতি প্রতীকার করে।
একেবারে পাঠাইল দেশ দেশান্তরে।।
লক্ষা পেলে হেসে বলে আমারে কি হলো
স্থীগণ সবে কন স্বপ্লকণ। বলো।।
রাজকন্যা আরম্ভিল, স্বপ্ল উপাখ্যান।
লক্ষিরা সমূধে বনি করেন গ্রহণ।।

-all Gillian

ভর্মিশার ক্রথ উপাধ্যান।

TA14 1

নিশি শেলে নিজাবশে দেখেছি তপন।
পালকে নামছা এক পুরুষরতন।।
ভঙ্গীক্রনে জানাইল কথার আভাবে।
লাসা করিলাছি স্নামি গোলাপীর বাবে।।
প্রেম্থ তালার নাম দিল পরিচয়।
থেভিপ্রায় কানা গৈল রাজার তনয়।।
দেখিলে কুনার অতি পরম স্থলর।
ভাষার কারণে দহে বিরহে অহর।।
ভাপনার বশ নহে থাকি নিজাবশ।
পরবশ পেয়ে বে যে করিল আজোলা।।
ভাবিলয়ে মিথুনেতে হলো স্প্রটন।
রাজ্বনা বৃহিল রতি হেরি চন্দোনন।।

একা পেয়ে রত হয়ে করিলেক রত। কত কথা কহিলেক কহিব ভা কত। নিদ্রাবশে আমণুরে যে প্রেয় অচেতন। বিশ্বাস্থাতক হলো ব্ৰাক্ষার নন্দন। मुकृदर्शतक (म जामारक कतिल जनम। ৰশেতে পাইলে আমি ভারে করি বশ। কি ক্ষণে স্বপনে আদি করিল মিলন্ ধরিতে চাহিতে চেয়ে না দেখি দে জন। डागदा मा (करत थान मरक कामामरण) শীতলু না সম্যাদি প্রেবেশিব জালে।। সখীর। সকলে তারে হুঝাইছে নীত। উচিত না হয় হলে এক উৎক্ষিত।। विकादक ताली तम जिल्लाम अनाभ । সেই মত রাজকন্যা করেন বিলাপ।। সাধ্য কার ভাবে আরু নিরারণ করে। উম্ভ হট্রা যান আপনার ঘরে।:

প্রামথের পত্র তর্ষদ্বীর প্রাপ্তি।

পরার ৷ 👈

প্রবেশ করিয়া ঘরে রাজার নন্দিনী। । অস্থিরতা অতিরিক্ত যেন উন্মাদিনী।। 7.53

পালম্ব উপরে পড়ে বিযাদিত মন। पृष्टिमात पृष्टि रस श्रमथ लिथन ॥ পড়ি পাতী রুমবতী স্থীগণে বলে। पुछ एएटन मिलि (करमा भूलक भ्रमटन ।। অন্তরে জুলিছে একে মদন অনল। পত্রিকা পড়িয়া হবে। দ্বিশ্রণ প্রবল ।। যোড়শ বয়দী বালা মবীন যৌবনী। शुक्र एवर व्याचापम माहि जात्म धनी ।। ব্বপনেতে কিছু মাত্র পাইয়াছে রস। उनद्धि विश्वभुषी नरह निज तम ।। , শরীর কম্পিত অতি **যেন কম্পে**ন্তর। রসহীন হয় শুদ্ধ বিশ্ব ওঞ্জার ।। জালার উপরে জালা নহা নাহি হয়। কে কোথায় ছেভে দের পাইলে সময় 👭 হেনকালে পঞ্চশর করে করি শর। অনুচর নহ এলো লইবারে কর।। আহা উচ্চ করে ধনী, স্থির নহে মন। मूख्रम नराज आणि कहिर्छ मनन।। करिंधी इडेल रफ़ ताकात निस्नी। দিক্ছারা কিন্তু যেন দন্ধা কুরজিণী।। **उत्रिक्षणी कमिलिनी करत धाँत करा।** তোমার আনীছ পত্র এই চিন্ত নয়।।

তুমি কি দেখেছ তারে কহ গত্য করি।
প্রবঞ্চনা করোনাকো করিয়া চাতুরী।।
অপন অনাথা নহে হয় কদাচল।
তোমার মার্দার বাটা আছে সেই জন।।
কমলিনী কন কভু না শুনি শুবনে।।
কিন্তু এক রাজপুত্র এনেছে এখানে।
দেখিয়াছি গত কলা মার্দার দোকানে।
চাকুরজামাতা যদি জানিতাম দিনি।

হলে কি ভাঁরে ছেড়ে আসি একাকিনী।।
তাহার চরিত্র দেখে হয়েছি বিশার।
তেমন নাহিক নিলে জনাগিলে শায়।।
সে জন সুজন বড় জার বড় নাই।
প্রতিজ্ঞা করিতে পারি করিয়া বড়াই।।
কটাগৈতে ভার পানে কিরানে নয়ন।
নয়নের সাধ্য নর কিরে কদাচন।।
আনি নেই মেয়ে ভেঁই আসিয়াছি কিরে।
অন্য মেয়ে হলে বই সেই খানে কিরে।
কেরে কারে এনে কিরে হয়েছি কাঁফর।
কিরে যেতে ইচ্ছা করে ভাজ্য করে ঘর।।
দেবতা কিরর নর না জানি সে জন।
কি হলে আইল হেখা কিনের কারণ।।

্ব্রাপ্রালা কন তারে দেখিতে কেমন। ক্মলিনী কন আর আছে কি তেমন।। তাহার কপের কথা নাহি হয় শেষ। ञारामय इटड शास्त्र यपि कम भाषा। নবীন বয়স অতি কুভক্তিম ঠাম। দট্টিমাত্র কামিনীর উপজ্য কাম।। रुपि मर्था चाकापिड थारक श्रापत । काहील । इंडिस बार्श भारत जात कत ।। র্পনা রসনা চায় বাসনা এমন। ইচ্ছা করে যেচে ভারে দিতে আলিক্সন্ অন্তরেতে থাক খানা অকথ্য কথন। ভারে পেলে যাচে রভিকাতির কারণ।। হেরিলে সে চন্দ্রানন হৈন মনে লয়। · निश्दत् क्रमनकली कनक्ष्मा हत्।।· · তাহারে যে দেখে নাই নেই জন বলে। मनम गरत्र श्रेष्ठ इत्रकाशानारन ॥ क्टांटक वाद्यक यपि इश विद्याक्त । भिजन ना इत्ल (यन पश्च इग्न गन।। मत्नत मानम कहि एन जार्ड जारह । আমার বাসন। নয় তারে ছেড়ে আত্তে॥ नानी हरस रनि छाद्र अक्नक समन। 🕝 তোমা ভিন্ন ভার আর অন্যে নহে মন।।

कमलिमी बाठनिक अनि रम बचम स রসবভী রমণীর মন ওচাটন।। অবিয়ত ভাবে কত মিশি দিনাবৰি। व्यष्टः गीटल अविधाम किमि क्छ ने में ।। िटलक ना नटह वाक दारिएड वामना क्रमिनी वर्ल भरत अध्य कृत्रना । তর্কিণী কমলিনী প্রতি পুন: ভাগে একবার যাও স্থি গোলাপীর লাসে । প্রভান্তর লিপি ভারে হইবেক থেতে । ভগ্রেটে মল নাম থাকিবে সক্ষেতে।। गटकांशरम পांचि जता ब्रत्यांभदा पिरव । आंगांत गांनग गाह उत्हादक कविरव ।। স্বপ্রবোগে সে তোমাকে করি দরশ্ম 💯 'অর্পণ করেছে দেহ জীবন যৌরন।। आत कि कहिय किছू मत्म मः मुसास । উপস্থিত যে বিহিত স্থধাৰে ভাহায়।। এখনি লিখিব লিপি মা ছবে বিলয়। कर्माननी जूमि माळ १७ अवस्य ॥ শথি বলে নমকার পিরিতের পার। याहक इडेल माती मित्र ट्य धुनाता। महाता च खुनित्नन हट्स द्राज्य जाना । তীহার প্রতিজ্ঞা বুঝি রৈল শিকে ভোলা ।। পত্ত ভারে লিখিবারে বৈদে রাজ্বালা। কমলিনী কন রাম যুড়াইল জালা।।

তরঙ্গিণী কর্ত্তক পত্র।

ভিপদী।

ভদববি ম্যা সন, ইইয়াছে জন্য মন,
স্থানে হেরেছি যেই রাত্র।

যার জন্য শিবত্রত, করিরাছি অবিরত,
ভূমি সেই আকাজনার পারে।
ক্যাঙ্গিনি যার তরে, সেতো নাহি মনে ক
আমি নিছা ভাতিল কি হবে। "
ভব্মিণ গুলৈ মন, নাহি মানে নিবারণ
বেপ্যান্ত মিলন না হবে।।

उर्वभनीत शब महेश्रा कंगिनगैद क्षमाशत निकटि गा

পয়ার।
পত্র লয়ে কমলিনী পাইয়া আখাস।
রাজার কুমারে গান করিতে উল্লান।।
সধী অতি ক্রতগতি হুকীচিত হুরে।
পত্রিকা লইয়া যান রাজার আলুয়ে।।

দেখি পত্ৰ বাসপুত্ৰ অতি উল্লাস্ক। আহ্বোদে আবেশে মন্ত শবীর কল্পিত। थड़कड़ करत थान कार्या माहि जिए । न्थान्सन इहिल इट्स तन अक पृट्छें।। পুলকে পূর্ণিত অল আত্যক্তিক হয়। ं**ककर्शः भरम** चार्ति चात्रि कर्शः गास्तु ।। সহচরী প্রতি কথা কন মৃত্যুরে। সঘনে নিশাৰ অতি গ্ৰহন সরে।। वाधिक कतिरल दुमि गाउँ कीवन। 🎫 যাতা দিব তাহা করিলাম পণ।। কমলিনী কন আজি কিছু নাছি গাই। मा आहि अमन वांत किह पानि गहि। वाक्कनमा चनुतार्थ नाहिक जान्तरः ঠাকুরজানাত। মাত্র না হয় অভাব 🕫 আন্য অতে যেন ভাতে না হয় বাতনা। সমভাব থাকে ভাগ এ লাভ প্রার্থনা ।৷ এই মত হয় কত কথোপকথন। অন্তগত দিবাকর নিশি আগমন ।। कमलिनी कन आजि हरतम विष्राय । রাজপুত্র কহিলেন কি হবে উপায়।। गर्गती कत्रशुष्टि (हर्म दहरेंग कत । या इत्रोह क्रांत को हिंग नाहिक मश्मारा।

প্রমথের নিকট ছইতে ক্রলিনীর প্রভাগীনন। প্রারে i

ররেছেন ভর্ত্তিশী যুবরাজ চেরে। ভীর্থের কার্বের নাায় গরাক্ষেতে চেয়ে 🖟 कृषिक ठाउकी यमि (स्तत ननघटन। পিপাস। কি শান্তি হয় বিলা বরিষণে !! ठालकिनी स्टा त्मरे बाक्कमा तस । टाविवार वाक्यभूक करेव विविध ।! হেনকালে কুমলিনী আসিয়া তথায়। তব্যিকী দল্লিখানে সকল জানায় ৷দ শুন ভাগে রাজবালা কবি নিবেদন। পিরিভি না হতে অত্যে বিচ্ছেদ সূজন।। দেখিলাম রাজগুতে এমত প্রকার। কারিনধ্যে ছারী যেন তেমতি আকার। বায়ুরূপে **তুমি তা**রে কর ছিন্ন ভিন। हांग्रानात्म ताकभूळ दूरेग्राटह नीर्न ।। कर्त आहि करा मंदि मन पना मन । তোমার বিরহানলে দহিছে জীবন।। ভরঞ্জিণী বলে স্থি ক্ষ কি ভোমার। চলিতে চরণ ভারি বল নাহি পার।। कामीनटन मक मन मन मना नक्कर्त। विक्षण यांजना इटना अ कथा अवटेश हैं।

चरिश्वा इरसि चिन्नि देश्या नरह मरन क्ति नाहि इत्र थान जाहाति विहटन।। ट्योवटन मन्नजाना मञ् नाहि इश । বিনা রতি কি ছুর্গতি হলেম সংশয়।। আপনি মরিনে পুড়ে অনোরে পোড়ার। " निराद्य अद्भा रयन गर्की कर्र्ड छात्र ॥ রতিপ**তি**্চাহে রতি কুচ চাহে কর। পাব কোথা ভা<mark>রাও তা জানে</mark> পরস্পর 🕦 तुरका अ रनारक्षमा कृष्टे यक रहीक् शह । र्वास्थाक भिरम जिल्ला कर अब शरा।। সুসর পাইর। **ন**বে সাধিলেক বাদ। মড়ার উপরে খাঁছে। একি পরমাদ।। अवन महेरल इति। विक हर करन । এ জ্বালা কেমন জ্বালা জ্বে আর জ্লো। कर्ष कर्ष भार इत्र कर्षर्ट (हजन। উত্তর সমান প্রার বৃচিন মরণ।। দীর্যস্থাস ভ্যান্দ্র কয় নৃপতির বালা। বিনা কান্ত কি কুতান্ত না যুড়াবে জালা ।: व्यक्ति (यवा बद्ध मिट्ट शांतिदवक छोट्ट) যাহা চাবে কহিতেছি দিব আমি ভারে ।। क्द्रब्र धरव देनविकीटत मूजा लदत्र गोरह। বিৰা প্ৰয়ের কেনা নব তোমাদের কাছে।।

মুহ্চরী ঠারাঠারি করে পরস্থার। তিকেবারে বাঁদির কি হলে। কুরুপর।। मिश्रिशर्व नकस्ट्व कत्रसाष्ट्र कत्रि । কহেন বিনয় বাক্য চরণেতে ধরি।। আমরা ভোমার দাসী ভোমার অধীন। অবিহত অনুগত আছি নিশিংক্রিন্যা मामीदा विनट मामी अरेड डेविडन বিনামূল্যে কেনা বলা **অতি** অমুচিত।। **उत्रिक्षिणी कर्म मात्र श्रद्ध व्या**। বিনামূলো কেনা ভার বড় কথা নত্ত্প। हेहा श्विन कमलिनी करहन छाहारत। অদ্য আমি এনে দিব রাদ্রীর কুমনের ।। এমনি আনিব ভারে প্রার গোচর। नकरनत पृथ्य इटन इटन ना दर्शाहत ।। হির হও মেওয়া কলে সবুরের রুকে। এ বিষয় কভ জনে দিতে পারি শিকে।। अकार डेडला हरत किहूरे ना हम्। ধৈষ্য ধর রাজকন্য। ব্যস্ত বিধি নয়।। ्यांडनी शाइया वनी यामिनी दशाहाय । " तिहें थोरन यूरताक এই व्यवसाय।। े कार्यानट्ट गर्ककन व्टल्ट महिन। च्हित नग्न याकिनट। উভদের মন।।

দিবাপতি জউগতি নহে অবসান রাজবালা চাহি বেল। হন প্রিয়মাণ।। जराज्य वर्ष रचन त्राजा छूर्यग्रथन । দিবাকর অনিবার করে নিরীক্ষণ ॥ তেমতি নিরথে রবি রাজার মন্দিনী। স্থির নর জমে যেন মন্ত সাতজিনী। মনকটে কোপদুটে চাহিয়ে ভাস্করে । রাহুগ্রন্থ হও বলি অভিশাপ করে॥ জীরুফের প্রতি কন করুণা বচন। কেবিশাওহে দয়াময় বিপদভঞ্জন।। আপনি কোথায় তব কোথা স্থদর্শন। কুপা করি রবিকরে কর আচ্ছাদ্ন : অর্জুনে হাখিলে প্রাণ জয়কথ ববে। দাসীরে করছ তাগ দিবাকর বধে।। অদ্যকার দিয়া হলে। তেমতি প্রকার। ना इहेटल विভाবती व्याटन नौहा खात ॥ কোনখানে আছ বাপু অঞ্জনা কুমার! वथ छाञ्च अदंत इस वाहित्नक जाता। वियान करिया कर्म मधीनन कारह বোধ হয় আজি বড় বেলা বাড়িয়াছে !! नशीनन दरन वटि अक्षमान नम्। शंकरण रहेला छात अबि मन इस ॥

গরত হইলে হতে হর গুনাজান।
রাজকনা ক্রুণকি উচিত কথন।
বাজকনা ক্রুণকি উচিত কথন।
কাটাঘার হন দিয়া করা আলাতন।
এ কথা শুনিয়া রজন পেরে স্থীগণ।
নম্মুখ করি কহে না কহ বচন।।
ক গলনী কন বানী ভরঙ্গি আগে।
অমুনতি হলে মুবরাজ আনি আগে।
রাজস্বতা কন শুভকর্মে দেরি নয়।
এনো এসো প্রিয় বিভায় নাক্রী।

-

क्मलिनी स नश्नुजीतांत्र अवस्पत्र निकटी ध्यम

পরার।

कर्मालनी कन गर मशीह शाहत ।
ति गरित मिण्डाति वानितरित वह ।।
गरत जाता एउटल जाता करहन रहन ।
कर्मालनी गरक चार शिलाणी जर्म ।।
खेलांगिला हरस जाता करहन ज्ञान ।
यानिवारत गांव जारत जामांत मनन ॥
नकरमत जन्मां नरित हास्ति हत्।।
थानिवारत गांव जारत जामांत मनन ॥
भक्तित जन्मां नरित हास्ति हत्।।

চলিলেন ক্মলিনী আর সেই ভারা। ভারা তারা বলি যাত্রা করিলেন ভারা।। গোলাপীর নিকেভনে হয়ে উপনীত। দেখা নাহি_শকরে তারা তাহার সহিত।। আগম নিগম পথ কম্লিনী জালে। 🔫 🦥 यदवर मकानि रोल कि काब मकारन ।। **এटकदादत উপনীত रहेला अमर**दा। রাজপুতা বাসা **করে আছে যেই ঘ**রে 🗓 पुटे कटन महन महन इरह आर्नानक । , ताणभूक निवादन इन उपनीखा। व्य**ित ए**वताक खाँछ मनास्थरम । স্থারে আছেন বদে বিলুপত্র স্থান ।। স্থীরণে নির্**থিয়ে রাজপুতা কন।** পথভ্ৰমে ভাগাক্তমে হল আগম্ন।। ভাবে বুঝি হইবেক আশার সকল। খকষাং প্রাপ্ত মের আকাক্ষার এল 🛚 नम्राम या (पणि नाई ना श्रीन खावरण। এমত অদ্ভূত কর্ম হয় কিকারণে।। অতঃপর বাঞ্চাসিদ্ধি হইবে নিশ্চয়। देनटन दक्न कम निनी निनिट्ड छेन्छ।। रुके हिन्दु तांक शूटल क्यालिमी वटल। यजन क्रिटल इक् व्यक्तादलट करल।।

তাহার প্রভাগ অদ্য কলিবেক কল। আকিঞ্চন ক্ষাচিত না হয় বিফল।। যাহার যে জন প্রতি নিতান্ত মনন। তাহার নৈরাশ নাহি হয় কলাচন।। ভার পক্ষ এই বাকা নছে কলাচন! वामन इरेशा यात ठाँदन व्याकर्षण। সম্প্রতি মিমতি এই চরণকমলে। भराक मा हता कर्य करद याद राल !! মহাশয় ভাষিনীর। নিবেদন করে : क्षृत्रक**ेर्न**ुद्रविद्य योड्डिट मन्द्रद्र ॥ ः সক্ষোপনে কহিতেছি শুন বিবরণী করেছেন রাজকন্যা তব আবাহন ! প্রস্থ ক্রেন সন্ধি করিব কি কাম : कानिनी कन नीय नाज नाती राष ।। প্রমণীর বেশ ভিন্ন না হবে গমন। অ'মি যাব সভে ভারা রবে নিকেতন।। রাজপুত্ত কন **রাজি যা বলিবে তার।**-কোন মতে দেখাইতে পার যদি ভার।। कंगलिमी कन १८८२ ठांकुत कामाहै। ফুলেতে লাগিল ভরী স্বার দেরি নাই।। ছাইয়া তারার তারা বস্ত্র আভরণ। बुमतारक ब्रमवकी कविन उथन।।

রহেন নয়নভারা প্রমথের দরে। গোলাপীর অংগাচর এই কর্ম করে। ভারা ভিন্ন ভারা অন্য না পান সন্ধান। কম্লিনী সমিভাগের প্রমথ প্রস্থান।

mable of term

अम्बिमीद मात्र छा। इ उद्यक्तिमाद सिक्टि आगेटबर अगर

প্রার :

कमिलिमी परिश्व कति द्राप्तति सम्बद्ध ইউর্: সমুন্ত রে: প্রান্থিক সম্মান্ত लवामी खादमा छोट खावि भरन गरम । निक्टाइटक डेमसीक वाळाश उत्रस्य ॥ কুত্ৰকাননে ভাৱে রাশিয়া গোপনে। कर्मात्रमी क्रम विशा एएकियी गरम । 'নাদিহাছে রাজপুত্র শুন সতং বাণী। **অমু**মতি হলে তথ সহিত্যান লগানি।। मधीत। सक त्ल छनि इहेशः छेलान । नानाकां जिल्ला जारन कतिशा उताम ।। পক্ষম বিবাহ আছে বিহিত যেখন। ভাহার সকল দ্রব্য করে আন্রেব । अर्गावङ भूष्ममाना अदगीत्रज्ञान । रुदिना कुछूम नया। हटत अध्ययन ॥

আতর গোলাপ চুরা স্থবাগিত কত। যতন করিয়া আনে সহচরী যত।। খাইতে মেঠাই মগু। নানা মেওয়া ফল। আঙ্গুর আনার পেস্তা সূবাসিত জল।। করিয়া বাদর সজ্জা সধীরা সকলে: ठद्रिक्षी প্রতি পরে ছেসে ছেসে বলে।। মেজেছেন যুবরাজ রমণীর সাজ। ভোমারে থাকিতে হবে হয়ে যুবরাজ । একবার একত্তেতে বসিবে সে বেশে। পশ্চাৎ করিহ কথি। যাহা হয় শেষে॥ শুভক্ণে শুভদৃষ্টি দৃষ্টিপাত করি। যুড়ার মনের ছাল। সব স্করী।। ভরঞ্জিণী মনোনীত হইল সে কথা। क्यः शिमदा नसभूशी अर्गलेखा।। অনুভাবে দেই ভাব বুঝি সখাগণ। माकाहेर मरनामल भूकृत तकन।। কাটাও পোশাক দেয় পাজামা চাপ্কান মাথায় সাচ্চার ভাঙ্গ হীরার নির্মাণ।। কোনরে কোনর বন্দ ই**ক্টা**কিন্পায়। মাণিক অঙ্গুরী করে বেণারদি গায়।। कर्त्र कुखन दनम नक्षम् हि मह। কি পুরুষ কি প্রকৃতি দৃষ্টিমাত্র সহ।।

তিলেক বিলম্ব নয় হয় শুক্র সুগ্র। किरोटक दिशिक कमर्ट्यत मर्थाइन ॥ করিয়া বাসরসক্ষা হইয়া সত্র ! ক্মলিনী চলিলেন আনিবারে বর 🛭 उश्चारन ताकात शुक्त कुरूम कानरन । নিজায় নিমগ্র হয়ে রন অঙেডনে।। गन्म भन्द हल्। हल क्तिएइ प्रवन्। নিবিধ্যেতে নিত্রা যান রাজার নক্ষন।। কনলিনী গিয়া তার পালক্ষের থাবে। কত্র কেন্টা করে নিদ্রা ভঙ্গ করিবারে ॥ ्कानगर्छ ब्राक्श्वराख नः इस ८०७न । তর্জিণী কাছে আসি কুমলিনী কন্য রাজপুত্র রয়েডেন নিদ্রায় মোহিত; নিজ্ঞান্তক তার নাহি হয় কদাচিত।; ভাই ফিরে আইলাম দিতে গো সংবাদ। এত সাথে বাদি হয়ে কে সাধিলে বাদ ।: অবাক হইয়া দবে পাইলেক ত্রাদ : কেহ কয় উপদৰ্গ হয়েছে নিৰ্ঘাদ। कर्मालनी श्रम यान इत्य अछि प्रथी। अधाः ऋरमनी मटक आत हत्स्यूथी।। রাজার তনয় যথা হন উপদীত। দেখিলেন যুবরাজ নিজায় মোহিত।

ভাকাডাকি ঠেলাঠেলি কত করে ভারে। নিক্রাভঙ্গ নাহি হয় কোনই প্রকারে॥ সহীগণে ছুখী মনে পুন গিয়া ফিরে। তরঙ্গিণী প্রতি ক**ন বাসর** মন্দিরে॥ শুন ওগো বাজবালা করি নিবেদন। না হন জাগ্রত সেই রাজ্যর নদ্দন।। শুনিয়া রাজার কন্যা হইয়া অধরা । भाहि रुथा मुद्धांशिष्ठ। इत्तरं श्रद्ध थता ॥ महम श्रेन श्रित न्यानम त्रिष्ट । মৃত্যপ্রার অভিপ্রায় নিকাস বঞ্চিত 😃 गथीता नहेग्रा दलात्म कतिला यलगः। বছ পরিশ্রমে তাঁরে ক্রিল চেত্য ।। চৈতনা পাইয়া থেদে কম স্থিগণে : এত দুঃখ দিবে ছিল বিধানার মনে ।। **केटेफः यद**त क्लेरर व**रम भ**तान राष्ट्रित। পৃথিবী বিদারে যদি তাহে প্রবেশিব।। এ ছার শীবনে আস নাহিক আমার। প্রোণনাথ বিনা সব দেখি অন্ধকার।। कुरूम कानन रूबि इहेनदा कान। हेरकाल मजारेलि जान भवकान ॥ মননে মানদে যারে ভাবিশাম পতি। সে বিনা জন্মেরে ডজে হইব অসতী।।

मक्तान वाक्षाभ ममान छेलस । इहात अनाथा हरल धर्या नले हत ।। অর্পণ করেছি যারে দীবন থোবন : त्म विना क्षीतन भन्ना दूथाई वैकिन । অপরাধি হইয়াহি কালিকার পরে। मजुवा कि अ दिशम घटें शदन शदन।। নিলাপ **করিয়া বর্কে করে করা**য়াত। তুন্যনে অবিরত হয় অশ্রুপাত।। ারিজাণ নাহি হলো এ ঘোর সহুটে ! এখনি ভাজিব প্রাণ তাহার নিকটে।। অম্মনি চলেন বং! রাজার নদান। স্থাগণ পশ্চাতেতে করিলা গমন । দেখিলেন রাজপুজ নিদায় নিভর। তর্জিণী বৈদে তার পালফ উপর ।। হেরি তার চন্তানন করিয়া রোদন। কহেন তুখিনী জন্য হইলে তমন।। বিধাতা বিমুখ বুঝি হলে। এত দিনে। কেমনে ধরিব প্রাণ তোমার বিহনে ।৷ অধরে অধর দিয়া কান্দে উভরুষ। মুখামৃত স্পর্মে তার নিদ্রাভর হয়।। চাহিয়া দেখেন অতি গভীর রজনী। नपूर्य मिक्नी मह (महे क्मिनिनी।।

বসিয়াছে তর্জিণী পালক্ষের ধারে। ভাছারে ছেরিয়ে চিত্তে রাজার কুমারে।। युवकी युवक विश कदहरू धातन। বিযাদে ক্রন্দনে অতি আরক্ত নরন।। সে নয়ন নয়নেতে করি সন্মিল্ন। ভয় পেয়ে ভাবে মনে ব্রাহ্বার নক্ষন : मण्युर्ग विश्वन दूबि घडिन आशात । ক্রোরভরে শিরবেতে বনে জমানার।। অদ্যই নিগ্ন হ্ব নাহিক সংশয়। তাহাতে তিলেক যাত্র থেদ নাহি <u>হ</u>য়।। জনিলে অবশ্য মৃত্যু সকলেতে **জা**নে ! यात जना खान योग त्य है कानशादन !! একবার তারে হেরে মৃত্যু যদি হয়। খনের মানস সিদ্ধ মরণে কি ভয়।। থাহা হৌক কোনমতে না দেখি উপায়। এথনি ধরিতে হলে। কোটালের পায়।। রাজবালা পায়ে ধরি রাজপুত্র কয়। অপ্রাথ জমাদার ক্ষম মহাশয়।। হয়েছি শরণাগত ক্ষম মম দোষ। দয়া করি দাসপ্রতি কন্ত হও রোধ।। चाँ थिठादत तमवर्णी প্रक्रिकमानिनी। রুমাল ঢাকিয়া মুখে যান তরক্রিণী।।

ক্ষলিনী কয় আমি জামীন ইহার। হাজির করিয়া দিব ছঙ্গুরে ভোমার।। প্রমথ ভাবেন হতে হ্রল হাজির। প্রথমত কারাগারে রাখিবে নাজির।। চেনামাত্র কমলিনী সকলে অচেন।। থলে তাম হে তোমায় নাহি যায় চেন:।। এখানে আসিয়া আমি তোমার কথায়। বিপাকেতে প্রাণ বার কেবা মুখ চায়।। মারীর কথায় যেই করিবে বিশাস। এই শত তার কিন্তু চবে সঁকানাশ।। প্রভাক প্রমাণ আছে বাল্মিকপুরাণে মৃত্যুবাণ দশানন দেন পত্নী স্থানে।। ्महे भार मरन्त्रानहीं इसुभारन मिल। शांतीरत विश्वाम कति तावग माजिल।। জানিলাম ভূমি পঞ্পালের পাতকী। রমণী হইয়া হলে বিশ্বাস্থাতকী ॥ कमलिनी कन दुवि कुणिशंदह (वर्षत । अर्थानादत एउटक निव यनि कत लाल ॥ জ্ভগতি রসবতী স্বস্থানে গমন। মদন আসিয়া লন করি আবাহন।। अमथ ध्रित्राहिक्त दमगीत दवन। তাহা হৈরি যুবতির মনের আবেশ।।

বিপরীত বেশ দেখি বিষম আশয়। বিপত্নীতে বিপরীত হর স্থানের।। বিশেষ বৃত্তান্ত অৰগত বনমালী। কবিয়া বাধায় রাজা কবেন কোটালী।। क्मलिनी क्वरशंद्ध अञ्च मकानता। রাজপুত্র প্রতি কন সহাস্তবদলে !! इर्त्तक जामीन उत् दिरमण जानियाः আমারে খালান কর হাজির হইয়া।। দোষ ওণ ভজারেতে হটবে বিচার। অপরার্থী হলে ঘাটি হইবে স্বীকার 🏗 একক্ষা অত্যে লামি দেই উপদেশ। हेड! इंटन गर्सकर्य इन्हें(वक स्मय ॥ পায়ে ধরে ক্যাদারে করিবে মিমতি। কোটাল দয়ালু অতি দিবে অব্যাহতি !! কথার আভালে হাদে রাজার তন্য। ভাবে সেই ভর্জিণী জমাদার নয়।। কেমনে দেখাব মুখ[া]মার তার কাছে। এমত স্থবোধ মূর্থ ভারতে কে **আছে**।। এমনি জোলার মত হারায়েছি কৃড়। দে আমারে জেলে গেছে ঘন্টার গরুড়।। কমলিনী অভিপ্রায় বুঝিয়া গভিক। গতিক্রীড়া নাহি করে রঞ্জনী ভাষিক।। জবশেষে হেনে হেনে কহে প্রমাণের।

চতুর ঠকিলে কন্তু প্রকাশ না করে।।

লাক্ষেপ করিলে কিবা হবে এইক্ষনে।

মলিল বহিয়া পেলে কি করে এক্ষনে।

যা হবার হরে পেছে মিলাইলে বরি।

চিন্তা কি তেখার কুলে লাগিয়াছে তরা।

জার কেন অকারণ বিলাহে কি কল।

জারে কেন অকারণ বিলাহে কি কল।

চলিলেন যেই খানে রাজার নন্দিনী।

পশ্চকত রাজার পুত্র অত্যে কমলিনী।

রাজাব কুমারী আসি আপনার ঘরে।

নারীবেশে বসে আছে পাল্ফ উপরে।।

ভর্মিশীর মন্দিরে প্রম্থের উপন্থিতি।

পরার ৷

প্রকৃত্ত হয়। অতি মান যুববাজ।
সদয় ব্যাকুল কিন্ত নয়নেতে লাজ।।
উপনীত তর্জিণী আছে যেই খানে।
তারে হেরে রলবতী লাজে ঘোম্ট। টানে।।
খুলিয়া আপ্রন খোম্টা রাজার নক্ষম।
তর্জিণী প্রতি ক্য করি নিরীক্ষণ।।

সেলাম হামেরা আবি পৌছে জমানার। আসামী হাজির মিয়া হজুরে তোমার।। আমানতে জ্যানত খালাম তে। হয়। উচিত করহ দও যাহ। মনে লয়।। উপযুক্ত যাহা হয় কর প্রতীকার। অবিচার কর যদি দোধাই তোমার।। কিন্তু এক নিবেদন অপরাধী করে। দণ্ডিরে করহ দণ্ড আপনার করে।। যার লাগি করিয়াছি এদও আলম। সে দণ্ড বিহনে দণ্ড ভণ্ডপরিশ্রম।। অপ্রনি ব্যবস্থ। করি দও আপুনার। ইহার অধিক হলে প্রাণে বঁটা ভার।। ক্দম পাধাণচাপা দেও কুচছর। ওচে ওষ্ঠ দিলে কন্<mark>ট প্রাব্র অতিশ</mark>র।। করুরজ্ঞ দিয়া বান্ধ ভাহাতে স্বীকার। देशीते कामार्थ। इटन इटन कविष्ठात ॥ বিদার দশনে গণ্ড এছগুইহার। বাঁচি বাঁচি মরি মরি অদুট আমার 🕕 একথা শুনিয়া ধনী ফিরায়ে নয়ন। हेक्टिए गंबीद्ध फ़िए कहिल जामन।। भर्थी ठाटम महमाधियां कटम् क्रमाती। राहि जांग करिंक कांग वन्ट बनिश्ती ॥

शुक्रद्य त्रम्भी माम दय कदत धात्र । তাহার রমণী যেই দেই বা কেমন।। নারীর কারণে নারী কেব। হইরাছে। ্য পারে একাষ তার অসাধ্য কি আছে।। হাগিয়া কছেন ভবে ব্রাজার ভনয় तमरी पुरुष रुउद्यानस्य कि रुप्त ।। তাহাতে সুসার এই হতে পারে শেষ। लाला हरा फेलक्स गरमत व्यारिन ।। প্রকৃতি পুরুষ হতে অভিলাধ ধার। কঠিকের আমসত তার মাত্র সার।। পুরুষ প্রকৃতি হওয়া বিবিধ বিধানে। গ্ৰীমদ্ভাগৰতে আছে তাহার প্ৰমাণ 🛚 প্ৰজ্য সামেতে সহা যথন এমতী। উংক্**ন্তিভানলে দগ্ধ বৈকুঠের পতি**।। गारमत्व युषारस मान इतस विस्मिनी ! ा शखरत भागज्य रहेरत्र नाखिनी ॥ मार्शन अहित इन नाती जना नाती। কি পদার্থ নারী ভাগা বুফিবারে নারি।। ্ব নারী আশর আমি হইয়াছি নারী। ন নারী কেমন নারী চিনিতে না পারি।। শাপনি করেছি মান অপেনার ভঙ্গ। ্ৰ যদি আপন্ধতবে কেন করে রঙ্গ।।

বঞ্জিতে ব্যাত হই স্পাই আভঙ্গ। मा कहि वक्षमा कर मिग्रस्मत एक ॥ একথা শুনিয়া নম্রয়খী রসবতী। দস্তাঘাত জিহের করি সলজ্জিতা অভি।। কহেন জ্ঞান শিকা শিখায়েছে কেবা। সে পারে এমন কান্স রান্ধি এতে দেবা।। অবিধি বিধান অগ্রে করা করুচিত। उत्तरभक्ता धरे भक्त भक्त भाज विख्या নিয়ম না হতে অত্যে অনির্ফ হয়। लम्भारे भुक्त्य मट्स कथा कहा नंत्र ॥ শঠত; সর্বদা যার কথার কুথার। হায় রে **বিধাতা এরে** গড়িলি কোথায়।। मत्था मत्था होति हर्षक इटल्ट्र मिनन : क्वन राममा महम कविट्ड मिनन ॥ পলকে श्रमत और दिवस मा नत्र। ममन जीमात जाक जनिरह छैं जा।। পুজনার মন দশ্ধ কাম ছতাশনে। भनाहित्व नव्या अर्थ मा ८५८च नव्रदम ॥ সময় পাইয়া কাম হয় উপনীত। লজার পশ্চাতে ভয় পলায় ছরিত।। গহাৰ্ক বিবাহ আছে বেমত বিধান। गमार्थन करत छोटा महिल्ल अभिने ॥

পুশামাল। বিহি দেন দোঁহার গলার।
বিরহ অনলে অলে মরম গলার॥
তৃণ বৃদ্ধি এক স্থানে হলে সঞ্জাইন।
অগেকা করেমা তারা কাহার কারণ॥
উভগে স্থীর প্রতি দৃতিগাত করে।
বৃক্ষি মন স্থীগণ পলার অন্তরে॥

の日本の日本の日本の

शुक्रात रणंग।

পরার।

তুবতী নিকটে যান যুবরাক বেঁলে।
থিয়ভাবে কন কথা মৃত্ মৃত্ হেলে।
হইয়াছি সক্তানী প্রিয়ে ভব লাগি।
নাঠে ঘাঠে কিরি যেন শাদান বৈরাণী।
ভোমারে না পাই যদি এই ছিল পান।
কামাকুপ তীর্থে নিয়া ভাজিব কীবন্।
এই জলে নাহি পাই পাব জনান্তরে।
এমন মনম ধন প্রকান্ত অন্তরে।
কবায় কথার করে বিহা নীন পরে।
যুবক বোগান কর যুবতীর করে।
করে করে করে করে প্রোধরাশান।
বিশ্বী বিশ্বী সাবেদ শ্যায়।

शामिक मा नार्य मित्रा कुठ्यूर्ति। কন যেন এঁরিতন পাই যুগে যুগে । সন্মতি অপেক্ষা করা অবিধি প্রথম। मसा (७८% मसा कहा दूथा श्रीतृष्टा ।। বিরক্তি জানান দুশ্যে অন্তরে তা নয় : কৃপট মুখেতে কটু সরল জন্ম ।। . अष्टांख निमय यनि वनदाडी इतः। निमय इंडेटन एटव नया छेलक्स !! তাহা শুনি তরজিণী স্থৃথি মনে মনে। क्षर हातिशा मुक्काटलम नगरन्।। मायक मासिका कार रहतिया প্रভारका श्रम्भि छुलिशे निम् बाशमात्र रंटके।। **অখন** যথন লন জ্বন উপরে। उथम अपन यम निमाक्त करते। वमशी बक्कात कति ध्यक्त कहिएहं। किष्मात वका गाँदै मरिया प्रिथिष्ट ।। " क्षेत्रश्च करहम 🎆 बार्ट जमा गरत পরে যা কবিতে ইয় উপক্রম করে। व्यमनि होती एवं छि शर्ड पति। नसभूशी कट्ड क्रिक नविनद्य कति ॥ श्रमता निष्य अप इरले कि आंत्रीय । उनमत्त्र वाकि मेत्र नाशिश्वादक उत्र ।।

প্রমথ কছেন প্রিয়ে ভয় কি তোমার। তোমার অধিক ষত্ন ভোমাতে আমার।। এ বংগী আবণে শুনি নে বনী তথান। नीत्रव इष्टेशा तम मां कहि वहन ।। ্স ভাব ভাবিয়া ভাবে রাঞ্চার নক্র। লেন হলে ভারে বলে সম্মতি লক্ষণ।। নাধিতে আপন কার্য যুবরাজ নাজে। वं हिंश भूमि जनवंदी कड़ गड़ बाद्य ॥ जारकर । भनाम नाज पुरत रान उस । ভ্ৰমৰ কমলে বনে হইয়া নির্ভয়।। বিধুমুখী কট পায়ে কাতরে জানা।। কণেক বিলয় কর বলিছে ভোমায়।। একেবারে হতে হয় এমনি অধীর। পুরুষ্টের মত আর নাহিক অন্থির।। দয়া ত্যকে নিৰ্দয় কি এত হতে হয়। মিঠাকুল পাইলে কি আঁটি ফেলা নয়।। পুরুষ জেতের অতি নি্ঠুক্ক ব্যভার। কেবল করিতে চায় স্বকার্য্য উদ্ধার।। প্রমথ কছেন প্রিয়ে দোষ অকারণ। ভোমার নিকটে দোষী সদা সর্বাক্ষণ।। (मायी कटन (मायी वना द्वारमत्र कात्र। (वाब (माब कामा कवि ४८चा (मह मन।!

উপকার **কিছু ক**র করি অনুগ্রহ। বদর হবেন হুর্মা দুরে বাবে গ্রহ।। াতত গরত কর পর উপকার। উপকার বন ধর্ম নাহি কিছু আর ।। পরের করেণে কন্ট আপনার হয়। विनः कर्छ कमाष्ठिज नट्ट् सुरक्षाम्य ॥ यकरके शिष्ट्रा धनी कारण भक्त करत । স্ত্রের উবয় হয় ক্রেমে পরে পরে।। स्टिन (तांर्य **डार्य ४**ने अकिएत वालांडे। অ্যার এমন আর বর্গে কাষ নাই।। এমত পরের যেবা উপকার বরে। ইংকাল পরকাল এককালে তরে 🛭 স্মনশেষ যাত ক্ষী গ্ৰাংগল দুর। উভারে অংকাজ্জ দুর করিল প্রচুর। সুগরি সুজ্পের গন্ধ পরিপূর্ণ বাবে। সকলেই বিমোহিত নিযুক্ত সে বাসে।। পরেতে পালয়ে নৈসে আসিয়া তুলন। नशीता करवन सव जीमत वाकन ॥ স্থ শীতল দেন জল কণু বি বাসিত। স্থীগণে মনে মনে অতি আনিক্ত।। বেদানার সরবত গেলাশ ভরিয়া। cकर (मरा भिकाशान आख्वाम कतिसा ॥

(कोडुक करतन कङ कथाग कथाग्र। সুখের যামিনী হলে অতি শীব্র যায়।। হেনকালে দিনমণি হতেছে উদয়। ্রারে ছেরি উভয়েরি জাবন সংশয়।। যুবরাজ কন মনে হয়ে অতি ছুখ!। বিদায়, আমায় আজি দেও বিশ্বমুখি।। ভর্জিণী কন প্রাণ বিদ্রিয়া যায়। পরাণ থাকিতে প্রাণ কে দিবে বিদার।: क्मरन थाकिव भिना ठाविशत कीटव । ভোষার বিহনে দেখি অক্সকার দিবে।। এ কথা কহিয়া ধনী আতি ভ্রিয়মাণ। চাদমুখে চুম্ব দিয়া প্রমথ পরান।। ধরিয়া নারীর বেশ যান নিজ হানে करङ्ग क्यांगिव श्रिट्य पिया ज्यारमारम् ॥

The state of the s

৬৭ক্ষিণী মন্দির হাইডে প্রমণ্ডের গোলাপী ভর্মে প্রভাগিমন

প্রার ।

সেন্থানে নয়ন জারা গোলাপার ঘরে। দিবুস হইল বলি ধড়ফড় করে॥ হেন কালে যুবরাজ হন উপনীত। **তাঁরে** হেরি সহচরী চলিলা স্বরিত।। পরদিন নহে দেরি হতে বিভাবরী। **भाष्यि नगर्**य यान नानि नहाती॥ পুজোদ্যানে নাহি জান নিদ্রার শক্ষায় : একেবারে উপনীত যুবতী যথার।। সমাদ্র করি ভার প্রম যত্ন। गरी भर्न रुद्धि (पन भम्धकालन।। ভाका कति ताथि मुटत तमनीत नाक। ৰসিলেন সিংহাসনে হয়ে যুববাজ।। থাদ্যত্রবা আদি কত আনি স্থীগণ। চর্বা চুদ্য হোছা পোয় করি আয়োজন ।। কভ কাব) র্যক্থা **ছুই জনে** হর ! खेकरमह मरनामीक **रेस्सरह** खेकरू॥ दः नकाटल श्रूराष्ट्रीमार्गात (याज करले। भग ক্রাঙ্গলি ধরি দৌহে করেন গমন।। মলিকা মালতী জাতি গোলাপ টগর। সেঁউতি মভিয়াবেল চাঁপা নাগেশ্ব ॥ श्रमुझ (पशिशा मूल मरमा अपाकृत। মধুপানে মন্ত হয়ে ভ্রমে অলিকুল।। ভ্রমর ক্ষারে প্রে মধুর আশায়। পঞ্জন থঞ্জনী শিখী নাচিয়া বেড়ায়।)

ডাহকা ডাহকী ডাকে মুখে দিয়া মুখ। का मिथि युवक हादह युवकीत दुक ।। इाभिया हाकिल धनी काश्वरल वपन । রতির পতিকে জয়ী করিবারে মন।। रश्नकारन शिकवरत करत कुछध्यि। त्म प्रति र्श्वानद्व धनी निरुद्ध व्यम्ति ॥ উপাজল ব্যণীর মান্সত্র্জ। সেই স্থানে উপনীত হইল অনস্।। নে সময় প্রিয় হয় সেই রতিকান্ত। পুরেতে থাকিলে কান্ত দিতীয় কুডান্ত।। वमवली करा इश निजा व्याकर्षण। প্রমণ ভাবেন তাই আমার মনন !! প্রিয়জন প্রতি কন সহাত্যবদনে : অলুমু হতেছে **অঞ্** নিজার কারণে ।। অনক্ষের অকোপরে করিয়া নির্ভর। গৃহ মধ্যে যান দোঁহে হইয়া তৎপর।। স্থীরা সে ভাব হেরি কন পরস্পর। आत (कन हल निभी यारे कमा घत ।।

বিপরীত রতি !

প্রার ।

তথ্যি মদন্যাগ ক্রিল আর্ভ। क्रभगांब कुष्मनांत्र ना गट्य विवस् ॥ লক্ষিত মুদ্রী লক্ষা করে প্রায়ন। বলৈ মার না আসিব থাকিতে জীবন।। য়াজ্ঞান্ত হন ভাতু গ্রহণ সময়। সর্বাস হলে সব অন্ধ্রকার্ময়।। स्वतम आर्याम (नास प्राथ अञ्चलाहा। अभक्षन विन्त्र विन्त्र एटर्श प्रजनीत ॥ অধরে অধর দিয়া অবিরত চাপে। অধীর: হইর। উরু থর থর কাপে। বিগলিত পড়িয়াছে হয়ে কেশপাশ। কটিভাগ পরিত্যাগ করিয়াছে বাস।। কঠিন এজন কর কবে ছজনায়। পদস্ব সে ঘূণায় সশ্চাতে প্ৰায় ॥ কুচর্গিরি বেন গিরি হুনর উপরে। সময়ানুসারে থাকে আচ্চাদিত করে।। করে শ্রম পরাক্রম নহে কম রণে। পঞ্জার কুর্ম ছন্দু হড়েছে ছজনে।

কভু উচু কভু নীচু নাহিক বিজ্ঞাম। ক্ৰমেতে বিহান। ভিজে গড়াইছে যাম। উভয়ে ক্ষতি আতি আছে অনশ্ন : ছাড়িতে না ইচ্ছা হয় প্রাকিতে জীবন।। কেহ কারে পরাজিতে নাহি করে শক্তা। অন্তরে থাকির। রতি অন্তরে আশঙ্কা। ভাবে বৃত্তি এ তুগাঁত দেখা নাহি যায়। দুরে থাকা দুরীভব স্থানার দায়।। ক্ষু নয় অতু হয় ভেদ হৈল মৰ্ণ। খাভিতে না পারি করি মধ্যক্ষের কর্মা।। কেই নাই এই স্তলে ক্রিভে বার্ণ। আমার কর্ত্রা গিয়া করা নিবারণ ।: আগমন করি রুতি মনের হরিছে ' সংগ্রান্সনিদর্ভ করে চক্ষের দিনিবে।। नमार्ख इड्ड यान त्रि चानगरम । র্ভি না সহিল রতি ভিন্ন ছুই জনে।। উপকারী রতি অতি জানিয়া তখন : ছই জন সমর্পণ করিল জীবন।।

প্রমণ ও তরাশণীর বিশ্রাম। লঘু-ত্রিপদী।

সহচরীগণ আসিয়া তথন, চামর দুলায় গায়।

অগৌর চন্দন, লয়ে কোন জন, মাথাইছে ফুজনায় ।৷

গোলাপ আতর, তত তর হর, আনি স্থী স্**বেছ**ন।

নানবিধ ফুলে, গোলাপ বকুলে, শ্যা করে আচ্ছাদন।।

বেলা দেকালিকা, দেঁউতি মলিকা, মালা গাঁথি থরে থরে।

যত স্থীগণ, হর্ষিত মন, রাথেন পালক্ষ পরে॥

লয়ে পুষ্পমালা, ভূপতির বালী।, নাগরের দেন করে।।

অমনি প্রমথ, মনোনিত মত, প্রোধর করে ধরে।

নানা জাতি ফল, স্থশীতল জল, স্থাসিত <u>সুরা</u>যত।

আনে অত্যে ধনী, স্থাণগুরদনী, ত্রমাকু সনের মত।।

निनि अद्यान. भनी अस यान. প্রমথ বিদায় চাল:

त्रमती उथन. वित्रभ नष्ट, अक्तवाद्य सिग्रमान ।।

हानि भिरत हाउ, बदल ७८० गःश,

भिनात्म शक्ति नानी।

इन्हेंश 'ग्राटमचा', मिट्ट कार्य अस्यो। भूत घाट्य नानि भानि ॥

वाध्य (कम्बा, (ए)महि विकास,

ভাম ছে নিদ্য বভাঃ

শ্লিয়া ব্যন্ত ক্রে বহু মন,

প্রাণ করে ধত কড ।।

ठाठिया गामिनी, कहिए कामिनी, ্যান্ড কার স্বটি হতে।

হোয় না প্রভাত, করি প্রণিপাত,

डा ट्रांटश त्दव ना नांध ।।

याग्र यमि व्यान, ज्ञादन ना अधान,

হবে তে ব্ধের ভাগি।

ভুগিবে হে ভোগ, রবে না বৈভোগ,

বধ হলে এ অভাগী॥

यिनि पिवाकंत्र, अञात्र कर्ठात. হন উদিত প্রত্যক্

[38]

जूमि हरत थीत, यनि कर्त हित् इहेता तम्यी शक्त ॥ শুনিয়া মিনতি, না দ্য়ে সম্মতি, निमि इम अवगान। যিনি ভার পতি, সপত্নী সংহতি, নিজ স্থানে চলি যাল। ধৰি ১ন্তাননে, প্ৰমণ সতনে, যুবতীর প্রতি কয়। माकि (पट्ड मन, अर्व आधिन. कि कति मः शिटन मन ॥ অকুণ তথ্য, যেগ্ন শ্রন, आधील देवन कर ! क्म निमी भरनः त्वानावी उदरनः প্রন্থের প্রান্তন ।।

ंटिंगगीत गाउँ अस्टे । ।

পরার। প্রতিদিন এক জন স্থী সমিভাবে। আসিরা রাখিরা যার রাজার কুমারে॥ প্রথমে পৌছিয়া স্থী করেন প্রাম। রাজপুত্র গোলীবীরে আসিরা শুধান।

ভুমি কি করিলে মানী উপায় আমার। গোলাপী কহেন আছি চেক্টায় ভোষা র 🛚 অসাধ্য সাধনা যদি হতো তৎপর। তা হলে কি উপাসনা করে প্রস্প্র।! তোমার কারণে বাপু অন নাহি খাই कि अधित दुवि वाक् आत्मन आर्याहै।। প্ৰম্থ কছেৰ মাৰ্যা তোমা ভিন্ন আর । কে করিবে বনিপোর এত উপকার।। অভিদিন রাজপুরু যান সেই খালে। কেবল স্থারা ভিন্ন অন্যে নাহি জানে।। সে বিল থিয়াছে দুৱে ছুৰ্বতি বিমুখ। मिलम इत्युष्ट (यम (लाइंटिक ठूपक ।) দৌহার পিরীতে ব্দ্ধ হন সুই জন। অদুখা যেখন জ্রামিস্কুর যোড়ন । ক্রমে ক্রমে, পিরীতের বাড়ে অনুরাগ। সময় পাইয়: বাড়ে ঘৌবনের রাগ।। উथलियः सूर्यमिकु ह्राइ स्मिन। नवनाई सभी मन खादना विशेन।। बुष्टान बुष्टन (क्षेत्र हर्रा (योशीरयोश । वृज्य बूज्य विका करवन गर्खान ॥ যে করেছে সেই চিনে পিরীতি রতন। षात्रिक श्रीक रचन जारकाइ कर्ण ।।

মনৌনীত দ্রব্য যাহা হয় প্রয়োজন। त्रशीतः अमनि जानि इन श्रिष्ठकन ॥ পুরুষ সাজেন কোন দিন তর্কিণী। युवतःक रमहे निम भारकम कामिनी।। यथन त्यांशल इन तांकात नन्ता। भाशकारी इर्ड वन तमगी एथन।। প্রমথ কথন হন কাপ্রেন লেপ্টেন। ভর্মিণী বিবী হয়ে দেন সেক্ছেন ।। যথন অন্তরে ধাহা হইতেচে সক। সকল মিটায়ে লন মনের আসক্।। বাহার অধিক নয় সমান বয়েশ্র। यशन त्यमस भन क्राइन जारसम्।। কভ দিনে সুই জনে নাহি অবকাশ। গর্ত্তবিতী রসবতী ছাই তিন মাস।। অপ্রকাশ রাখে কাকে নাহিক জানান। भह्ठही शहर मत्न कत्त्र अञ्चर्याम ॥ ভার। কয় দেয়ি নম্ন পড়িলেন ধরা। ष्यधिनौषिरधत शरक गार्थ हूँ हा धता ॥ ছাড়িলে হারাই জাঁথি না ছাড়িলে সরি। द्राञ्चकन्। इन क्षेत्रि हांका श्रेष्ट्र धारी।।। नथी वटन हिन्दान्दन मक्ष रस मन। र्जिट्य दिवारक कुल्बियर नव मजन ॥

অমৃত জ্ঞানেতে বিষ করেছেন পান। এখন উপায় কিছু ভাবিয়া না পান।। (क्र क्टर (ब्राटन खारन मकरन भारक हि। মৃত্যুর ঔষধি অত্যে গলায় বেদেছি।। ধা হউক আমাদের হয়েছে বিরাগ। श्रुवाहेटल कालाभूथी छेटल्डे करत तात्र ।। ঠাট করা রক্ত ভঙ্গ বৃহিল কোথায়। নে রঙ্গ বৈরঙ্গ অঙ্গ ভঙ্গ অভিপ্রায় ।; বেলি কর্মা তেমি কল ফলিবে নিশ্চর। কদাচিত পাপকর্ম ছাপা নাহি রয়। এখন গোপনসিদ্ধ প্রকাশ কুকায। শুনিলে পলায়ে অঞে যাবে যুবারাজ।। আমাদিগে করিনেক লয়ে লগুভও। দোঘীরে বন্ধখে পেলে দিবে ভার দণ্ড।। চক্তমুখী বলে সখী ঐ ভেবেছ মনে। খুলেতে চড়াবে ভুগ শুনিত্রে শ্রবণে ।: শোণিত হইবে নাহি ভূতলে পতন। ভশ্মপরি ছেদ করি ব্ধিবে জীবন।। कर्माननी खाँउ क्य इहेंग्रा छः थिए। মাসী যদি পারে কিছু করিবারে হিও।। ठिनदलन कर्भाननी मांगीद नगुरथ। হার্দীর কম্পিত ভীত ধুলা উত্তে মুখে।।

कमिनी छापिछ दहेश श्लोनांशीत निकंके भगन।

পয়ার ।

কমলিনী অস্তরেতে হয়ে অতি ভীত। ভাবেন মাসীরে बना প্রবাহে উচিত।। भित्र अभव माल याहेबा भि सन । **क्षप्रथ हहेग्रा तम (महे मिरक्**जन।। यर्थन गामिनी वर्ष अनुमान रहा। গোলাপী শরনে কিন্তু নিজামিতা নয়।। ट्रिकाटन क्रमिनी (मेरे थाटकवानि। कहिएक ए हात थुरन (में रामि गामी।। গোলাপী কছেন এত রাত্রে কি কারণ। कमलिने कन चारह, विरमय कथन ।। গোলাপী **উঠিয়া** ছার খোলে স্বরা করি। क्यानियों क्य शांगी अहे रात यति।। भागीयश्चि छूहे करन यनि अकामरन। क्यनिनी कन वागी शानाभीत गरन।। वज़्हे विश्वम भागी अकि मर्कनाम। রাজস্থতা অকঃস্বজ্ব। হয়েছে নির্যাস।। कहिएड अनव कथा थारिन इस चर्म। कुई जिम भाग हरण। तरका नाहि रस्न।

দে জন আছমে সাদী তোর এই ঘরে। সক্তোপনে নারীবেশে যাতায়াত করে।। (त्रांशांशी कहिर्द्ध हटना अकि मर्यनांग। আলি হতে ছাড়িলাম জীবনের জাশ।। এই কথা ছাপা নাছি রবে কদাচিত। উপায় কি ঘাঁচিবার নাহি দেখি হীত।। अभवाधि नहि पिष कारनम जुलाज। তথ্য বা**টাভে বাদা ঘটি**বে **তুর্গ**ভি।। माध् मर्द्ध मंत्री इतन धर्मात मध्या। व्यमाध्दः ताना मिट्स कीवन मश्मस ।। আর তারে স্থান নাহি দিব ফোনমতে। व्यविलास्य मृद्ध श्रम् याकु वर्णी गर्छ ।। উতলার কাষ নয় ক্মলিনী কয়। উহারে তাড়ান নাদী আপাতক নয় !! यिष्णिं । एवं स्म करत श्रायम । कांत्र भिरत दमान तांचि मुठादव महरा।! আখাদের গেছে নাক নাহিক সংশয়। ভোষার মন্তক ধাছা কিলে রক্ষা হয়।। গোলাপী শিরেতে শিলে মারি থেদে বলে। জীবন থাকিতে আমি প্রবেশিব জলে।। ভাঙ্গিরা কীঠাল খেলি নাথার আমার। এঘটনা বিনা ভোৱা ভূটা মাথা কার।।

উপায় कि वन पिथि इहेरव आमात। কমলিনী বলে সব ঘটনা ভোমার।। ্তুমিতো নাটের গুরু জেনেও জানন।। পূর্বের রক্তান্ত সর স্মরণ করন।।। এখন উপায় চিন্তা করা কি কারণে। मितन दहिएस शिदन कि करत वस्तरन ।। সাধের বনিপে ভোর বড় হিডকারী। তার জন্য অন্তরোধ কতই তোমারি।। বাহা হৌক্ রাত্রে কথা উত্থাপন নয়। मिवदम आमिया कानि कव यादा इस ।। যার ষেই যরে গিয়া করিল শক্ষ। নিশি শেষে উপনীত রাজার নদন !! कमिनी उत्रिक्षि कारक हटन गाय । ভোঙ্গনাত্তে রাজপুঞ্জ গোহিত নিজার্॥ নিদ্রা ভঙ্গে গিয়া সেই গোলাপীর ঘরে। দেখি তার মন জারি অনুমান করে।। জ্ঞান হয় কোন ভাবে জানিয়াছে কিছু। व्यातात्र (विगटत यूकि निर्देश हिटल। किছू।। अमय कट्टन मानी कव धक कथा। যদি ভূমি তার আর না কর অনাথা। খিলির দোকানে দেখি অতি অপলাভ যে কাৰে সঞ্য নয় নৈ লাভ অলাভ

পাঁচ শত মুদ্রা দেই হস্তেতে তোদার। নানা ত্রবা আৰি মানী করহ আপার।। शानाशी जातिए मस्न ठाई यामि ठारे। এহেন বনিলে। বল কি দোষে তাড়াই ॥ ওপাড়ার লোক মরে আমার হিং**নায়** । বনিপো তাড়াব আমি পরের কথায়।। বিবাহ না হয় তার প্রতিজ্ঞার দায়। যাচির। পিরীতি করে আমার কি ভার।। ভাগেনার, বর রাজা না করে শাসন 📳 খ পরাধি আমি হব হবে যাত্রধন।। প্রমথে চাহির। কর বাছা রে আমার। মরে গেলে আমি যাতু সকলি তোমার।। भुख नाहे कता। नाहे नाहि निक क्_रा বনিলোতে বর্ত্তাইবে অনীরের ধন।। अमर्थ कट्ट्र वट्डे ब्हार्ट्ड वावस्तात । অবীরা মাসীর ধন বনিপোয় পায় 🕕 छ्रे भक भूम (मन क्थनि कुमात। বেটা ভাবে বনিপোর যুড়ি মেলা ভার গ কি আশুর্মা পোলাপীর ধনের প্রয়ান। भटनत कात्रदश्र काटक कीवरनत व्यान ॥ भाजाशी समस्य रह्या कर्या अक्येन। **. ७%** करतन रहाथा नत व्यवस्था

রাণী চন্দ্রকলা তরন্ধিণীর বিবাহের কথা ভুপতিকে কহেন।

পরার।

इक्क का कम ज़ुश्न कि कव विदर्भय। তরক্ষিণী বিবাহের নাহি হলো শেষ 😗 आहेवए भारत घटत (योवन अवस्।। তোমার কি ছঃথ তায় তার ছুরবন্থ। ॥ তরক্ষিণী মুথ পানে চাওয়া স্থকটিন। পিতা হয়ে কন্যা প্রতি এমন কঠিন।। (क्यन कवित्र) अत्र स्ट महाताक । क्तवन नर्यमा वाल कर **दासकाय**।। ष्ट्राहेव **इ. यूदा भिट्या धिमन क्रुलांख ।** শার ঘরে আছে সেই সাবিয়া প্রাণান্ত।। (कमरन निषय **स्टब**्योह निन्दिख्छ। কিঞ্চিত অন্তন্ত্ৰ স্কুধ্যে নাহি হয় ভীত।। স্বিদিত কিছু নাই বলিহত কি হয়। কৌবন সময় দেয়ে মা বাপের নয়।। রাজপুত্র কৃত এবে যায় কিরে কিরে। প্রতিজ্ঞা করিয়া ভুমি নাছি ছাও কিরে।। ছোসায় না দির বেশ্ব অদৃটের কের। मञ्जा अभाव तित्र क्रमा विवादकत्।।।

নোয়ান মন্তক রাজা সলজ্জিত হয়ে। রাণীরে প্রবোধ দেন প্রিয়বাক্য কয়ে।। सूरवाध इड्रेग (कम निटर्काटध्व कथा। যার প্রতি প্রজাপতি নির্মন্তরন বঁথা।। क्ष मरह बचा मुद्रा विवाह व्यमाथा। কার সাধা খণ্ডিবারে বিধাতার কথা।। त्य मिन घडेन। इत्त विधित घडेन : त्म निम विदाह निम हत्य निक्था ।। वार्गी कर (स्वाक्तारका नाहि श्रायाम । জানিলাম কনা। প্ৰতি বেগন ধতন।। **अटबाधूर्य इटल जानी देवदमन एथन ह**ै। ভূপতি মধুর শ্বরে মহিনীরে কন !৷ অকারণ চিন্তা ভূমি ফেন কর আরে। मांड फिन भरका फिर विवाह कनाल ।। व्यमार्थ। इत्य नी कब्रु व्यागीत दान । **চस्ट स्था** ज्ञिउंत इ**रेत** भड़न ॥ त्य मकन जेवा हो हि दिवादहत छटन। আয়োজন কর রাণী গিয়া কুভূইলে 🖽 🕒 বাহির সু**হলে হৈল** ভূপতির বার। পাত্র মিত্র জাদি সব কানি পরস্পর।। অম্মি সকলে আসি রাজার গোচর পাত করি রন যোড় করি কর।।।

রাজা কন মক্রিগণ শুন দিয়া সম। कनाति विश्वास्त्रवा कत जाहत्व।।। মন্ত্রী কন অন্ত্রমতি হলে মর্রায়। তথ্যনি যোগাব উবা কথায় কথায়।। হেনকালে দিগছর বর্মা রাজ্যেশ্র। তাদার তন্য যার মান বিশ্বস্তর ।৷ উপনীত দেই ছুলে তর্ক্তিনী তরে। বিবার্টের আফোচনা শুনি প্রস্পরে।। क्ष र रू के मीन मकरनत (हरत । নরপতি ভুক্ট অভি ভার প্রতি চেরে।। निविधिया निवीकारण मर्ख स्वन 📭 । অশৈখি ছুটি কটা পরে হয় দিরীকাণ ।: পুরোহিতে শানাইয়। পরিচয় লন। नवन (इतियां करें। मृद्ध देवी है। इस ॥ বাণীর সঙ্গার তার করিলেন ছির। বিবাহ বাবত নর ভাৰত অন্থর।। স্বাঙ্গ স্থানৰ দৈৰি অভান্ত সন্তোষ। िरक्वण महास्कृष्ठि। श्रीकात रम रमाय ॥ জামাত। রাজার অন্ত বুঝিরা জন্তরে। निद्यमन अध्यक्ति अधि कद्य बद्र ।। অ'বি ছটি কটা তাহে কিবা আটকায়। হতের অঙ্গুলি পাঁচ সমান কোথায় 🏲

শামাতার কথা শুনি হৈল চকু স্থির। নৃপতি ছ:খিত অতি নত্তমাণ শির।। খেলান্বিত হয়ে পরে কন কিছু ছলে। शदन भिरम रवँदेश (मरम् रिक्निनाम करम ।। যাহা হৌক বিশ্বস্তারে করিব জামাতা। হইলে **দগুাহ** গ**ত কথা**র অন্যথা।। पिनश्चित कति ताका **आमम्मि**छ गरन। मकल वृद्धां छ कर महिथीत महन।। চলিলেন থাণী লয়ে পুরবাসিগণে। বিশ্বস্তরে ক্রেবিবারে অভি হুফীমনে । পাত্র হেরি পত্র কর মহারাণী কম। त्नजरमीच नरह (माय क्षमङ् त्रांकन।। तागीत मनन वृक्षि कटहन कुषत । হইলে**ক** বিশ্বস্তর কুমারীর বর ।। নারেতে হরিদা দেয় আছে পূর্বাপর। ভাচাতে হইল নম রাণীর নির্ভর ।। হেনকালে এক দুত আনি স্বরাস্বরি। **जूशिक शररम कम ममकात** कति ॥ विक्रम रक्नाती तीका खतरक ज्यात । ভরত আমার নাম তার অন্তচর।। थामय नारमण्ड मिहे बाजात कृमात। নাপ গুণ বলে তার সাধ্য আছে কার।।

কোন থানে গিয়াছেন না পান সন্ধান। অত্যেষণ তাঁর রাজা লম স্থানে স্থান।। व्याभि त्यन त्स्न मृष्ठ त्त्रद्व त्नत्म तत्म । **उल्लाम कद्भन महत्र करमंब विद्यार ॥** দীতার হরণ হলে যত কপিগণ। বিদার করিয়া তুণ <mark>করে নিরীক্ষণ।।</mark> তেমতি দেখিছে সব করি অস্থেষণ। र्शावत क्रमम क्रम वन छेलवन ॥ প্রতিমূর্ছি কুসারের করিয়া লিখন। भृथेक मृद्भुत हत्छ निमा निमान ॥ পাঠান কভেক দূত কত রাজ্যে বুর্তিনা। আসিয়াছি মহারাজ সেই রাজকৃথিয়। ।। हेश विल दास्कृष्ट द्राष्ट्रांत गमन। প্রমুখের চিত্রপট করিল অর্পণ।। हिज्ञ हे । पशि जाका भिष्मा निधन। গুর্কের রক্তান্ত **ভূপে হইল স্থ**রণ। मकरलत (धर्य त्रामा विक्रमरक्नाती। কত রাজ। তার স্বার্ট্টেকর যোড় করি॥ जनिभिद्ध हिन्द्रस्था दहतिहा मनन । এমত জামাতা হবে ভাগ্য কি এমন।। সকল রভান্ত পরে রাণীরে শুনান। প্রমণ কোথায় রাণী রাঙ্গারে হুধান।।

इश खनि तागी इस्ट दममें हिज्ञ नहे। भि रहित तारका खती करत हुए करे।। তোরক্ষের মধ্যে রাখি করিয়া যতন। শুপতির প্রতি কন হর্ষিত মন।। मिथ पिथि धिमर्थित मञ्जान कतिशा। বিশ্বস্তরে রাথ রাজা স্তোকবাক্য দিয়া।। রাজা কন স্থিরতার অন্যথা কোথার। রাণী কন ছাদু। হতে সর ফিরে যায়।। गেই কথা নির্ভরতা করিয়া রাজ্বন। বিক্রমকেশরী পুত্রে লন অস্থেষণ।। ভত্ত্ব করে প্রমথেরে না পেয়ে উদ্দেশ। বিশ্বন্তর প্রতি ভর হয় অবশেষ ।। সুপতি রাণীর প্রতি কহেন[্]তখন। দেখ দেখি প্ৰকাপতি নিৰ্বান্ধ কেমন।। বশ্বস্তর হৈল বর বিধির ঘটন। অন্যথা করিতে কেবা পারে সে লিখন।। अना भन अकात्रग क्ता श्र**ा**खन। তর্কিণী আন রাণী আপন ভবন দ

गरात्रांभीत्र क्वलिगीत मिल्पाद्रशमन । श्राद्र ।

কন্যা আনিবারে রাণী ক্রুরিয়া গমন 🕼 দৈখিলেন তরঙ্গিনী ভূতলে শয়ন।। বিহারের অনুরোধে যাুমিনী জাগৃত। ধরাতে অঞ্ল পাতি <mark>নিদার আ</mark>র্ত 🛭 একদুটে কন্যা প্রতি করি নিরীকণ। অনুসানে জানি যেন গর্ত্তের লক্ষণ।। (त्र लक्कन विक्कृत किছू मिथा। सह। গিয়াছে **অন্ত**রের**কো দুশু নাহি** হয় i উদর ভাগর গায়ে নীলবর্ণ শির কুচন্তর অতিশর পরিপূর্ণ কীর।। 🧸 নিত্য চরেছে ভারি পাগুবর্ণ কায়। শয়ন করেন ভূমে অলসের দায়।। দেখিতে দেখিতে হ্য স্বিক্ষয় মন। भरताधरत घटका धरत निविष् वत्रेग ॥ त्रांनी कम या लक्कन किंद्रिकितीकन। ভাবের বিভিন্ন ভাৰ একি ন্দালকণ া 🗟 (यहे ऋत्त शुक्रदेश की कांगा महत । সেন্তলে এসৰ কাৰ একি অসম্ভৰ ।। 🔆 স্থীগণ প্রতি হন ছলন্ত অনবা 🔻 🔻 था अनुसार्दन वहि त्यमन क्षेत्रन ॥

मिश्टर्त मख्टक हटना मुनाटनत योग।। একেবারে ত্যঙ্গ সবে জীবনের আশ।।। महावांनी कम वांनी वुक्त वर्ग हरफ । মাতায় করাত দিব কে করিবে রলে।। कि मास्टम जममुभ कटकी देकित नगर। অবিলয়ে পাঠাইব ফ্রভান্ত ভবন।। क्तिपं अति क्रम भारत स्थमह नहम । জানিলাম ভোমাদের নাহিত বাঁচন।। वीर्णितीत लाभा विभि इस श्रेमदीत । ঋষোর সহিত ভাবে আয় একবার।। চলিলেন বাগভৱে বাণী চক্তক।। 5अक्त **गंभेटन ट**यमं शत्रम ठक्कला ॥ স্থিগৰে বাণী সনে জ্ৰুভগতি যায়। ভরজিণা নিজাগত রহেন তথায়।। কত দূরে গিয়া রাণী ভাবেন কি দায়। मेक्नशर्व जार्य भरत यांव वा तकावास ।। निधिशारि खित मेरेस निटकाशास क्रम । বিবরিয়া কহ সবে সভা বিবরণ।। कात बाता हत्वा अहे घेठेना चंठेन। थनका कहित्ल हर्द निक्छे गत्र ।। স্থীগণ সবে কন করিয়া স্থাণ। क्रिया यनि कहि भटन ना शाव आखन है।

কন কর পরশিরা মহিবীর পার। गडा 🐗 कृष्टि यमि ठक् यन यात्र ॥ সংব'মার্ক, ভাল মন্দ আমরা এ জানি। वक मिन डैंब्रिकिशी कन बहे बांशी। পদ সেবা অতে তাঁর করেছি শরন। जिञ्च कट्टन एटना अम मर्था भर्ग। শतीत्वत मधा कि इस्तरह व्यक्त । निज्ञा এरम निमि भिर्द में छ इरन ऋथे।। अक श्रांत भक्त खान तथरक इरन शाल। সবে মিলে গোলেমালে করিবি পাগল : একেল ধাকিব সীমি আসার 🛏 খবে। ভোমনা সকলে গিয়া থাক অন্যন্তবে। কহিলাম আপনাকে একাকী রাখিয়া। কেমনে দুরেতে রব অ**স্থ শুনি**না ॥ তাহে তিনি ফহিলেন তাহে নাহি ভয়। এই 'হতু ধাক' হয় বিভিন্ন আলয়।। অদ্যাব্ধি হইল সে মাস পাঁচ ছয়। उपविध अक शृंदर थीका नाहि इत्र।। পাজাবহ হয়ে আছি অধীনে যাহাব। তব আজা অনুসতি শুনিতে ভাষ্ট্র 🛚 ।। সেই আজা অনুসারে থাক। অন্য **যরে** নাহি জানি এ ঘাতনা ছইবেক পরে।।

অষ্টন ঘটিবেক কেবা জানে আগে : ভাবিলেম ভীত হয়ে পতি পাছে রাগে।। गाहा सानि कहिलाम এই স্বিশেষ। আপন উচিত যাই। কর অবশ্যে॥ রাণী অভি বুদ্ধিমতা স্থনীর স্ববেধ। সখীগঁণ প্রতি ফান্ত হইলেন ক্রোদ।। ভাবিলেন এ বিষয় যদি কৃত্তি ভাবি : কন্য, প্রতি নরপতি হয়বেন ভারি।। সকল মজায় বাখা জামান উচিত। कना। स्टान रथा शहर भारति न वहिन ।। দেখিলেন বিপ্ৰীত হয়েছে হিম্ম। আমি ভিন্ন ভূপতিকে কার সাগা কয় : কি কৰিয়া বিব্যৱস্থা কর বাক্ষেপ্রে। **। इन्हर्म के की**र्न इन कलक गांत्र ।। নী কহিলে অপ্রবাজ না রবে কথন। অপমানে ত্যুদ্ধিৰেন ভ্ৰম্ম জীবন ৷৷ এত ভাবি মহারাণী করেন গমন। गुजाधात्र हरन (यटक ना हदन हदः।।

অথ রাণী চ**ন্তাকলা** তর্ফিণীর গর্ত্ত অমুষ্ঠান জানিয়া নুপতির নিকটে গমন।

পরার ৷

রাণী গিয়া রাজাধরে কন সমাচার। থাক রাজা লয়ে ভূমি প্রতিজ্ঞা ভোমরি।। দবে মাত্র এককনা এই মাত্র দার। তাহার উপর এভ তাজিলা তোমার।। घरतर छ समर्था (इन का देव ए (मर्थ । जिल्लक कथन कुनि नोहि (नुध (हर्स ।) युवर्री (गोदन कांद्रल ऋ। महस्य धूर : प्रवर्ध राष्ट्रांश होती भारकान कड ।। পার পায় শত্রু কেরে দেবিয়া ঘৌবন। त्नोदन श्रक्षाद्य भना इस खना मन ॥ ভাদের মাহিক দোধ নম্মেতে করে ! ভার জন) সমস্গ সাবধান,ডরে 🙃 ্তামার কন:ার শ্রেড নাহি নয়। লেখ। त्न हे रहे **क्नारक ए**ठ पृत्रिण ५ ८५म ॥ ८१ मा १८४ । गटह भाष ३ इंदन कृति एक । तिहा (थरक कोई भव क्हेंग मिथिए।। · মহারাজ কন কহ রুতাত ইহার। 🎁 🤺 মহারাণা কুন বাণী ছুড়াগ্য আমার 🕕 🖔

আনিতে কুখারী আমি করিয়া গমন। দেখিলাম ভর্জিণী গর্টের লক্ষণ।। यरमध्य विस्तर्भ अधे कलग्न श्राचात । নক গৰ্বা থকা হলো ভূপতি ভোষায়।। শুনিয়। নিশুৰা রাজা নাহি দরে বানী। অভিমানে তুন্যনে অবিশ্রাম পাণী 🛭 অংগানে অভিমানে ইতেন এমনি। व्यद्शि विषयुत्र शांत अभाग अभाग ।। माहर रहेशा वस बदल साहि वय । ष्टिहिंगः नणाः **छे स्मळ**्षानस्य भर ।। তুণাত কছেন গত ক্রিলান প্রা ঞগমি গরল আফি করিব জকণ।। भीतम् थाकिशः बाग्ध २८१ वच पता। বংশেতে কলঙ্ক ভবে শ্ৰু দিন বৰ্ম । विने जन धारतांकन नाहिक जामात ! अशांत कनक मिक् किटन इन भात ।। না রাখিব প্রাণ আরু কৃছিলাম নার। অপ্রতে মৃত্যু ছিল কপালে আমার ॥ মহারাণী কন রাজা এই কি বিধান ৷ বিপদ শুনিয়া বুঝি হারাইলে জ্ঞান ।। পরাণ ত্যাজিবে তুমি গরবা ভক্ষণে। ন। রাখির আসি প্রাণ তোমার বিহনে। " delt "

चौंशनि मिल्लिश नवः मध्योत मधादि । रेश्कान भड़कान अककादन शांदर ॥ " **সাহ**দ করিবে লোক পড়ি**লে** বিপদে। অর্পণ করিয়া মন অভয়ার পদে ।। कांनियां विश्वन ठाका ट्रांट विश्वमान । মাজি বেন তাজে হাঁলি হেরিয়া ভুফান ।। আমি এক উপদেশ কহি মহারাজ। তা হলে ঢাকিতে গারে কলক্ষের কাখ।। কোন কথা উত্থাপনে নাছি প্রয়োজন। তরকিণী বিবাহের কর আহোলন।। कनाति विवाह एम् विश्वस्त तरम् आविश्वक माहि जना दकांग आदिना नात "। এ প্রকার কর আশ্রু তারিবরে নিশ্বর i পশ্চাৎ করিব উক্তি মুক্তি যাহ। হয়।। ভূগাত কংশন এই যুক্তি হৈল সার! পুরুষ হইতে জীর বুদ্ধি **চমৎকা**র ॥ कहि रानी बाकबानी नाम मिल शारम। এ র্ডান্ড অন্য আর কেহ নাহি জানে।।

অথ সহচরীগণ প্রত্যাগদন করিয়া রাজকন্যার গোটব স্থগেটির করায় রাজকন্যার আংক্ষণ !

সম্বার ৷

निश नव (यम भव विवय वम्दम। शास्त्रीं हा विकास जानकारीय सम्बद्धा । দেখেন নিরোর ধনী আহে আচেতন। काकाश्यकि कति दैरित कतिमा (एउन ॥ রাণ্ডতা কোধায়িত। হয়ে অভিসয় : ज्यम् वस्त्व ८६६६ मधिन्दर क्या। কিলেতে বাড়িল হালে। এক অহঞ্চার। কাচা নিত্র। ভঙ্গ ভোরা করি'ল আমার॥ भगज्ञाः शीन कान कांत्राल व्यापतः । भनाशास डिटर रेनस्य मङ्क डेल्हा সন্ত্ৰী বলে নিছা ভাজি ভাব আগে পাছে। अदनवादं रम् **मृत्**त वामा शूक्ति। আদিয়া দে ঠাকুরাণী আপনি হেথায়। আপনাকে দেখেছেন নির্দ্ধ অবস্থায়।। অমুক্তাবে জেনেছেন সকল লক্ষণ। (म नक्त सनका । । दह विलक्त ।। তোমা হতে প্রেমতত হলো উজাপন। गरुप्ती गर रहल-तिसक्त ॥

রাণীর সমূত্রে বাক্য করে সংখ্য করে। स्मर्थना जाव (यम क्रतन मध्यात ॥ আমরা তোমার হয়ে অসত্য কহিয়া। पिशां कि विषय दादका विषय कहिया।। तीज क्रमा। क्रम एएत इत्युष्ट श्रद्धांन । কি হবে ঘটল সথি একি স্ক্রনাশ।। धननी (मर्थन खुन थारणत मगान! क्यान (मराव ग्रूथ छोड़ निमामान ।) পিতা জিনি পূজা তিনি গগত সংস্তের। कामान कान्द्रप त्थांछ। मदम मिदम औरह ।। আর নাহি কালাম্থ দেখাৰ কাহায়। कीदन शहरल नशी जीवन कुड़ाश ।। এখন কি ঘুণা ছিছি ২০৩৫ে অন্তরে , এমন ডার্ডর্জ যেন ভারতে না করে।। লাজৰ এ ছার প্রাণ ভাহে নাহি দায়। রাহলাম ক্ষুব্যার তার অইপকায় ।। व्याननाय शामिनोटड व्यामित्म (हशाय । পায়ে ধরে আমি ভারে হইব বিদার ।। (मथा यमि नाहि कहि (म जदनत मदन । নে কিন্তু ত্যজিবে প্রাণ আমার বিছনে।। ক্রাজ লি নাবিকার দিয়া সহচরী। ্রেরাস পার ছঃখ 👣 কহে লাজে মরি।।

শিশুন্তব একি ভাব ভাবনা কে বলে। কি পদার্থ প্রেমতন্ত্র নির্মন্ত না মলে।। এই মত আক্ষেপেতে দিবা অবসান। অভাচলে অবহেলে দিন্দণি যান।। গ্রেমণ এ সব কিছু লা পান সন্ধান। ভর্মিণা সন্ধিপানে করেন প্রানা।

भाग जब किया मन्दिरंग अभावत श्रमा ।

मीश दिलामें।

व्यथ्य जायूनवान, त्रांतन तातन वादण वान,

निवर्ष ना इस कर्नाहन।

विलग्न नाहिक मस, विভावती नाहि इस,

निवा पृत्थ्य करतन नमन । ।

क्षण के कांच्ली वृत्य, छारकन मरमत ख्रूर्य,

व्यमधा माधन मरम ब्बरम्म।

त्रभीत व्याकृत्य, व्याक्ष्म कित व्याव्हानन,

क्रित निम्ना व्याव्हानम्हों हो हो है।

आंगामाज यात्रव्यात्म, हान्य हिन्छ मे कांच्या,

क्रिसूरी महहती मरम।

अक्षित निम्ना व्यावभागनंदन

man half feet

প্রথাথ ও ভরজিশার আক্ষেপ।

প্রার 1

काक शृक्ष प्राच अथा ताकात क्यातो।

त्म निर्माण तम नाई एम्ट्यंन मताति।।

वियवपान विम एक सिर्म के किया।

विभारमण युवताक वितम कर्मा।

जारान यमाशि कान सिर्म के इसी।

भारतीन व्यक्ष हर्द कर्म वित प्राच

রসবতী মুখপানে চাছিয়া অমনি। বিনয় করিয়। কন শুন স্থবদনি।। किरमत कांतरने অভি উतास वमम। यक्ति यहत अस्थि छः तथ मः इ यन । হইতেছে অভারেজে কাদনা আমার। व्याद्यचं ही हत्। विदय सहेटल माल्य ।। অং হেল। এত মুদ্ৰ কর অবংশলৈ। हातिया विकास एक्ट एटरा गांके एक्टम ॥ অতি মানা রাজবাল। কন বীরে ধারে। विना त्यस्य बळलाड प्रदेशांद्रक निद्रत ॥ মামার দেখিতে হেখা আসিয়া জননী। গ্রিয়াছেন জেনে তিনি সকাম আপনি 🖰 সাও। পিতা উভ্যের হয়ছে গোচর। गुनान नष्टांश ५८श कारण करनत्त्र। - भष्टात की बटन जात नाहि खालाकन । অভিলাদ হইতেচে হেরিতে শ্যন। অবাহন বিন। শাব তাহার সদন। একান্ত চিত্তে তে ইহা করেছে সনম।। আমায় না দেখা পেতে আদিয়া এখন (**क्विन तरहारक थान (इतिरक्ष नमन ॥** অপরাধ প্রাণকার্থ করিয়াছি কত। मानी दत्र निमास (मंड खेंब्र दशत गर्छ।।

এখানে ভোনার থাকা ভিল জর্জ নয়। অধিলম্বে চলে যাও আপন আলয়।। करें कथा छाना नाहि तदव कनाहन। विशर दिशांक किन शतार कीवन ॥ অভাশী তেজিবে প্রাণ তাহে নাহি খেদ। विद्रभाष कोत्र भ छाटल छोगोत विद्राहम ॥ মরণ বিষ্ণেদ গোতে বড় কিছু নয় ! বিচ্ছেদ যন্ত্ৰণা হতে সূত্য সংখোদয় !! প্রমণ কছেন প্রিনো কছি তব আগে। বাখিয়া ভোমায় প্ৰ আলি মতি আগে।। প্রাণের অধিক হও ওরে প্রাণধন্ম আমার করেণে ভূমি তান্ধিবে জীবন।। আহ্বকা পলায়ন এই কি বিধান। যে পারে একায় তার নির্দ্য পরাশী। দুত মুখে প্রচেমার তব বিবরণ। ভাবিয়াছি পিতা মাতা করিয়া বর্জন।। धानितक्रम (मानितक्रम गट वज् नर्जन জ্বালার উপরে ত্বালা দর্যে প্রাণক্ষর।। তুজনা হু: খিত জাৰ ইইয়া বিহান। তাহার বর্ণশ্ল করা শ্লান্ত স্কুকটিন।। किक विरक्त (यन यम्नात कन। त्शाभीत नग्न करन इस्त अवन।।

(महे मछ छे छ दश्च नशरनत गीरत। ধরণী উপরে ধারা বহিছে অধীরে।। তবঞ্জিনী ক**ন আ**র বাচন বিকল । श्चिमध कर्टने श्चिरः मद्दर्भ गद्भन ।। নিতান্ত ত্যন্তিৰে প্ৰাণ ক্রিয়াছ মন। रवाशीयत्न क्रवे कत्न डाजिन नोत्न ॥ অকারণ কি কারণ ভিন্তা বল ভার। प्रभवात कराइ (कारक् करें। विमाशः॥ খর শের জাতিরিক্ত নাহি সংব করে। थिरकत्र रुपुर एउटन पुकुर ऐक्टा इस ।। ঘোষণা থাকিবে এই পিনীতের রীত। বিজ্ঞোন প্ৰক প্ৰিয়ে মূৱণ উচিত। প্রজ্ঞানত ওদ্দিশ হয়ে। প্রবেশ করিব প্রিয়ে নমিধ উভয়ে।। कुलान गतिय। निय निरम्भागत कांकि । শাৰত জীবন রবে নিলনেতে থাকি।। যতক্ষণ বেঁচে থাকা সকলে স্বার । নয়ন মুদিত হলে কেহ নহে করি।। ত্বলম্ভ অনলে কেন মৃত চেলে দেও। विभूम्भी विभूम्धरथ (इतम् कथा क्ष ॥ वषन हुत्रन कति श्रति छहे कटतः। त्रकिरांला मह यान भग्न**्न**त्र घटत्।।

जोड़। द्हित गहरुती (य रिशास्त हिल। िट जेत_. शुख्ल नाम त्य चारन तहिन।। নুস্বতী রস্কাজ প্রবেশিয়া ঘরে। তুই জনে বসিলেন পালফ উপরে ॥ মনোমত মনমথে করিয়া দমন। মনে ভাবে পিরীতের হলে। উজ্জাপন ।। मनन सिधन एटल वांटन बांन कस्य। অবশেষ উভয়ের আতঞ্ক উদয়।। বামিনী অর্হেক গত অনুমান হয়। স্থী যত নিদ্রাগত জাগ্রত উভয় ॥ প্রমধ কছেন প্রিরে শুন্হ কথন। আ্রি এক সংযুক্তি করেছি মনন।। প্রতিক্র। করিয়া বেই না করে। **পুর্**ণ। **दर्देल श्राप्तका एक स्मिर्ट मह्ना।।** তোশার প্রতিজ্ঞাত্বই ত্যাজিনে জীবন। অনুকণ্প তার বিধ্রি করা পলায়ন।। পলায়ন মৃত্যু তুৰা নাহি কোন ভেদ। अंदर्गाहत नाहि छोत मृथ यात त्वम ॥ **উভয়ে অদৃশু हुत इटहा ছম্মবেশ।** गराताक ताका रहे यात जना दम्म ॥ यनानि मन्न हत लेख (पृक्ष भाग त्रमवर्की कर्म किसी भारमन रहामीन

যুক্তি যাহ। উপযুক্ত করহ ইহার। হইর স্বীকার ভাহে নহে অস্বীকার।। পলায়ন করা বদি হর যুক্তিসিদ্ধ। निकिना भारत श्रहत स्रिक्त ॥ পদরে সমুর হও-ওেন মহাশ্র : শুভক শেষ্ণিল দ শাকরাহর প্রর।। अभय करहन अिटन देवनी कब भन। करत्रिष्ट मानय योहा कृति मुळाडेम।। **অভঃ**পর রাজপুত্র স্থির ফরি চিত্র। লেগনী করেতে ধরি আরম্ভিলা চিত্র ।৷ আপনার প্রতিমূর্ত্তি কিখিয়া কুলার ৷ সকল বুঝান্ত প্রিচর নিম্নে ভার।। সেই চিত্রপট রাখি পালদ্বের পরে। ষারনক্ষ করি দৌহে পলায়ন করে।; **डेडर्र राडी**ड बात बना नाहि काटन। অশ্বশালা প্রবেশির। তুই অশ্ব আনে।। रस्थादत कादिताम् । स्टब्र **प्रहे** कर्ना সদাগর বেশ ধরি অমনি গীমন।।

্রামাণ ও তবঙ্গিণী সদাগরের বেশ ধরি অবন্তিরাজ্যে গমন :

1

গমনে বামনদেব করেন সার্ব। বেপেতে চলিল অখ্নক্তর যেমন । नम नमी পांद इत्य शिक्ष खतरमा। একেবারে উপনীত অবন্ধির দেশ। সে বাজোৰ অবিপতি থর্মাপ্রায়ণ। অধার্শিক প্রতি যেন দিউয়ে শমন।। রামরজো নাায় রাজ্য পালে ক্ষিভিপতি। দরিক ডঃখীর প্রতি দয়ায়িত অভি।। তাহা দেখি তুজনার হয় মনোগদ। मिहे इत्त विश्वादित विक्षा मिन क्छ।। वड़ अक वर्षेत्रक थाम मस्या हिल। অশ্ব বান্ধি তুই জনে তথায় বসিল।। কোত্যাল আদি কয় বাজায়ে দেলাম। আহাছে পৌইছ বাবু কেদর মোকাম।। कारन ट्यांश जन्मि मुक कर दक्ता नाम। কেন্দ্র রাজে আরম্ভিইয়া হার কোহি কাম ।) टामटलाक अंतरमनी कट्ट मनानत्। উপর মূল क घर खंडल गरत।।

মর নাম রয়বর এছি লছ্যীরাম। शकाणि हार्यता उनरका मन्त्रशिकाम ।! কোত্যান নাজে হি লে ব্জিশ ভাষার : निर्मार्थेत क्रिया एटका मिनटरेर एएनत स एं यात त्यं स्वरंग करह ्यो ए क्रायनांत । हेगाम हासिक गान्स। इति यहनार ॥ অর্থ হলে দেখা ডাই ম্পারের নার ৷ অর্থ পেষে জমাগার জাতবব্দার 🥫 সদ্বাহ বলে চাই ফেরাফ জেফোম : अस्ती जरिएक बांद्र हन्युलाहरू हाम। স্পত্নেম সদাগ্রে স্মিন্তার করি। ार्याहेर' वाष्ट्रीनिका अञ्चल साम्ही।। কেরায়া করিয়া বাটা রাজার ভন্ম। क्षारिकार कुरू जन सद्य कुरू ३० ।। भाग मानी शामिद्यान एखामा कनाव ! <u>एम है</u> (मर्ल एम्ट्रिक् इस पुजनाश ।। वानगात (च वानगा भूडान अहुत। मिता निर्मि नमजीर मन्द्री (शटह मूत्र ।। त्य **जारन गद्यान** त्मेरे एक्टन दम्य मदन। প্রকাশ্যে বেমন রুখ তা হতে গোপনে II एनई ऋ। त्न मिथ्रगरंग পड़िया विभारक । मारम भूतिया नाहि सानाय काश्रंदक ॥

এ সৰ বৃত্তান্ত নাহি লানে কোন জন। ब्राका ताना विवादहत करत बादशाकन ।। বিশ্বস্তর হইবেন তরক্ষিণী পতি। লয় হির করি পর করেন ভূপতি।। আহলাদে আহলাদে চেলে বিশ্বস্থ্য ভাষ সমোগত ছিল খত মনেতে বাড়ার।। বাসর ঘরেতে যেন কংগোপকথন। তেমতি প্রকার মন সর্বাদা চালন।। विवादहत शृत्लं हम (मश्रकात मन। ভেবে দেখ সকলেতে আপন আপন। পার্নাল হরেছে ছেলৈ বিবাহের দায়। আশার আশ্রয় হরি সামিনী পোচার।। প্রভাত দময় রাণী ডাকি আয়োগণ। शादबंदक इद्विका प्रदेश के लोगिक मन ।। यजनभूद्धक चाँछ यदत चौँनाहेशा। -বাটীর ভিভরে লন শঞ্জা বাজাইয়া 🖁 😓 গায়েতে হ্রিদ্রা স্পর্ক করি হল্পধনি। কানমুটি দেন তারে কোন কোন ধনী।। এক এক ছু ড়ি থাকে বড়ই বজাত। कांनसूषि मित्रा भागों करते तक्तां ।। বিশ্বস্থর পড়ে এক বক্ষাতির ঠাই। त्थाना मिन्ना कानगरन छात मन्ना मारे।।

আনুভারেকে! মুগ করে রন বিশ্বসর। ভারমেনে কীল পড়ে পুষ্ঠের উপর।। গায়েতে হরিদ্রা আর জাঁতি দেন করে। कि। भार विश्व । यस उर्ज भेगी उद्या ।। रविष्ठ इसा याच यथा उनकियो । अञ्चलाची भक्तानी भकाद मिनी।। रामात् प्रस्मा विद्या हाहि विविधारम । अभिवानी कम सानी अनाः दरात्रशास्त्रा मधीनन तदन क्य कवि समस्ति। নিজাপিতা আছে মতে: কুগালী কোমার অহিক অবৰ্ণি দিবা ছিনি নিডা যান। নিদ্রাভক্ত নাহি হয় করি অভ্যনান।। আমরা ওয়ারে বেডে নিয়েধ তাহার! 🛭 একাকি থাবেন রাত্রে বহা কবি ছার।। मधिनदेश नाहि कादन तानी कादन गरन । कालाभुगी नव कर्म करताइ (भाभरन।। यांशे दशेक हिन्मभात पूथु मिटन शदत। উলটিয়া পড়িবেক আপনার গরে 🔢 তর্জিণী বলি সবে ভাকে উচ্চস্বরে 🛚 থালি ঘর রহিয়াছে উত্তর বেং করে।। ব্দেক ডাকেতে যদি না পান উত্তর। **अरु** ডিক করি সবে হন নিরুত্তর।।

কপাট ভাঙ্গিকে রাণী দেন অন্তমতি। शमाबाटक दशदेन बात यरङक यूदकी ॥ প্রবেশ করিয়া সবে নিরীকণ করে। রহিয়াছে ছার বন্ধ কেছ নাটি ঘরে।। গুরুমধ্যে তর্ক্সিণী দেখিতে না পায়। प्रवास करणन हानी तल माहि लास।। সনে কন দেবলণ করি আগমন। **उद्रोजि** भी भतिरम्भ रूप्त नाम गत ।। সমুষ্য এখানে নাহি প্রবেশয় ডারে। (मयडा बहेशा अहे जीह कमा करता।। विवाल करवन उन्ती कृति होहकात । হাবলা কে শেলাঘাত করিল আমার 🛭 खिश्रम कात चानि करति है इत।। आश्रांत की वस धर्म कि करत इतन ।। वरमहाता है बी नी हा बिनिटन होना शालक स्थाद शहे एक शिवाद शान 🚣 करत्र ७ कतिया भागे कति मितीका । ष्यवाक् इहेश कर ज षात्र (कमन।। ভাবিলেন রাজদন্ত চিত্রপট থানি। এখানি পুর্বেতে আমি কভই বাঝানি।। এই চিত্রপট ছিল ভুরঙ্গভিতরে। ভুর কের চাবি আছে আমার কোমরে া

চিত্রপট সেইখানি কে রাখিল আনি। घटि गव अगुरुव कि इद्ध न जानि।। अश्रम कि क्य काफी विया विश्व हत्त । নে আছে ধ্রিতা মালি ঘানির জিভারে 🔢 ধর্মা গেল ভাগির গোল গেল অহজার। কলকে প্রতিল দেশ শেষ রক্ষা ভার ।। বুদ্ধির মার্ম**র রা**ণ) অভি বিচক্ষণ গ অবিভাস চলিংসান নৈক নিকেডন চ क्षान अपर (यन पृष्ठ प्राक्टि । सि**रित**न विकाश है प्रशास क्र**रम**रक । পট হেতি বাজে প্রী চন অস্ত্র : क्षत्रे शामि त्यार्थ इ^{त्रते} मुक्त गरिक**क्**षा ভথানি গমন করি হাজার নিকট। **प्रुक्तव**ात (फरन दिन पूने श्रीन शुक्रे । क्टरन इंखांख ग्र गुल्लि ग्रम्म। পদেবতা আদিয়া কল্যা ক্রিল হরণ।। পুহ্মধে। তরজিণী নাহিক আফার। भक्षा अपृष्ठे करत स्मिव किव काव ।। বিনাদেৰে অকুসাৎ হলো বল্লগাড। विन बानी भिरत अनी करत कतायां ।। স্থই পট মহারাজ ফরিতে গিলন। ্ৰিক প্ৰতিমূৰ্ত্তি আছে ছপটে লিখন।।

নির্থিয়া চিত্রপত্র করেন মনন। বিক্রনকেশরী কত স্থানি প্রেরণ।। প্ৰমণ কৰ্ত্বক পট দেখিতে দেখিতে। তাহার নিনের লেখা দট আচ্মিতে।। এঘটনা সজ্ঞাটন সকলি বিস্তার। আপনার পরিচয় নিমে লিখি তার।। গন্ধার্ম বিবাহ করি হয়েছে প্রাক্তন। শ্ভা আরু সরমেতে করি প্লায়ন ট পড়ি পাতি নরপতি হইয়া বিশায় ৷ নহিষীর প্রতি কন (গবতা তে। নয়।। নেবগণ অগেমন ভেবেছ নিস্কয় 🛊 তাহাঞ্জেম সে বিক্রমকেশরী ভনর।। ক্রিয়াছি যার জন্যে পুর্বে অন্বেষণ। সে জন এ জন ৱাণী শুন বিবরণ ।। ৺সর্ববিবাহ করি করেছে এছণ ৷ ष्रमाथ करतम नाहि (दरमत वहमा। চিত্রপট মধ্যে সব লিখি বিবরণ। তাতকেতে পলায়ন করেছে তুজন। এ কথা শুনিয়া রাণী হাত দিয়া নাকে। বলে বিদি হেন ক্লিফি হারাই বিপাকে॥ হায় রে বিধাতা এত করিয়াছি শাপ। ভাহার কারণে দিলি এই মনভাগা।।

अकुरण दांदतक यनि उत्तक्षिनी कत्। ए। इस्म कि अपूर्वि जात चीटना हम । त्मानात श्रृक्ति नाणः तथिंव द्वांशाप्त । তোর জনো অভাগীর প্রার্থ কেটে যায়।। क्षांहादक ए सः कृष्टिक् राज्ञात कर्रहर । श्राकिएल कीत्रम याष्ट्र। क्षत्रा लि कीवम ।। এমব রন্ত্রান্ত যদি স্থির: জানিত (अनावारक धार्यभेडे खाँगां के कहिला। नका एएक सम्भीता कर गणवास । त्रहाती जिस दुनि हरसम्ब अन्ताम ।। দ্ধিগণে দৰ জাগে কেনে কল জার: অপ্রকাশ্য রাখিলাতে ভরেতে তেগার ল कालाकालि अवि गर्य सम्बन्धित (१८६ । त्नाय याणि एक दक्षांतात भीकांव शारतद्व ॥ याकुल कि काय अभा विश्व करा मन। . शकुरन कुलौर कन श्रीयस्ट्रन । ভাৰতা বংচিয়া আছে তান। তুই জন। ত্ববিত আনিব দোঁতে করি অত্যেশ।। আপাতত বিশ্বভূৱে কি করি উপায়। এখানে কর্ত্তবা নয় বংখিতে উহায়।। कि कृतिक मन कुः थ रूटमा विश्वस्त । निमात्र केतिव मटम भति छुछि कटत ।।

রাণী কন যাহা জান কর সেই কার।
ভাল মন্দ আমি নাহি জানি মহারাজ।।
ইহা বলি মহারাণী নিজালয়ে বার।
মহারাজ বিশ্বস্তরে ডাকিয়া পাঠান।।

-

মহাবাক নির্ম্বাভের বিশ্বযুরের মৃতিক কথোপকথন।

अवान :

পুরোধিত পুত্র আলি আশীকাদ করে : তাহারে কহেন রাজা আন বিশ্বস্থরে।। ভা**ন্ধ আন্ত: অনুসারে পু**রোহিত তান। থাবাহন নুপতির বরেব শুধান।। নিশ্বস্তুর কন লগ্ন স্থির কর রাজে। পুরোহিত পুত্র কন আগমন মারে॥ नद श्रेन करह नश्च असे शास्त्र रहा। ভাবেণীৰে ৰাজন বিভি চল মহাশ্য ।। निवरण दिवाह हरत जासूमान हता। পুরোহিত পুতা কন গরুলেতে ক্য।। एलिट्रनम विश्वस्त यथात्र तास्त्र । রাছা কন মিউভাবে গুন বাছাধন।। আমার প্রতিজ্ঞা যাহা আছে তুমি বানী তাহার জন্যথা আমি না করি কর্থন।।

शाद्वदक यनाशि कान प्रक्रिक देवलक्ष्य । ভারে না বরিৰে কলা এই নাত প্রা ভোমার নয়ন ভারা দুগ্য গেন ভারা।। मच्छान्दिन चमचा के शाहराह काहा ।। कहिराङ्का विषया अम महाणा । लतिहांग कामां जात्र गरन निरि नय।। বিবাহ না হবে ভবে মরপতি ক্য। मझीलन सर तिर्भ क्रम समान । বিশু বলে ছিল বলা আগ্রেকে উঠিত। চলিয়া গেডেন দেশে চইয়া ইঞ্ছিত।। গালেতে ধ্রিসা দিয়ে বাড়াইলে আশা ৷ এখন কর্তবা নয় করিছে নির্পেণ্ । रक्षम काँत्र कार पूर्णि कर गर्दे भारत । कानसूकी हिल करी जानांत कशास्त्र त गलदर्गीम क्षेत्रिक रिया सुरूत होत्रा इस । काम मुर्च किर्द्र यात रुखे महोगोत ।। ষ্ঠাকেণ করিয়া বিশু ক্লিডেরে কণ্ড। भागाक इंदेटल इंटमा मिखनात वह ॥ क्रिक निक्रे सार्ट्स द्रहर शायान। মাতাখুঁড়ে,ভাতে আমি তাজিব পরাণ*না* अवस्था शावनार मद्द विवासन उद नमा क्रिश कम अगदह प्रोक्त में

্রতাত্যাগী রাদ্য ভূমি মিথাার গোঁষাই। ী সমুগত হলে তব পরিত্রাণ নাই।। যে না জানে সেই জনে করে অনুরাগ। কলত প্রকৃত ভূমি তুল্নি রুনে বাগ**া**। পিতা হয়ে ছুহিতার ধর্মা নট করে। তার মত পালী নাই ধরণি উপরে।। ष्यागात बुहिएक एव क्नानंत मनन । अञ्चिरांनी स्टब्स क्रिकत निराज्य ।। ভূপতি কহেন বাগু কত বল আর। ইক্ষা গিয়াছে রাজে বিবাহ কন্যার।। वैद्धादवी ≢दत कना। कुदित यमि नदत। --মেই সে হইবুলু**ড়ি আ**ছে পূ**ৰাপ**রে ॥ त्य कर्षा विजीय बात्र जात नाहि रश । বিশ্বস্তুর চলে যাও জাপন আ**ৰ**য়।। **क्रक्षा श्रमिश विशा क्रिक्र स्थाप** ব্ৰুগথাত হৈল ধ্যন মন্তব্দে প্ৰন ॥

ं विश्व निश्वभाव रस्य किस्त यान यस्त ।

নয়ন যুগলে ধারা অবিজ্ঞান করে।।

श्रायण्डलिये स्था गाण्डल केर्यालक्षम । श्राय । त्रायल्खा तास्कृतमा इटस ग्रहण्डले

नाटमानव नम प्याटह मिक्स्टन छोहात । তাহার দক্ষিণ স্থান বড় চমএকার 🔢 শেখিতে স্থন্য অতি দিবিড় কানন ! প্রবেশ করিতে নারে রখির কিরণ 🐠 কাৰির আ্তেম কতে ভাতে বাপ্যমান! **विजीय दे**ननियात्रका ८३न कुना ऋगा।। ছেরিয়া প্রমথ নেই মলোরম বন। षाहिएक हरेल यम प्राप्ता कावन ।। उप्रक्रिती मध्यपंदन कत् वर्षनी (उ) **उ**त्रिभी कहित्यम यादित (पश्चित्र ॥ श्रीमर्थ करण्य थिएस (क्यम दियान । क्रमनी श्रीकांत श्राण तक करत भवान ॥ ভয়ানক পশু পাসনী ভারণ; ভিডরে। क्शन कि डेश्मर्स चुल जग करत ।। বিশেষ আমার তাতে অভি ছালময়। তাহার করিবে প্রিমে সর্বলাই ভয় ।। একেত রমনী ভূমি গর্মকী তার। সতত পরত শক্ত কিরে পায় পার।। भरण नाती विवस्थितः मायुर वटन । ट्यामारत महेशा त्यच्य महि मदत सम ॥ _ **একাশ বনিতা সহ থারখো গম্ম**া **डाहांत्र मानकी हरत शांशिक वार्तन**

অবংশ্য উৎপাত কডাৰাখ্যা নাহি ভার ब्राटनक श्रेट की रूरत ज्यामि दकान हात ॥ কানলে লইয়া গেলে ভোনার পাবনা। रहरः भौकाद्य स्थित्य जाण्डि यांबना ॥ রামার ছহিতা কন করিয়া জন্দন। वौरवक (मधिन नार्ध कामन (कमन ।। भूबिशदण एटशांचरन यहहम भाषना । শুনিয়াছি দেখি নাই দেখিতে বাসনা।। भर्य माती गिर्दार्क्षण धर्मन (य छत्र। भूटक ८क्टन नाहि घटन इहेना हिन्छ।। ভবে কেন স্থাগর সাজাসনা নারী। ফি কারণে আনিবেদ রুকিবা**জ নারি** ট সেই ভাব এই ভাব করি অমুভব। অত্যেতে যে ভার ছিল ব্যত্যন্ন গে**খাব**।। श्वारतम आक्रि हरण जात वा कि हरन । चुँदन इन करत वन मा कानि कि करव ।। **अथन ज शहत कहे छेश ज**त एहे ! আহে কত দিন থেলে আর বা কিহল।। यमाणि आंभात कथी कत्र (रूलन। প্রার ভাজিব আমি করি অনশ্র বি **बाइ मठ**ंकर। कड स्वामिमीत सुदर्श के वाश लिया में बुध्य मक महनाब्दर्य ।।

করেন রাজার স্কৃত করিয়া আক্রেপ।

যদি কালী কুল নেন বাঁচিব এ থেপা।

হরেছি পুরুষ হয়ে নারীর অধীন।

এ নক্ষটে অব্যাহতি পাওয়া স্ক্রটিন।

ছাখিত হইয়া পরে য়ামার কুলার।

শীকারে নইরা ধেতে হইল শীকার।

.. इ. मथ ७६ जिनी इ. **स्वया** गमन ।:

भवात ।

यानिनादक तासभुक साहिन श्रीकात ।
लक्ष्म भगर यान मिश्रादक भीटात ॥
हिन्दिन युवर्गक गुन्हि गरहि ।
यानुनार উঠে গোল फग्रानक स्माह ॥
निक्ता मह्मा इस उथाह श्रीकात ॥
भूगेक्क नदम करक स्वाकारन यात ।
भक्ति श्रीकी मर्ग नगुर्थ विकास ॥
ना मानिया स्मा मिश्रा करिया श्राम ।
सामिया स्मा मिश्रा करिया स्मा ।
सामिया स्मा मिश्रा करिया समा ।
सामिया स्मा मिश्रा करिया समा ।
सामिया स्मा मिश्रा करिया समा ।
सामिया स्मा स्मा स्मा करिया समा ।
सामिया स्मा स्मा स्मा करिया समा ।
सामिया स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा ।
सामिया स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा ।
सामिया स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा ।

200

অভির্ন্য স্থান হেরি তরজিণী কন। किছ किन क्या ८६था थाकिएक मनम ॥ মুনির পদ্মীরে করি মাতু সংঘাধন। অভিনাৰ করি যাস এই ভপোবন। हेरा जावि कतिक्षी गाम शीरत भीरत । উপনীভঃহন এক মুনিয় কুটিরে।। দরশন করি শ্বনিপত্নী মুনিবরে। রাজ বালা নত শিরে নমকার করে।। মুনিগড়ী আশীর্কাদ করি তাবে কন। निकि दशक गरम धारा करतह समन।। অল্ডা কাঁচার বাফা কে পারে বাডিডে i পতিত্রতা সভী ভাছে সুনির বনিছে।। 🤌 ভর্ফিণী ভামি অফ কইল স্পাদন। রনণীর পক্ষে যাহ। আভি **অলক্ষ**া। उथा टेस्टड छूटे कन कतिया शमना প্রবেশ করেন ক্রমে নিবিড জানন।। মহিব ভলুক বরা সধর গণ্ডার। भारत भारत किरत कांख नेश्वा करा **छात्र।।** ভর্জন গর্ভন করি ডাকে উচ্চস্বরে। গর্ভিণীর গর্ভপাত ভূমি কম্প ভরে।। তাহা হেরি তরজিনী ভয়ে আশ্বন্ধিস। নয়ৰ স্থু ডিডি ক্রিক্টেল সুক্তি ডা

বিবর্ণ হইল বর্ণ ভির চকুলার। निःश्वात्र त्रहिष्ठ इंदला (यन न्याकांत्र।। त्म मव (इतिशा नव दक्ष्मति शन्सम। **१३८मन (यन भिन भ**क्तित कांत्रन ॥ নমুহ বিপদ গ্রন্থ হলেন কুমার। হেনকালে অভ কৃতি হয় অনিবার।। আক্ষাং বজ পাত হইতেছে ধন। भाककां इ मिना (यन कतिरहान घन।। কে কোনায় উড়ে যায় গলা গলিগা। क्षेत्रव भएका विद्या घरकेक त्याकन ॥ অরণ্য কিতর পথ খুঁজে নাহি গান। रा पिट्य कितिया ठान ट्लेपिन ममान ॥ मिरक ते निर्मेश नाहे त्वहे फिट्म यान। मंकिंग लिक्ब शुर्ख दिश मंहि लात।। त्य मिट्य উखन नियं जादनम निभाग । त्म निश त्म निशं नम्र विभवी छ इस ।। অরণা ভিতর ভ্রমি রাজার কুমার। ক্ষন কোথা ভর্জিণী রহিতে আমান।। खिसमान माहि छान कन एक गटन। ्**कार्गाभक उ**त्रिक्षी अटमटक क वटन ॥ -मात्र कि त्मचिए भाव त्महे विश्वभूष। जाराज विट्फिट्म (बेटम (कटी यांत्र वर्क ॥

वस्ड क्षेत्रथं वरन करतन सम्म। পূর্বস্থানে রাজকনা পাইয়া চেতন ।৷ সম্থে নাহিত ছেরি রাজার কুমারে। वाष्ट्रका! घटाउन इन वाद्य बाद्य ॥ छान भूता ताल काना पाछि धेस मन। প্রতি ঘরা বহে ধারা প্রতিত নয়ন।। कम (कांशा आवमान एक्शा एक अधारित। रहेन रहेन गांता उन श्रियमानी ॥ ধাহাকার করি কন রাজার নন্দিনী। कि भार्य उन्हारा शिल करत जनकिनी 💢 पृश्दश्वरस्य भवाग कार्ते कव काव कार्ट । দোষর আমার আর নাহি আরে পাছে।। পাপিনী আমার ভুলা আছে কোন স্বন। রমণী হটয়া কবি পতিরে নিধর্ন।। देशकाल भगकाल छुदे (बाहाएलम। আপুনি মজিয়া, নাথ ভোৱে মজালেম। ক্রিভান তব বাকা মদাপি আইণ। प्रक्रिंगा कि छोड़ा स्टल छ्डेड अपन। क्षानंनाथ त्थन नारे प्यामि यनिकति। **ट्यागादत कुणदन त्यन हार्यन किल्लि।** কপালেতে ক্রাঘাত করে অঞ্চলে। প্রাণ ত্যনিব প্রাণ নাবের বিহনে 🕦

প্রসন্ন ভারুক ব্যাম্ম হও তথ্যারে 🗀 🦠 প্রভাগিরে স্থান দেও উদর ভিভরে ।। কান্দিতে কান্দিতে ভটুনি। গাঁডোগান। त्यने निदर्भ **एक या**श (यह निद्रम यांस न ज्ञान्तरा शतः कास जोकाव मिल्ली। कानदम एक्ट्रान एम्स हृद्य अन्तर्शिनी । একেবারে পড়েছেন ভাতুল পাপারে। বিদা ভাষা স্থানহয় কেনা ভাবে ভাবে । एक्टिन एवं सिनी दर्वत उद्यक्ता । ভয়হরা ভবদাবা ভাবিয়া অমুরে 🛭 শ্মনে অগ্ৰন্ত অভি ধান ধারে ধীরে। धेशबोध देवदर दगरे भूमित कृतिदर्भ তনক গৃহিলী দিলি নাম উমাৰতী। আতের বিষার চিজে টেশ্রান্তিতা অভি।। नकि छ। इसस भइन भारित मिस काइन इ এখন এলনা কন্যা চান পথ পালে।। ছেনকালে ভ্রফিণী করিয়া প্রথাম । কন মাতেমার আমি কন্য অটেল্য । अनक जनक जूमि अनने। गरानः निविधास नेवाखरा त्रस्थ खान मान ।) नश्रदमट्ड श्रांतिकाता नरह जनिष्णाम । लकारनेत मिक्टिमेरन स्थनम शिवाम ॥ 35

588

मिर्देश एतकिशी हरा छान होता। পতिর বিচ্ছেদে খেদে বহে অঞ্ধার।।। কান্দিতে অসক্ত বাকা ক্ষুদ্ধি হওয়া দায় স্বর্ণভা রাজস্তা পতিত ধরার।। লেইকরি মুনিপড়ী কোলে করি লন। লইলেন খিরভাগ করিয়া যক্তন। নেতের অঞ্চলে তার মুছারে বদন। कन्या जारव कम जीरत करतामा रत्नाम ।। আ*ির্বাদ করি বাছা হবে পুত্রবতী। হুইবেন তব পুত্র পৃথিবীর পতি। শাস্থনা **ক**রিতে নাহি পারিলেকীতিনি : कनक निकारि यान लाइस एक्सियी।। তরফিণী জনকের বনিকা চরণ। করজোড়ে কন পিডা আছে নিবেদন দ ত্রিভূবন মধ্যে আমি অতি অভাগিনী। আমার সমান আর কে আছে ছখিনী।। कृथिगीत ष्टःचं दांडी कहित्स अवंगे। शांचान विषदंत त्यरम कारम शक्ताम ।। জনক আমার যিনি নির্বাহের পার। প্রমথ জামাতা তাঁর অভাগীর গতি। বিক্রমকেশরি হন আমার বস্তর। যার ভবে এ শংসারে ফাঁপে স্থরাস্থর ।।

गकरनत करभां हरत कांगिया अथारन विপादक होताई थां । किह माहि खादम ॥ श्रामीश्रतः हटेस वटन वहे भागियानी। तारमञ्जूष्टिनी स्थम क्रमक मिल्नी ।। ভরক্রিণী পবিচয় দেন শ্বাঘিবরে। সেহ করে দ্বনিবর কম তত্ত্তরে।। স্থির হইয়া বংসে থাক কিছু দিন। প্रতিষ্ঠ দেখা হবে রবেলা এ দিন।। পিতা মাতা স্থামী আরু সকলের মনে। आदि वाद्य कृत्य (मध्य (स्थ्या म्या महन्त्र ॥ চিন্থা ত্যাজি 'গ্রু ভির করগে' এখন। व्यक्तिव्यक्त मिन गाया हहेत्त भिनान ॥ विधितने विक्रिक्ता। प्रतिव व्याख्यात्र । রাজপুত অবিরভ সরগোতে ভ্রমে 🛭 বালিক। জনক প্রতি জনক সমান। मनक जीदन छाँदि कना कति ज्ञान ।। পঞ্মাদ গভবতী হন তর্ক্তিণী। পঞ্চামৃত দেন তারে জনক গৃহিণী ॥ त्य भारम त्य फिया टेफ्स तमनीती आरम । श्रुंनि পত्नी दमन छाड़ा शतम यखदन।। भियमान शर्कतं ही द्रांकक्ता हन। नाभ करत सूनिवदत सूनिशक्नी कन।।

क्र्हिडादत मिन मांध कत व्यक्तिन। ্রিমুনির বনিভাগণে করি আবাহন।। ' सूनि कन नक्त प्रवा जानिव अथन। শ্রিমন্ত্রণ করি ববে করাও ভোজন।। বনমধ্যে প্রবেশিয়া সেই তথ্যের। कल भूल व्यक्तित्वन कहि श्रांष्ट्रिन ।। আনিলেন নামাবিধ কল মূল কত ! ध्य यार्: धारन करत (पन खारत उठ। शूडन दनन किर्न फिल्म काहरन ! তর্ক্তিণা পরিধান করেন যতনে।। মুনিপত্নী মুনিকন্যা আনি ভঞ্চেবনে। ভোজন করেন সবে হর্ষিত মনে।। খাজকন্যা ছে**রি সবে ছফটিত্ত অতি।** আশ্বিদি করি কম হবে পুতাহতী। ज्याभाभ ममापिन পরিপূর্ণ হয়। - - 🎌 রাজার নন্দিনী এক পুত্র প্রসবয়।। विन्द्र नारम धाओ चामि नाफ़िल्फ़्न करत । वर्थानंकि निशा औरत शतिराधिय श्रद्धा। বিন্দুর বড়ই আছে চক্ষের শীলতা। যে যা দের ভুষ্ট ভার স্বভাব ধীরতা।। দিনে দিনে বাড়ে পুত্র যেন শশধর। नभर्त अन्न सूर्थ रहन स्वित्त ॥

एक्टिक इन्मेंत चाडि इ**हेन सम्म**न्। बीर्लाभाम नाम उत्य दनन भविनन।। भागवर्भ दशःका कुमांत यथन। কগরার্থ দর্শনে মুনির গমন।। তাপনার পদ্ধী ভাকি কন ঋষিবর। নীলাচলে যাই চলে নিভান্ত সন্তর।। মৃনিপত্নী কন প্রভু আমি ছাড়া নয়। মুনি কন তরজিনী কার কাছে রয়।। त्मरे दानी एत्रिक्नी कतिश व्यत्।। পড়িরা ধরণীপরে করেন কলেন।। আশাতর সমূলে চইল উৎপাটন। রোপণ করিলে পুনঃ পার কি জীবন।। বিধাক। আমায় দেখ হলেন বৈমুখ। ্রত ছঃখ গাই তরু তত্তপরে ছুখ।। নারায়ণ বিভ্সন হ্ন যারপরে। অন্যের মাহায্য ভার কি স্থুমার করে।। ভাদ্যরে সাহায্য ঘদি,কোন জন করে। বিধাতার কোপ হয় তাহার উপরে ॥ ইহার প্রমাণ এই প্রভাক্ত কলিল। आभारत आधार भिन्ना शनक गांकिल।। বাহা হউক্ছিল এক পত্রের কুটীর। आंत्रात कांत्रण छान हरेल मुनिक्री।

PARK ANDAN

নরন সুদিলে যেই হেরে হ্যীকৈশ।
তাহার বাসনা যেতে তাহিরা এ দেশ।
কর্দমাহাইল পূথী নয়নের কলে।
প্রবেশ করিব আমি শ্রেক্সলিতানলে।
তরঙ্গিণী এ প্রকার করেন রোদন।
তপোধন তাঁরে কন করিয়া প্রবেশ।
কেন বাছা কান্দ তুমি চল সমিভারে।
তোমার রাখিরা বেতে ইন্ছা কি আমার।
খাষ্বর পূর্বাপর জানেন অন্তরে।
নীলাচলে যাওয়া মাত্র তরজিণী ভরে।।

জনকন্ধবি সত্ৰীক ও তর্জানী সংহতি নীলাচাল সম্মন

ভগনি পঞ্জিকা দেখি দিন ছির করি।
অমনি মনন ধাজা ভাবিয়া জীহরি।
অগুভাগে যান দুনি মধ্যে তরকিণা।
পশ্চাৎ চলিরা যান মুনির গৃহিণী।।
খীরে ধীরে আগমন স্বে, লান্দিত।
কত দিনে যাজপুরে হন উপনীত।।
মহা মহা পুথাকেত্র নাজিগায়া হান।
সে ভানে গ্রাতে হয় একই সমান।।

নেই ছলে আছি আদি করি সমাপন পার হরে বৈতরণী করেন গমন।। আঠারো নালায় ক্রনে হন উপস্থিত। যেই স্থলে ইন্দ্রভান কীর্ত্তি বিপরীত।। সেই স্থান হৈতে ধ্রু। করি দরশন। স্থতি করে কঃ যোড়ে মহাত্রপোধন।

ब्रमक कवि कर्जुक ब्रागमारथन स्रवः

কে জানিতে পারে প্রভু মহিনা ভোমার।
বুদ্ধরূপে নীলাচলে হলে অবতার।
অগতির গতি ভুমি অনাপের নাপ।
স্থলনিধি কুলে আনি হলে জগনাথ।
বির রয় লয় হয় সকলি ইছোয়।
নতুবা বাজারে লোক অন কিনে খায়।।
বর্ণাবর্ণ ভেদ নয় এক বর্ণনয়।
বিধবা আনিলে হেথা উপবাসী নয়।।
দেবভা মানবরূপ করিয়া ধারণ।
উদ্ধিক একান্ড চিন্তে করেন গ্রহণ।।
অতুর বধির অন্ধ যে যেখানে রয়।
ভোমার ক্ষপার কেহ উপবাসী নয়।

বাজারেতে অল আদি বিকাইছে সব। এখানে বিমলা প্রীঠ আপনি ভৈরব।। একবার জীব যদি করে দরশন। व्यात ना व्यामित् छत्य (छामात वहन।। जाहात माहिक चात यदम् आमहा। বৈকুঠে চলিয়া বায় বাছাইয়া ডকা।। স্থা করি ঋষিবর হন অগ্রসর। প্রবেশ করেন ক্রমে পুরীর ভিতর ॥ শ্রমন্দির দ্বারে গিরা ছেরিয়া শ্রীপতি। অক্টাঙ্গ স্থাটো স্থাম করেন প্রণতি।। শ্বনিপত্নী তরঙ্গিণী হেরি য**ত্তপত্তি।** প্রণাম করিয়া দোঁহে করেন মিনতি।। চক্রতীর্থ ভীরে গিয়া করিলেন বাস। এমন বাসনা মনে বাস চতুর্মাস।।

श्रम्दर्ज नीलाहरस प्रमन

রাজপুত্র ভরক্তিণী করে অংশ্বেশ।
নগর পর্বত গুহাবন উপরন।
উন্নাদ হইরা, ফিরে করে হাব হার।
অবিশ্বামে কেনে বলে প্রেরণী কোথার।

षखरत कार्रा तत थिरत रंग विश्वपन। শয়নে স্থপনে ছেরি মুদিলে নয়ন।। শক্তি বিনা শক্তি নাই হয়েছি তুৰ্বল। निनाट्य नाहिक इत्र मुद्य दम्खता कथा।। नकरणत अध्य अहे कति निरंत्रमा। इस कि ना इस वल अ अकात मन।। जीवित्राध यदन (भाक एक प्रेकू इस । ভাষার অধিক ক্লেশ কিছুমাত্র ময়।। পূকারে কান্দিতে নারে লজ্জার কারণ। তার সঞ্চে সঞ্জি হয় এই তার মন।। वाश्वविक किरम खित हहरवक जीव। শক্তির কারণে ফিল্ড হয়েছেন শিব।। মন্ত্রথা করিতে নারে ক্ষেণ্ড নিবারণ। বৃদ্ধব্যালে বিয়ে করে ইহার কারণ ।। তথাপি পূর্বের কথা হইলে স্মরণ। শোক্ষিকু বারি হয় চক্ষে আকর্ষণ ॥ রাজপুত্র তর্জিণী না পায়ে উদ্দেশ শরীর ভাজিব ভির কৈলা অবশেষ। नर्द्धराम् व्यस्थित कतिशा विकल । व्यवस्थाय (मिथारात यान नीलाहल।। **८नई सारम खंदिक**ी यमि माहि त्रा। তথায় ত্যজিব প্রাণ প্রতিজ্ঞা নিশ্চয়।। (20) ...

নিশ্চয় করিয়। মনে রাজার মন্দ্রন।

হইলেন অগ্রেসর করিয়া ক্রন্দর।।

বিনিতা বিচ্ছেদে অভি উচাটন মন।

চলিলেন অতি বেগে নক্ষত্র যেমন।।

একেবারে উপনীত জলনিধি তীরে।

যেথানে শ্রীপতি হিছি চন শ্রীমন্দিরে।

অবেশ করিয়া পুরী হেরি গদাধরে।

মনের বিবাদে হুদে করাছাত করে।।

এত ত্বংথ দিননাথ দিতেছ আমার।

নবন জীবে সমভাব কে বলে ভোমায়।।

দিব: নিশি ভেবে ভেবে হইয়াক ক্রীমা।

নাঠে যাটে পড়ে থাকি যেন দীনহীন।।

িকাল বাজার পাতের প্রতি রাক্য সম্প্র

সে হানে নির্কাছ রাজা চিন্তাযুক্ত মন।
জামাতা কন্যার নাহি পান অভ্যেষণ।।
রাজা রাণী হুই জনে করেন ক্রেন্দন।
কোন মতে প্রবোধিতে নারে কোনজন।
রাজ কর্মানা দেখেন নির্বাহের পতি।
নাহি রব যেন মর্ব সকাতর অভিযা

রাণী কন নিবেদন শুন নরপতি।
নীলাচলে বাই যদি কর অনুমতি।।
হয়েছে আমার ভিত্ত উচাটন অতি।
বারেক কেরিয়া আমি অথিলের পতি।
এ কথা শুনিয়া রাজা ভাষি আঁগিনীরে।
প্রিয়বক্ষা তত্তর কলেন গণারে।।
অস্তাক হটয়া যার পুরীরে ভিতরে।
দেখির নয়নভরে দেব শ্যোদ্যের ও
রাজারণি অভিপ্রায় বুঝি পরস্পর।
বৈ হরে উভর কন চলগ্ তথ্পর।।
গার মিল জাকি রাজা রাজা ভার দিয়াল
চলিলেন নালাচকে রাণী সক্ষে নিয়া।।

-

शहाकाका निकार अभी हस्तकता मधीनराहित मीनोहरन अपन ।

तथ तथी भगाजिक घटन व्यवना । बाका तानी शक भूदर्भ इन व्याद्वाहन ॥ श्यामा क्रवा लग मदम कल खुवाकार । घाना क्रवा लग मदम कल खुवाकार । জামাতা কন্যার কথা স্মরণ করিলে। অমনি বয়ান ভাগে নয়ন সলিলে।। তুলদী চৌরার কাছে হয়ে উপনীত। গজ হতে রাজা রাণী নামেন ছরিত।। भम्बर्फ हिल्लन नरस् रेमनान्। ८ इनकारल शाहरलन स्भानतम्।। সর্কারত্তে পুরীমধ্যে করেন গমন। रिष्ट्रे शारन श्रीमन्प्रदेश सीमधुरुषन ।! হয়েছেন জনার্দন বুদ্ধ অবতার। সমিভ্যার ভদ্রা আর রোহিণীকুমার ।। ताका तर्गी इहे जटन कति पत्रावा। षाचनमं आफि करतं शावियमगर।॥ প্লাতে স্থিত হরে করিয়া প্রণাম। বাস করি রহিলেন লইয়া নোকাম।।



স্থারাজা বিক্রমকেস্থীর পাত্রের প্রতি রাজ। সমর্পণ।

বিক্রমকেশুরী রাজা স্থরস্কের পতি। একমাত্র প্রাটরাণী নাম চিত্রবভী।। রাজা রাণী পেদাসিত প্রমণ কারণে। व्यविधाम दर्श्वाति युशन नगरन ॥ সবে মাত্র এক পুত্ত হয়েছে বিবালী। মহারাজ সক্ষত্যাগা প্রমথের লাগি।। দশরথ রাজা যেন এরিয়ের শোকে। श्रमाञ्च थोकिट्ड गाम श्रद्धाटक ।! বিক্রমকেশরী রাজা তেমতি প্রকার। থাকিয়া না থাকা ভুলা গমন আকরে।। দিবা নিশি সমভাব যেন অন্ধবণর। রাজ্যধন পুত্র বিনা সকলি অসার।। রাণীকে ভাকিয়া কন লছ রাজাভার। নালাচলে গমনের বাসনা আমার।। किছू दिन त्यहे थाटन थाकिवात्र मन। इंड्रेट्ट शम्हारक गांहा ननाएँ नियम। রাণী কন সকরুণে ভূপতির কাছে। মহারাজ আমার কি স্থুখ ইচ্ছা আছে !! যদব্ধি হারায়েছি প্রমথ রতন ! বাঁচিয়া থাকন রথা জীবভ নরণ।। সুথের আমার আর নাহি প্রয়োদন। श्रुख रह्जू द्रःशांनरः महिरह कीवन।। ধেঁতে থেকে রাজাস্থ্যে নাহি স্থালেষ। क्षाकरण व क्षार्त वर रेस्न भव।।

ब्रीकाधन खीशकन किছू नाहि काक । नैनिज्यात नदत्र हल यांव महातां ।। शमन स्टेर्ट यथा प्यामि उन माथि। অবজ্ঞা করিলে অত্যে হব আম্বাভী।। রাজা কন রাণী যদি মাহ দমিভারে। আসিলে এথানে সুনঃ রাজ্য পাওরা ভার।। चन। वाका चामि ताका कतिरव स्त्रण। পূর্ম্বাপর এই রীভি আছে নিরূপণ।। হীন বল হলে রাজা রাজা নাহি রর। বীরভোগার বস্তব্যরা জানিহ নিশ্চয়।। রাজা লয়ে থাক ভূমি ম**ম** অভিলাঘ। किছু मिन क्षना स्थानि छोटर्थ कति दाग 🖰 মহারাণী অনুম;নি ভূপতি আশয়। किट्र आना नरह जाना हिन तीथ हरू।। ভূপতি নয়ন প্রতি নির্**থিয়**। রাণী। ज़िक्त करन धरा भरत ग्रुट्थ नोहि वागी॥ সে ভাব পেথিয়া রাজ। কন বার্মার। সমিভ্যার ঘাইবার বাসনা ভোমার।। ভাত কর্মা অবিলয়ে করা হয় বিধি। : পশ্চাৎ হইবে যাহা করিবেন বিধি।। বার দিয়া বসিলেন বিক্রক কেশরী। গगटन मनन शाला ভাবিয়া अहति।।

মন্ত্রীকে আনিতে দুভ পাঠান তৎপর। প্রতমাত্র উপনীত হন মন্ত্রীবর।। ভূপতি কহেন শুন বচন লামার। কিছু দিন খনা ভূমি লছ রাজ্য ভার।। দবশনে যাব আমি জগতের পতি। মছারাণী যাইবেন আমার সংহতি॥ উপদেশ कहि এই अन निश पन। हैश हटल बाटका निम्न ना हटन कथन।। ি হিংসক বাভীত নহে পর ছিদ্র কয়। নে ছিল কি বল ছিলু জাত জাত নয়।। অধার্দ্দিক জন প্রতি করিলে বিস্থাস। বিশ্বাস ঘাতক কর্মা করিবে নিযাস।। প্রদ্বেঘী প্র নিক্ষা শুনাবে যে জন। निक्त जामित्व भारे जन अञ्चन ॥ অত্যেতে ভাবিয়া কর্মা পশ্চাৎ করিবে। ভাহা হলে সৰ দিক বজায় থাকিবে।। বিচক্ষণ অতি সেই রাজ মন্ত্রীবর। निर्वपम करत र्याफ् कति कृषि कत ॥ मत्रभम कविवात इहेताए मन ! আমার অসাধ্য হয় করিছে বারণ ॥ তবে এক নিবেদন করি রাজ্যেশর। ্ আগ্ৰন পুনঃ যেন করেন ভৎপর ।

🛸 সমুমতি মত কর্মা করিবে অধীন। षाङ्कात ष्रमाथा माहि इत्त अक मिन।। হইয়া বিদায় মন্ত্রী করেন রোদন। ্রাণী সহ রাজ্যেশ্বর পুরীতে গমন।। অগনন চলে দৈনা ভূপতি সহিত। গগণমগুল রেণু উড়ে আচ্ছাদিত।। রথ রথী পদাতিক অগণ্য কিন্ধর। নহন্দ্র সহন্ত অশ্ব ভাযুত কুঞ্জর।। ্ কিছু দিন পরে হন মহানদ পার। আঠার নালায় রথ পৌছিল রাজার।। রথ হৈতে রাজারাণী নামিয়া স্থান। পদরক্ষে চলিলেন উভরে অবনি। ত্রীয়ন্দিরে ত্রীকান্তেরে পায়ে দরশন। ভক্তি করি করিলেন চরণ वेम्मन ।। কানাতে কাণ্ডার পড়ে সমুদ্রের তীর। क्तिरलम वामं इल वीमारस भिवित्।।

> সুনিপত্নীর সহিত রাণী চক্রকলা ও প্রমথের কর্মোপকথন।

्यात्मरण अनक त्यानि आर्छन नःत्यान रहनकाटन तमरे ऋत्न मद त्याभारयान ॥

यात्र जात कितिन भहा जरभावम। हरेशारह मनाकांत भृति आधमन।। ভাবিলেন আঁর কেন নতেছে সময়। विकेश धनकि विकि इंटलस समग्र ।। সার পৌণ করা নহে কর্ম্বর আমান। তরজিশী ছঃখ হতে হ্লেন উদ্ধার ।।. আপনার পদ্ধী ভাকি কাহন তথন। केदना भारत दस्य दक्त नियम वस्त ॥ একবার বালকেরে কোলেতে করিয়া। अभग करिया जान थोना खेवा मिस्।।। युनिजभी मुनिताका कहिया खबर । वालाक कारलाड किंत्र करता असम ॥ ধেখানে চন্দন গড উপনীত আদি। रालक मेरिए नाका कम सामि हामि।। रहनकारल हस्टकना निर्काह बोजन। দরশন করি ফিরে মান নিকেতন।। দেখিলের যুনিপারী কোলেতে কুমার। হেরে তারে নরেশ্বর হয়। চমৎকার।। স্থলকণ সর্ব্বভিত্ন আছে এলোপালে। अन्दर्भव पृके इस त्रांकम्थ ভादन ॥ म्निপत्नी अगमित्रा महाताम कन। द्वामात द्वादगढ माछ। काहात कमन।। (R9)

"त्रुनिशक्ती कन अपि सोहिब सामात। তর্ক্সিণী কন্যা সম তন্য় তাহার।। তর্জিণী নাম গুনি রাণী চক্রকলা। তাগ্রসর যেন শর তেমতি চঞ্চলা।। বালকের মুখশশী করি নিরীক্ষণ। আপনার কোলৈ লন করিয়া যতৰ।। মুনিপ্নিত্রী প্রতি কন রাজার গৃহিণী। কন্যা কোথা আঁছে মাত। নামে তরঞ্গিণী।। भोश्ज (हविश एवं जिस देहल मन। क्नाटक (हांबरन इंटर वा जानि (कवन।। অনা কেই মাতা কিয়া ভূমি 🚜 বিনী। গত্য করি কই মাজা কোথা ভর্মিণী।। श्वेनिभद्री कम कर किएमड कार्र । পরিচয় এত লও কোন প্রয়োজন । াজার মহিনী ভূমি অনুসাম হয়। कुः वि करन अयल्टन किया करणान्य ।। মুনিপুত্রী মনে মনে ভাবেন তথ্যা छत्र जिन्दी अमितिकी इत्त अहे जन।। চন্দ্ৰকলা কৰা কৰা বালায় চাহিয়া। नवन निम्लियां समग्र जानिया।। মহারাজ জেছাযুগে জীরাম বনিত।। वानीक पाखरम हिला जनक हरिया।

कुमी लव श्रुक इन तरिगद उनग्र। কিঞ্ছিৎ দিবস অত্যে হয় প্রিচয়।। তোমার কনার যদি হয় 'এ তন্য। তা হইলে সর্ব্বন্থ নিবারণ হয় ।। এই বাণী কন রাণ: হেরিয়া গোপালে। বিধি কি সদয় হবে অধিমী কগালে।। ভূশতি কৰেন এত জাগ্য কি হইকৌ হারাধন হরি কেন পুনঃ মিলাইরে।। এপেপালে কোলে করি চন্দ্রকণা কন। इक्षा करद नाम बारे निष्क निरंक्डन ॥ প্রমথ এমভকালে আসি সেই খানে। धक मृत्ये (हट्स हमः शिर्माशांन शांदन ।। कर्टन क्लिंग्ड ७२ कोशंत जन्म। क क्रम (पर्य (क्रम क्छ । अर् क्से পিতা মাতা স্থিতি কোথা কাহার তবয়। শতাকথা কহি মাভা দেহ পরিচর ।। রাণী কন নাহি জানি কোন পরিচয়। ভরঙ্গিণী পুত্র যদি ভবে নাভি হয়।। তর্কিণী নাম শুনি রাজার কুমার ৷ क्रमस्त जलधात्रा वरह व्यनियात् ॥ ভূপতি প্রমথ পানে করি নিরীকণ। প্রিত্রের কিন্তুমধ্যে ইইল সার্থ।।

ভাবেন অবাক হয়ে চিত্রপট প্রায়। অবয়ৰ এই সেই চিত্ৰপট প্ৰায়।। यिन नावना वर्ग वि**वर्ग इर**स्ट । শীর্ণমাত্র সব চিহ্ন প্রভাক্ষ ররেচে ॥ ক্ষান হয় অভিপ্ৰায় এই সে প্ৰমথ। বলানয় সে নাইয়ে জিজাসি কিমত।। क ज्यान भरत भरत करिवन वाजन। धारुदा हित्र हो देशन को गाँकी धार्म ।। বিক্রম কেশ্রী রাজ্য চিন্তাবিত অতি। উপনীত সেই স্থলে সহ চিত্ৰবৰ্তী॥ পুত विमा উভরের দগ্ধ হয় 🖚 । निवानिमि नशक्षिकमा नक्षक्ष।। প্রমথ অনক্ত বেতে রন নেই ছামেন চিতাৰতী রাণা ভার চীন মুখ পানে 🍿 यमिए नाकां इटला वक निर्माखरत । আপনার প্রক্র বে কি চিনিবারে নারে।। তথাত রমণী লক্ষাভারে করে ভর। নয়নে না ধরে বারি বহে অভিশয়।। **उक्तः यदत दक्त**न वरन क्षेत्रथ कामात ! অভাগিনী আমি বাঁচা জননী ভোষার।। **टक्मटन शागदत माटल हिटल योष्ठधन**। एका मान कांतरन किंदन अन्न क्रमंत्रना।

বিধি কি সুদয় হলো এত দিন পরে। . হারান মাণিক আদি ভুলে দিল করে॥ हस स्था अरकवादत छोन्छ इरेन । অরণা হইতে রাম অংশাধ্যা আইল।। পক্র হইল অঙ্গ অন্নের নয়ন। विधितत इत्ना कर्न नीत्र छत्न धन ।। চন্দ্রকলা রাণীকন নিকাহ রাজনা कि कथा श्रात्र रश अन निशा भन ॥ " श्रमथ रहेन এই ভাবে বোঝা यात्र। তবে বল তর্জিণী রহিল কোথায় ।। 🧨 এক দুটো রন রাজা হয়ে জান হত। কন রাণী সতাধাণী এই দে প্রমথ।। खित इंख कि श्यांन अवटमंव इत्र। এই খানে ভরক্ষিণী আছেন নিশ্চয়।। মনে ° এই অনুমান হতেটো আমারি। মুনিপত্নী কাছে আছে তোমার কুমারী।।। চন্দ্রকলা রাণী আর নির্বাহ রাজন। 🔭 षूरे जात रहेर्डाइ करशालकथन ॥ 🚟 কুটীর সদ্ধেতে যোগে থাকি তপোধন। कार्यन भागक रात नव विवत्।। তরঙ্গিণী ডাকি মুনি মৃত্ স্বরে কন 🎼 विस्तार्भारमे मद्रा भन्नी यान रहकन ॥

CANCEL LAND

চল বাছা অক্ষেদণ করিবে ভারার। মনেতে ভাবেন এই বিদায় ভোমার।।



। প্রমণ তব্লিণীর মিলন .

তরক্ষিণী সমিভারে লয়ে তপোধন। ভলিলেন যেই খানে হইৰে মিলন।। রাজস্তুতা কন পিতা কিনের কারণ। অক্সাৎ বাম আঁখি হতেছে ম্পান্দন।। मुनि कन छन वर्दम कहि त्म क्थन। न्भानन इंखन काँचि सदनक काँत्र।। त्रमधीत वास व्यक्ति सद्भवत मिक्ना। ग्लान्त इट्रेटन इ:थ व्यवनात मिन ॥ उत्रक्षिमी कन उन्निमावक मीदन। 💀 कारक कुछित प्रथ कशारम मिश्रम ।। স্থিত আমায় ধাতা ছঃখের কার্ণ। ছাড়িয়া আমারে তার নাহি থেতে মন।। ভুঃখের নিকটে কত ধারে বন্ধ আছি। আমি তাঁর সে আমার ছির জানিয়াছি।। उँशित निक्छे भई त्वह चाट्ट ताथ। ठाँत थान दिवसिंग नाहि इटन माध

ঋণের সহিত হলে এ দেহ পতন। ज्थन कानित षु:च रतना विदेशाहन ।! আমি ভিন্ন আন্ট্রী প্রতি এবিধান। স্পদ্ন দক্ষিণ বাম ভামার সমান।। যুদি কন বাছা আরু করনা রোদন। र्हेश निक्रिट्ड ७व छू:थ विरंगा**ठन**।। চল শীঘ্র কোন স্থানে গৈছেন বনিতা। শ্রীগোপালে নাছি ছেরে হট্ট ছঃখান্থিতা।। তলিলেন উরঙ্গিণী জনকের সনে। যেই খানে ঋযিপত্নী আরু সর্বজনে॥ **উপনীত হয়ে तम এक मृट्छे टिट्स।** हळकला दहिंदिलम आभागतं त्रारा ॥ মা বলিয়া ধরিলের তর্ফিনী গলে। " বসন ভিজিয়া যায় নয়নের জলে॥ करइन-जननी काथा ছिल এত मिन। **ट्यामात्र ना (मर्ट्य अक्र र्हे ब्राट्ड की ना** ঋষিবর প্রতি চান ঋষির গৃহিণী। প্রমধের মুখ পানে চান তর্ক্তি नीन। চক্রকলা প্রতি চান নির্বাহের পতি। বিক্রম কেশরী মুখ চান চিত্রাবতী।। " अक्दाद्ध गर्सादुङ रूटेन भिन्न। 🏁 **उर्वभौक अके रक्त** (यमन मर्भन)

मवाकीत मंदीकात चूटि अद्योकीत 🗀 🔻 भूना (पट्ट 🍇 रियम इहेल मुक्कांत्र ॥ কে ক্ষার প্রলায় ধরি:কান্দে উভরায়। কচিত কাহার ভাগে। এ প্রকার হয়।। **इट्टान गक्राट्ड गख्य विकास** তাপিত मीद्रानस्थव स्था व तिक्रण ।। হারাধন প্রাপ্ত হক্ষেকত হবে।দয়। আপনা আপনি ভেবে দেখ মহাশয়।। চন্দ্রকলা ভরজিণী কোলে করি লয়। 😗 ভাহার কোলেতে বৈদে ভাহার তনর।। বিত্রাবভী কোলে বদে রান্দার কুমার। नवाकात व्यक्त थाता बरह व्यक्तिकात ।। उथिकन स्थानिक रूप भिन्द्रम्य । ধরা বেন প্রকাবিত প্রকার সময় 🕕 🕒 त्तरे करन नगरतार रहेन धमन। और्यान्त्र मर्था नाहे लोक अक अन ॥ শ্বগুর সাস্থাড় কলে হর পরিচয়। 🎠 🤫 रेववान्तिक टकानाकृति छे छ दश छ छ स ताकतानी छुडे शक चुहिन नियान। হস্তগত হলো যেন, আকালের চাদ।। শিভামাতা প্রণমিয়া রাজার তনর। খণ্ডর সাস্থাড়ি পদে প্রশাস করম্ব। ^{্ত} **তরজিণী সেইম্ভ** ধনিয়ে। স্বায়। मखनः, कतिरनन मृतिश्रद्वी श्रीम् ॥ হরিষে রোদন তার। সকলেতে করে। বিষাদিত মুনিপত্নী চফে জল করে 🛚 । (थम कर्त कम वाष्ट्र। मम उटलावटम । পारेसाध कडू कछ कदहाना मा मदन।। ভর**ঞ্**ণী স্থাতি ব†কো কহিছেন ভায়। সকল পেলেম মাতা ভোমার ক্রপার ম **ठराक्ता भूनिवदत वन्तिया हत्।** क्रवर्तार्ड कम छक जार्ड निरंदनम ॥ তব দয়া অনুসারে হয়েছে বৈষ্টব : मन्त्रान विरुद्ध श्रेष्ठ व्यक्तावर मव ॥ মহারাজ পান তাপ সভানের তরে। তুঃথানল প্রজালিত তঃখিনী অন্তরে।। প্রসন্ম হইয়া তারে কন তপোধন। जरवद्मव भर्धा कव इहरव मन्त्र ॥ মুনিপত্নী মুনিবর ভাগি আঁথিনীরে। **८थमाश्विक हरत (मंग्रह् हरतान कुछै**रत । চক্রপাণি কন শুন উছত রাজন। यांत्र मञ्ज ६८७ माना अभित तहन 🙌 🤌

প্রমুখ ভর্দিনীর কথোপকথন।

তর্কিণী প্রমথবে কড স্তুতি করে। বলে নাথ এ তুর্গতি অভাগিনী তরে।। যনে মনে স্থির আমি করেছি নিশ্চর। তৰ বাকা হেলানৈতে এ বিপাদ হয় ।। কাননে হাইতে তব ছিলমাকে। মন। কেবল গ্রমন্যাত্র আমার কারণ।। সতী হয়ে পতিবাকা না **শুনে অব**ণে 🕞 हेर काल ७ फूफ्ला कि मना मद्दर।।। এত ক্লেশ পাইলেন দাসীর ব্রথায়। অপরাধ ক্ষম নাথ ধরিলাম পায়।। धमध कट्टन धिर्म भानक गकल। त्रुच युःच जानमात्र कर्षा कनाकन।। তোমার কি দোষ ভার ঘটে গ্রহ জনো। ুকোথা হবে রামরাজা সে যার অরণ্যে !! क्षात्व या त्वथा चार्छ हत्व चुनिवादत । কার নাখ্য বিধিলিপি খণ্ডিবারে পারে।। ্পতিব্ৰতা গতী ভূমি জানকী সমান। ভোমার সতী হ জন্য পাইলাম ত্রাণ।। এই মত অবিরত কথোপকখন। **े जि**र्भाशास्त्र नरम स्कारन गर्क रूपन ॥

এक স্থানে বাসা করি রন ছুইজন। বিক্রমকেশরী আরু নির্দ্ধাই রাজন । রথেতে বামনদেব করি দরশন। স্বদেশ গমনে হয় উভয়ের মন।। নিৰ্বাহ রাজন কন ব্যাই মহাশয়। সর্কারতে যেতে হবে আমার আলয়।। অনুগ্রহ করি ব্যাই পুরাও বাসন।। ইহার অন্যথা হলে মনের বেদন।।। विक्रमदिशाली कन वारिगत कि मन। রাজি তিনি হলে আমি যাব ততকণ।। নিৰ্কাহ রাজন কন ব্যান হন রাজি। কেবল নারাজ তিনি আপনি না বাজি।। এই মত রসাজাধ কথায় কথায়। নির্বাহের আকিঞ্চনে গমন তথায় ॥ বড়ব বড়ই গুণ তার জন্য কয়। (छांगे लारिक रतन (यटक अञ्चोकांत इस।)



मराबोका निर्वाद नर्कावरष्ठ अवारका सम्मन

शयदन छेख्य देमत्मा वाट्य क्लान्स । कुक्रक्टकटेंब युट्य रचन माट्य कुक्रमण ॥

नकरमर्ड जुड़ानिक देश्या रहन मरन। ेशा ७ देमना जूने त्यम कर्णक्र निषदन ॥ নদ নদী পার হয়ে কত দূর যান। প্রমর্থ আপন সেই ঐরণবত পান।। পুর্ব্বে যেই ঐরাবত দেছেন খোঁনারে: সেই হন্তা যেন অন্তি সমুদ্রের ধারে।। প্রথমে দেখিয়া গজ হট্যা বিকল। वत्रवात थाता त्यम हरक वटेर कल ॥ কহিতে না পারে বাকা পশু করিবর। সেইখানে ছিল এক বালক ভুধর।। थ्रनथ निक**रते क**ह जानि नावकारन । এই হস্তা খোনা রাজা পান কোন ছানে !! यञ्च कतिश्र तरियं निम नैपष्ट एस । निक्न हिल्हिं। व्यक्ति अहेशान सम्।। নিদ্রাহার পরিত্যাপ করিয়া বারণ। शाकश्य भारन आरह करि नित्रीक्षण।। এ কথা শুনিয়া অভি তঃখিভ অন্তরে। श्रथमं मिट्डाम कत शक्रवत भरत।। करी गुर्छ बादबाइन इन बुवतान । शमन भवनदनदेश कट्डा शक्र शक् निकारहर ताज्यांनी यान जन्म फर्म मशाजात निम पृष्ठ मित्रत मनदन ॥

निकार दोकः अवाद्या श्रेष्ठाभिमनः

রাক্যেশর উপনীত হা**জ্যের ভিতর**। লামাতা সহিত কন্যা হরিষ অন্তর।। আসিয়া দেখিয়া যায় কত শত জন। व'लक युवक इक जी भूकवनन।। খদেশে আসিয়ে রাজা উলাস অম্বরে। দরিক্ত ছিজেরে ধন বিভরণ করে।। जर्क्षां शृतिका त्रेष्ट्र तिम रूकु मान L क्ष्भुख्य इहेटलन कर्न्द्र नमान।। দধি ছব্ব স্থত সধু প্রচুর করিয়া।। অবিরত বিতরণ ডাকিয়া ডাকিয়া।। দিন দশলক লোক করান ভোজন। ক্রমাগত এই মত কে করে গণন।। विकायकण्ये किंद्रमिन शद्य कन्। चत्रांचा धमन कमा हरेताए मन ॥ পুত্ৰৰ পুত্ৰ আৰু পৌত্ৰ শ্ৰিগোপাল। नदम गार समिलादत अन महीलात ।।

নির্বাহ রাজন কন সকলি তোমার। কিছু দিন আর রন মানস আমার।। विक्रमदक्षाती कन वाहि महामग्र। অধিক বিলয় করা উচিত না হয়।। পর্বাপর এপ্রকার রাজার বাভার। বাব্যখনা শ্রুতমাত্র করে অধিকার।। ना कानि कि शोन्यां इहेरवक (भारत। भ**न्हार्ट व्यमाश्चा हर**व गारेवारत (मरम ।। कथा श्रमित्रा तानी रहेना श्रखान । ছিনভর যেন হেন ভূমেতে বুটান।। गांखुना कतिया कन निकाह ब्राम्नन। विष्ठ। जाकि वसक्या चित्र कर मन।। निमाय क्राइ महत्र स्टम स्त्रांस्का কন্যা পুত্র যাতায়াত পূর্বাপর রীত।। रेववाहिरक कालाकृति जन्म मन्न । विशास विशास कथा वियामिल मन।। जामान क्यांत (माट्स क्रिय़ विशास ধেদিত হইয়া রাণী কাম্দে উভরার।। রাজপুরী সৃদ্ধা কেনে ব্যাকুলিভ হয়। नकरत अञ्ची ज्रथी क्रिश्माज नह ॥ जरत्र अन्य कर कालमाति केति। হীরা চুণি মতি পালা রাশীরত করি।।

किम्यो कमनिने स्थार खबनने।

हजूता नम्रनाता नना हर्ल निक्ति ।

हातिकना रमसे मर्था हिमारनम मरन।

हाम नामी कात्र यह रक्ता कल नर्द्य।

वाका तानी कतिरद्दन त्रर्थित नमन।

वाका तानी कतिरद्दन त्रर्थित नमन।

वाका तानी करित्दन त्रर्थित नमन।

वानरम नमने ताका नर्श हिमान मानी।

वानरम नमने ताका मरश हैममी ह वानि॥

वाका विकासकारी स्वारका शामन।

বরাজ্যে গমন রাজা মহা মহোৎ গব।
দিবিবিরে চল্ল লেক ব্যক্তা প্রন্তা।
তাকাতরে ধন দেন ভাণ্ডার ভাণ্ডার।
বিতরণ কত ধন সংখ্যা নাহি তার।
সর্বাহ্রণে সুখী রাজা আনন্দে মোহিত।
সর্বাহ্রণ সদালাপ পণ্ডিত সহিত।।
কুক দিন মহারাজা আছেন শম্প্রেন।
চিজ্জাতী রাণী কন সহাস্য বদনে।।
বছলার পিতা যিনি নির্বাহ রাজন।
লামেছেন আপনাকে করিয়া যতন।।

व्यक्ति जनत्म कट्य त्राट्यन मधान। আবাহন কর তাঁরে তবে থাকে মান।। যত্ন করি লিপি দেহ বিলয় না হয়। वामित्रक खाक्रियम वाहि महानम् ॥ আমার বুজিতে এই যুক্তি সিজ হয়। কুটুন্মিতা ঐহিকের পারত্রিক নয়।। সংর্দেক্ট দেওয়া লওর' গভাষাত হয়। **डाहा हिटल कुष्ट्रेबिट। तकु स्ट्र**ाशामरा ।: এক এক শ্রৌ থাকে কুটুয় বালয়। क्रोट्रित लाक अला नाक जूटन तम ।। রাজাকন মহারাণী ভোমারে স্থাই। কেমনে ভূলিবে নাক দার নীক নাই।। মন্ত্রিরে ডাকিছে রাজা দেন অনুসতি। ভाटिट भागा मामाना नामाना ভাট ভূপে নিরেদিয়া করেন আশীব। করিলেন যোড়া শাল ভাটেরে বক্সিন।। हाका तारी याइवात कटतन मनन। व्य व्यो नामां किंक योद्य व्यन्तन ॥ वार्त्रन होत्रत्र स्माट्स स्टाइन । श्वित्र खेराकाटल करतन श्रम्म ॥

সহারাজা নির্ব্বাহ মহারাণী সহ মহারাজ বিজ্ঞান-কেশরী রাজ্যে গদন।

ক্রমে ক্রমে সব দেশ করি অবশেষ। विक्रमटकं भंती तारका इरलन थारवभ ॥ ममाठात किल मृख वानिसा मध्त। ভূপতি শুনিয়া অত্যে হন অগ্রসর।। সমাদরে লইলেন বাটার ভিতরে। রাজারে বসাম রাজা জাপনার ঘরে।। রাজার যতনে রাজা থাকি এক মান। যাইতে বাসনা হয় আপনার বাল 🗓 व्यथरम विनम् वाका <u>किया वाकास ।</u> ताक। नानी इहें करन हत्नन विभाग ॥ আপনার রাজ্যে আসি কিছু দিন পরে। निर्द्वादरत पूज रह कनदकत रदत्।। নিবিব্যে করেন রাজ্য ধর্মপথে থেকে। नर्वकृष्यं पूर्व शिन शूल्यूयं स्टब्य ॥

-

क्षत्रथ । इत्रिक्शिय अर्थवाडां।

विशास कविशा तांकी निकार तांकन।

কিছু দিন পরে ডাকি পাত্র মিত্রগণ। करहन वांत्रना याहा खन नर्वकन।। ্প্রসংখ করিব রাজা মনন আমার। কহিছেন পাত্র মিত্র এই যুক্তি সার।। পানি শুরু পুরে;ছিত পরামর্শ করি । প্রমথে করেন রাজা বিক্রমকেশ্রী।। রাজ্যধন পরিজন সকলি অনিত্য। একান্ত চিন্তেতে চিন্ত প্রমার্থ নিতা।। উপাদনা বন্ধতন্ত্র জানি দীলুমান্। রাজা রাণী তপস্থায় অর্থের পয়ান।। किছ पिन बाका कवि बाकाव नमना कित्राभाव विकास अल्पूर्व यथन।। এমধ বদিয়াছেন পূকার আসনে ৮ व्यक्ताः रेमवराना खल्लन व्यवदन्न ॥ महाभाता आहा। यिनि जनाटवत सम । क्रशामग्री कृषा कब्रि देनवदांगी कन।। शृक्षं करेषा ছिला वाष्ट्रा शक्षका प्रजन। नारंशिक मानव (मरु ह्रब्रह्म धावन ॥ পুরন্দর অভিশাপে মর্ভো আগমন। विजय नाहिक देहल भाभ विष्याद्य ।। कान भून इरल कान जुद्धनि यानिरत ।

দৈববাণী প্রমথর হইয়া প্রবণ।
বিষয় বিষম চিন্তা সমনি বর্জন।।
পাত্র করে কুমারেরে করি সমর্পণ।
গমন জাহ্রবীভটে সমাধি করেণ।।
রাজ্য সাঁপি জ্রীগোপালে প্রমার্থে মন।
ভরক্ষিণী প্রমণর স্বর্গ আরোহণ।।

অম্ সমান্তঃ।